राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

■ मध्यप्रदेश ■ राजस्थान ■ हरियाणा ■ छत्तीसगढ़ ■ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17

5 सचिन तेंदुलकर से बड़ा बनेगा मेरा बेटा - हरभजन सिंह | सम्पादकीय गरीब तबके का मार रहे हक | ओला स्टोर्स एक महीने में 800 से बढ़कर 4,000 5

वर्ष 18 ● अंक 317 ई-पेपर के लिए लॉगइन करें -www.hindustanexpress.online ग्वालियर, मंगलवार 03 दिसम्बर 2024 email - hindustanexpressbhopal@Gmail.com मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

13-14 दिसंबर को पीएम मोदी संसद के दोनों सदनों को संबोधित करेंगे

इंडिया ब्लॉक की बैठक में टीएमसी नहीं पहुंची, कहा- कांग्रेस सिर्फ अडाणी मुद्दे पर अटकी

आर.एन.एस.

नई दिल्ली। संसद के शीतकालीन सत्र में लगातार पांचवें दिन भी हंगामा हुआ। विपक्ष ने लोकसभा और राज्यसभा दोनों सदन में अडाणी और संभल मुद्दा उठाया। विपक्षी नेताओं ने वी वॉन्ट जस्टिस के नारे लगाए।

सोमवार को लोकसभा में सिर्फ 14 मिनट और राज्यसभा में करीब 15 मिनट ही कार्यवाही चल सकी। इससे पहले चार दिनों के अंदर चार बैठकों में दोनों सदनों में कुल 40 मिनट ही कार्यवाही हो सकी थी। बैठक से पहले इंडिया ब्लॉक के नेताओं ने राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे से मुलाकात की। इसमें लोकसभा के विपक्ष के नेता राहुल गांधी भी शामिल हुए। हालांकि टीएमसी सांसद नहीं आए। टीएमसी से जुड़े सूत्रों ने कहा कि वे सदन में बेरोजगारी, मणिपुर, महंगाई जैसे मुद्दों पर चर्चा करना चाहते हैं, जबकि कांग्रेस सिर्फ अडाणी मुद्दे पर हंगामा कर रही है। जयशंकर भारत-चीन मुद्दे पर नहीं बोल पाए उधर, सदन स्थगन के चलते लोकसभा में आज विदेश मंत्री एस जयशंकर भारत-चीन मुद्दे पर नहीं बोल पाए। वहीं वित्त मंत्री सीतारमण भी लोकसभा में बैंकिंग लॉ संशोधन बिल पेश नहीं कर सकीं।

गिनी में फुटबॉल मैच के दौरान हिंसा में 100 की मौत, जाँच के आदेश

रेफरी के विवादित फैसले पर भड़के लोग, पुलिस स्टेशन जलाया

नई दिल्ली। गिनी के दूसरे सबसे बड़े शहर जेरेकोर में रविवार को एक फुटबॉल मैच के दौरान हिंसा में करीब 100 लोगों की मौत हो गई। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक रविवार को लाबे और जेरेकोर फुटबॉल टीमों के बीच मैच चल रहा था। इस दौरान मैच रेफरी ने एक विवादित फैसला सुनाया, जिससे दोनों टीमों में लड़ाई होने लगी। झगड़ा होता को देख दर्शक भी मैदान में घुस गए और हिंसा शुरू कर दी।

एएफपी की रिपोर्ट के मुताबिक लोगों ने एनजेरेकोर के एक पुलिस स्टेशन में भी तोड़फोड़ की और आग लगा दी। स्थानीय अस्पताल के एक डॉक्टर ने घटना के बारे में जानकारी देते हुए कहा- अस्पताल में जहां तक नजर जाती है, शव कतारों में पड़े हैं। बाकी लोग गलियारे में फर्श पर पड़े हैं। मुर्दाघर भरा हुआ है।

यह मैच गिनी सेना के आर्मी जनरल मामाडी डौम्बौया के सम्मान में हो रहा था। डोम्बौया ने साल 2021 में गिनी में तख्तापलट करके सत्ता पर कब्जा कर लिया था। डोम्बौया ने सितंबर 2021 में राष्ट्रपति अल्फा कोंडे की सरकार को गिरा दिया था और खुद सत्ता पर काबिज हो गए थे। अंतरराष्ट्रीय दबाव के कारण उन्होंने कहा था कि 2024 के अंत तक वे चुनाव कराएंगे, लेकिन अब तक चुनाव के आसार नहीं दिख रहे हैं। डोम्बौया ने जनवरी 2024 में खुद को कर्नल से लेफ्टिनेंट जनरल के पद पर प्रमोट कर लिया था। पिछले महीने उन्होंने खुद को गिनी का आर्मी जनरल घोषित कर दिया। डोम्बौया के कार्यकाल के दौरान विपक्षी नेताओं को जेल में डाल दिया गया। जानकारों के मुताबिक डोम्बौया अगले साल चुनाव करा सकते हैं। डोम्बौया भी चुनाव में उतर सकते हैं। इसलिए वे अपनी पॉपुलैरिटी बढ़ाने के लिए देश के अलग-अलग हिस्से में फुटबॉल टूर्नामेंट आयोजित करा रहे हैं।

केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया पीड़ित परिवारों से मिले

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

गुना। गुना के फतेहगढ़ थाना क्षेत्र के पन्हेटी गांव में बीते सप्ताह दो आदिवासी समुदायों के बीच हुए आपसी विवाद एवं हिंसक झड़प में भील समाज के गल सिंह भील की मृत्यु हो गई थी एवं कल्लू बंजारा गंभीर रूप से घायल हो गए थे, जिन्हें इलाज के लिए भोपाल में भर्ती कराया गया था। इस घटना के बाद आज केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मृतक गल सिंह भील के परिवार से मुलाकात कर अपनी शोक संवेदनाएं व्यक्त की और अस्पताल में भर्ती कल्लू बंजारा के परिवार से मिलकर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए कुल्लू के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की। उन्होंने इस कठिन परिस्थिति में हिंसा प्रभावित परिवारों को हर संभव का मदद का भरोसा दिलाया।

घटना पर बोलते सिंधिया ने कहा कि पूरे मध्यप्रदेश में इस प्रकार की हिंसक घटनाओं का कोई स्थान नहीं है। मेरा दोनों ही समुदायों से अनुरोध है कि किसी भी परिस्थिति में हिंसा का सहारा न लें और पुलिस- प्रशासन को इस मामले की कार्रवाई करने दें। हम क्षेत्र को विकास की राह पर अग्रसर करने एवं शांति स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इस दिशा में हमारी सरकार हर संभव प्रयास कर रही है।

महाराष्ट्र : वित्त मंत्री सीतारमण और पूर्व मुख्यमंत्री रूपाणी तय करेंगे मुख्यमंत्री

4 दिसंबर को विधायक दल की बैठक, 5 को शपथ समारोह होगा

आर.एन.एस.

मुम्बई। महाराष्ट्र विधानसभा का रिजल्ट आने के 10 दिन बाद भी मुख्यमंत्री का नाम तय नहीं हो पाया है। महायुति यानी भाजपा, शिवसेना शिंदे और एनसीपी में एक सीएम और दो डिप्टी सीएम का फॉर्मूला तय किया गया है।

भाजपा ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी को पर्यवेक्षक बनाया है। विजय रूपाणी कल शाम मुंबई पहुंचेंगे, जबकि निर्मला सीतारमण 4 दिसंबर को सुबह मुंबई पहुंचेंगी। 4 दिसम्बर को भाजपा विधायक दल की बैठक होगी, इसमें सीएम का नाम तय होगा। 5 दिसंबर को शाम 5 बजे मुंबई के आजाद मैदान में सीएम पद का शपथ ग्रहण. भाजपा की ओर से देवेंद्र फडणवीस का सीएम बनना तय माना जा रहा है। अजित पवार और देवेंद्र फडणवीस की आज दिल्ली में अमित शाह से मुलाकात होनी थी। पवार दिल्ली रवाना हो चुके हैं, लेकिन फडणवीस का दौरा अचानक रद्द हो गया है।

विधानसभा चुनाव में महायुति को 230 सीटें मिली हैं। बहुमत के लिए जरूरी 145 विधायकों से 85 सीटें ज्यादा। भाजपा को 132, शिवसेना शिंदे को 57 और एनसीपी अजित पवार को 41 सीटें मिली हैं। महायुति की बैठक 4 दिसंबर और शपथ ग्रहण समारोह 5 दिसंबर को होगा।

26 राफेल-एम जेट खरीदने का सौदा जल्द होगा - नौसेना प्रमुख

आर.एन.एस.

नई दिल्ली। नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने सोमवार को कहा कि भारत जल्द ही 26 नौसैनिक राफेल जेट और तीन अतिरिक्त स्कॉर्पीन पनडुब्बियों की प्रस्तावित खरीद को अंतिम रूप देने के लिए तैयार है। नौसेना दिवस से पहले मीडिया ब्रीफिंग में एडमिरल त्रिपाठी ने यह भी कहा कि दो एसएसएनएस (परमाणु ऊर्जा चालित पनडुब्बियों) के लिए सरकार की मंजूरी से यह संकेत मिलता है कि सरकार को ऐसी नौकाओं के निर्माण के लिए देश की स्वदेशी क्षमताओं पर भरोसा है। नौसेना प्रमुख ने यह भी कहा कि देश की नौसैन्य शक्ति को बढ़ाने के प्रयासों के तहत वर्तमान में 62 जहाज और एक पनडुब्बी का निर्माण चल रहा है। उन्होंने कहा कि अगले एक वर्ष में बड़ी संख्या में जहाज नौसेना में शामिल होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं और कम से कम एक जहाज नौसेना में शामिल किया जाएगा।

सीएम ने कहा-माँ नर्मदा के घाट सनातन तीर्थ

मुख्यमंत्री ओंकारेश्वर में आयोजित अमृतस्य मां नर्मदा पद परिक्रमा कार्यक्रम में हुए शामिल

भोपाल। संत और भगवा की अपनी एक विशेषता होती है। संतजन समाज और हजारों जीवन को सद मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए ऊर्जा प्रदान करने का कार्य करते हैं। जिस प्रकार से सूर्य और दीप हमें ऊर्जा प्रदान कर अंधकार से मुक्त कराते हैं, वैसे ही संत जन हमारे जीवन को ज्ञान रूपी प्रकाश की नई ज्योति प्रदान करते हैं। यह बात मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आज ओंकारेश्वर में ब्रह्मपुरी घाट पर आयोजित ÷अमृतस्य मां नर्मदा पद परिक्रमा कार्यक्रम÷ में कही। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ब्रह्मपुरी घाट पर मां नर्मदा का पूजन कर आरती की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि संत हमें सदैव सदमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने कहा नदी, पर्वत, पहाड़ हम मनुष्यों को प्रकृति की एक देन है। इसके संरक्षण के लिए हम सभी को प्रयास करने की आवश्यकता है। हमें अपनी संस्कृति पर गर्व है और सभी को होना चाहिए।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में प्रत्येक देवस्थान पर बेहतर व्यवस्थाओं को सुनिश्चित कराया जाएगा। उन्होंने कहा प्रदेश में पूरे नर्मदा परिक्रमा पथ को बेहतर तरीके से विकसित करते हुए व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराई जाएंगी, जिससे नर्मदा परिक्रमा यात्रियों को सुविधा होगी। उन्होंने कहा इसके लिए 5 सदस्यीय मंत्रियों की समिति भी बनाई गई है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विश्व में एक विशेष पहचान बना रहा है। उन्होंने कहा हम सभी को भारतीय संस्कृति पर गर्व और अभिमान हैं। मां नर्मदा अमरकंटक से निकलकर खंभात की खाड़ी में मिलती है। मां नर्मदा इस पूरे मार्ग में लंबी यात्रा तय करती है। पतित पावनी सलिल मां नर्मदा की धारा जिस भी मार्ग से गुजरती है वहां जीवन का सृजन और प्रकृति जीवंत होती है। मां नर्मदा के दर्शन में जीवन का दर्शन समाहित है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा पूरे नर्मदा पद पर विभिन्न विकास कार्यों के लिए प्रदेश सरकार लगातार प्रयास कर रही है।

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि माँ नर्मदा के पूरे परिक्रमा क्षेत्र में चल रहें सेवा के अनेक प्रकल्पों जिसमें निःशुल्क अन्नक्षेत्र एवं आवास व्यवस्था विश्व के लिए प्रेरणा का विषय हैं, और यह केवल भारत में माँ नर्मदा के खंड में ही होता है। मध्यप्रदेश में तो यह और भी अद्भुत है, जहां घर घर से परिक्रमा करने वालों के लिए भोजन भेजा जाता है।

श्रद्धेय गुरुदेव विवेक जी, श्री जोड़ गणपति हनुमान मंदिर ओंकारेश्वर के महंत मंगलदास जी त्यागी, महानिर्वाणी अखाड़ा ओंकारेश्वर के महंत श्री कैलाश भारती, मार्कण्डेय संन्यास आश्रम ओंकारेश्वर के महंत श्री प्रणवानंद जी सरस्वती एवं श्री निजानंद धाम खाचरोद के ब्रह्मचारी जी महाराज, खण्डवा विधायक श्रीमती कंचन तनवे, पंधाना विधायक श्रीमती छाया मोरे, मान्धाता विधायक श्री नारायण पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती पिंकी वानखेड़े सहित संतगण, जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे।

नर्मदा परिक्रमा का ऐप से डिजिटल क्रांति

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नर्मदा परिक्रमा का ऐप से परिक्रमा कर रहे लोगों को परिक्रमा मार्ग में मदद मिलेगी, साथ ही स्थानीय लोगों के लिये रोज़गार के अवसरों में वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि रोज़गार के अवसर लोगों को अपने ग्राम और शहर से जोड़े रखेंगे। डिजिटल क्रांति से स्थानीय लोगों को रोज़गार देने का प्रयास नर्मदा जी के खंड में नूतन अध्याय लिखेगा। इस एप से परिक्रमा कर रहे लोग स्थानीय संस्कृति से भी परिचित होंगे। परिक्रमा मात्र साधना नहीं भारत की संस्कृति की यात्रा भी होगी और मध्यप्रदेश से आरंभ होने वाली यात्रा पूरे भारत में ऐसे और अध्यायों को लिखेगी।

परिक्रमा मार्ग में पौध-रोपण माँ नर्मदा के स्वरूप को अनादि काल तक रखेगा अक्षुण्ण

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि माँ नर्मदा के पावन स्वरूप को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये परिक्रमा करने वाले श्रद्धालु तट पर 5-5 पौधे (सीड बाल्स) रोपने का पुनीत कार्य करें। इस प्रकार जब सरकार और समाज दोनों समन्वित रूप से प्रयास करेंगे तो माँ नर्मदा का आदि स्वरूप अनादि काल तक अक्षुण्ण बना रहेगा।

आज बालाघाट के स्वदेशी मेला व गायत्री महायज्ञ में मुख्यमंत्री डॉ. यादव शामिल होंगे

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आज मंगलवार को बालाघाट नगर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे। वे यहां उत्कृष्ट विद्यालय में आयोजित हो रहे रोजगार मेले में शामिल होकर युवाओं को संबोधित करेंगे। साथ ही विभिन्न कंपनियों में चयनित होने वाले युवाओं को ऑफर लेटर भी प्रदान करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव इस स्वदेशी मेले में विभागीय प्रदर्शनियों का भी अवलोकन भी करेंगे। उनके निर्धारित कार्यक्रम अनुसार वे स्टेट हैंगर भोपाल से 11ः40 बजे वायुयान द्वारा डुमना एयरपोर्ट जबलपुर पहुचेंगे। यहाँ से वे हेलीकॉप्टर के माध्यम से दोपहर 12ः20 बजे बालाघाट के लिए प्रस्थान करेंगे। दोपहर 1 बजे बालाघाट पहुँचकर 1ः05 बजे से 1ः40 बजे तक जिले के उत्कृष्ट विद्यालय में आयोजित स्वदेशी मेले में सम्मिलित होंगे। इसके बाद 1ः45 पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव जिले के ग्राम डुंगरिया के सरदार पटेल यूनिवर्सिटी में आयोजित 251 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में शामिल होंगे। मुख्यमंत्री यादव डुंगरिया से 2ः30 बजे हेलीपेड पहुंचकर डुमना एयरपोर्ट के लिए प्रस्थान करेंगे।

राज्यपाल, भोपाल गैस त्रासदी के दिवंगतों को देंगे श्रद्धांजलि

भोपाल। राज्यपाल मंगुभाई पटेल भोपाल गैस त्रासदी की 40वीं बरसी पर 3 दिसम्बर को बरकतउल्ला भवन, सेंट्रल लायब्रेरी में प्रातः 10ः30 बजे आयोजित ÷सर्वधर्म प्रार्थना सभा'' कार्यक्रम में भोपाल गैस त्रासदी के दिवंगतजनों की स्मृति में श्रद्धांजलि देंगे। भोपाल गैस त्रासदी की 40वीं बरसी पर विभिन्न धर्माचार्यों द्वारा दिवंगतों के लिये सर्वधर्म पाठ किया जायेगा। दिवंगतों की स्मृति में मौन श्रद्धांजलि भी दी जायेगी।

आज मनेगा विश्व दिव्यांगजन दिवस

दिव्यांगजनों के अधिकार संरक्षण में मध्यप्रदेश अग्रणी

नारायण सिंह कुशवाह

हर वर्ष 03 दिसंबर को विश्व दिव्यांग दिवस मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य दिव्यांगजन के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण के प्रति समाज को जागरूक करना है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि हर व्यक्ति, चाहे वह शारीरिक या मानसिक रूप से सक्षम हो या नहीं, समाज का अभिन्न हिस्सा है। इस अवसर पर हम न केवल उनकी उपलब्धियों का सम्मान करते हैं, बल्कि उनके सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने और उनके लिए समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। मध्यप्रदेश सरकार ने दिव्यांगजन के सशक्तिकरण के लिए कई प्रभावी योजनाएं और कार्यक्रम लागू किए हैं, जो उनकी कार्यक्षमता और जीवन-स्तर को बेहतर बनाने के लिए समर्पित हैं।

मध्यप्रदेश दिव्यांगजन सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्य करने वाला अग्रणी राज्य है। वर्ष 2011 की जनगणना में 15 लाख 51 हजार से अधिक दिव्यांगजन का चिन्हांकन किया गया था, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के अनुसार दिव्यांगजन की 21 श्रेणियों को इसमें सम्मिलित किया गया है। राज्य सरकार का मानना है कि दिव्यांगजन में प्रतिभा की कमी नहीं होती है, जरूरत उन्हें समान अवसर उपलब्ध कराने की है। हम लगातार देख रहे देश-प्रदेश के दिव्यांग भाइयों द्वारा हर क्षेत्र में अपनी सशक्त भागीदारी दर्ज कराई है।

मध्यप्रदेश के परिक्षेत्र में हम देखें तो पायेंगे कि इस वर्ग के लोगों को यूनिक आईडी कार्ड बनाने का कार्य संवेदनशीलता के साथ किया जा रहा। भारत सरकार ने इस वर्ष 2023-24 में 6.60 लाख कार्ड बनाने का लक्ष्य दिया था। प्रदेश 8 लाख 85 हजार कार्ड तैयार कर देश में द्वितीय स्थान पर है। इसी प्रकार सुगम्य भारत अभियान के तहत प्रदेश के दिव्यांगजन को शासकीय कार्यालयों में आने जाने में कठिनाई का सामना न करना पड़े इसके लिए सुगम्य भारत अभियान को बाधा रहित वातावरण निर्माण के लिये भारत सरकार द्वारा 2023 का सर्वश्रेष्ठ राज्य का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

दिव्यांगजन के सशक्तिकरण के उद्देश्य

1. दिव्यांगजन को आत्मनिर्भर बनाना।
2. समाज में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।
3. दिव्यांगजन को रोजगार, शिक्षा, और स्वास्थ्य सेवाओं में समान अवसर प्रदान करना।

मध्यप्रदेश में दिव्यांगजन को मुख्यधारा से जोड़ने के लिये अनेक अभियान एक साथ चलाए जा रहे है। इनमें प्रमुख हैः-

एडीआईपी योजना

केन्द्र सरकार की एलिम्को संस्था के माध्यम से संचालित एडिप योजना के तहत राज्य में वर्ष 2023-24 और 2024-25 में 37,224 दिव्यांगजन को 49.26 करोड़ रुपये मूल्य के सहायक उपकरण वितरित किए गए। वर्ष 2024-25 में 14 जिलों में उपकरण वितरण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें 3,228 हितग्राहियों को 546.85 लाख रुपये मूल्य के कृत्रिम अंग और सहायक उपकरण प्रदान किए जाएंगे।

निःशक्त विवाह प्रोत्साहन योजना

इस योजना के तहत पात्र दिव्यांग दंपत्तियों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। यदि एक साथी दिव्यांग है तो 2 लाख और यदि दोनों दिव्यांग हैं तो 1 लाख की सहायता दी जाती है। इस योजना से वर्ष 2023-24 में 122 और 2024-25 (अगस्त तक) में 1,200 दंपत्तियों को लाभान्वित किया गया। योजना शुरू होने से अब तक 17,095 दंपत्तियों को सहायता मिली है।

मुख्यमंत्री निःशक्त शिक्षा प्रोत्साहन योजना

दिव्यांग छात्रों को उच्च शिक्षा में प्रोत्साहित करने के लिए यह योजना लागू की गई है। योजना के तहत, छात्रों को लेपटॉप और बैटरी चलित मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल दी जाती है। वर्ष 2024-25 में 70 छात्रों और 2023-24 में 537 छात्रों को लाभ मिला है। इस, दिव्यांग दिवस पर पात्र छात्रों को ये उपकरण वितरित किए जाएंगे।

समावेशी समाज की दिशा में कदम

दिव्यांगजन के लिए सहायक उपकरण जैसे कृत्रिम अंग, बैसाखी, श्रवण यंत्र, और मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल उनकी दैनिक जीवन की चुनौतियों को कम करने में मदद करते हैं। इसके साथ ही, यूडीआईडी कार्ड उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में सक्षम बनाता है।

सामाजिक जागरूकता और सहभागिता

विश्व दिव्यांग दिवस केवल योजनाओं और सहायता तक सीमित नहीं है, यह समाज को यह समझाने का अवसर भी है कि दिव्यांगता कोई कमी नहीं, बल्कि एक विशेषता है। हमें उनकी क्षमताओं पर विश्वास करना चाहिए और उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

निष्कर्ष

दिव्यांगजन का सशक्तिकरण केवल राज्य सरकार का कार्य नहीं है, बल्कि यह समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। जब हम समावेशी दृष्टिकोण अपनाते हैं, तब हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकते हैं जहां हर व्यक्ति को समान अवसर और सम्मान मिले।

इस विश्व दिव्यांग दिवस पर, आइए हम दिव्यांगजन को सशक्त बनाने की दिशा में अपने प्रयासों को और मजबूत करें और उनके योगदान को स्वीकार कर उनके साथ एक नए समावेशी और सक्षम समाज की ओर कदम बढ़ाएं।

(लेखक मध्यप्रदेश के सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण मंत्री हैं।)

अखबार के हॉकर्स को सर्दी से बचाव हेतु शिवपुरी विकास समिति ने बांटी गर्म जर्सियां

-केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने हॉकर्स को अपने हाथों से पहनाईं जर्सियां

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-
शिवपुरी। समाजसेवा के लिए कटिबद्ध शिवपुरी विकास समिति ने सर्दी से बचाव हेतु अखबारों के दो दर्जन से अधिक हॉकर्स को गर्म जर्सियों का वितरण किया। केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के मुख्य आतिथ्य में सिंधिया जनसंपर्क कार्यालय में हॉकर्स को जर्सियां स्वयं श्री सिंधिया ने अपने करकमलों से पहनाई। उन्होंने इसके लिए शिवपुरी विकास समिति की समाजसेवी भावना की सराहना की।
इस अवसर पर प्रभारी मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, विधायक देवेन्द्र जैन, कोलारस विधायक महेन्द्र यादव, सांसद प्रतिनिधि राकेश गुप्ता, कपिल भार्गव, शिवपुरी विकास समिति के अध्यक्ष तेजमल सांखला, उपाध्यक्ष डॉ. रामकुमार शिवहरे, अशोक कोचेटा, महामंत्री जिनेन्द्र जैन, हरिओम जैन, विमल जैन मामा, विनोद शास्त्री, श्यामसुन्दर राठौर, किशोर खण्डेलवाल, सौरभ सांखला, तरूण अग्रवाल, विष्णु सोनी, अजय बिंदल, संजीव बिलगैया, मुकेश जैन, राजकुमार शर्मा, लालू शर्मा, किरन शर्मा आदि भी उपस्थित थे।
शिवपुरी विकास समिति के अध्यक्ष तेजमल सांखला और उपाध्यक्ष डॉ. रामकुमार शिवहरे, महामंत्री जिनेन्द्र जैन ने संयुक्त रूप से बताया कि कड़कती सर्दी में हॉकर्स घर-घर जाकर लोगों तक अखबार पहुंचाते हैं ताकि लोग देश दुनिया के समाचार से अवगत हो सकें। इसे महसूस कर शिवपुरी विकास समिति ने निर्णय लिया कि हॉकर्स को वह गर्म जर्सी प्रदान करें ताकि सर्दी से उनका कुछ हद तक बचाव हो सके। इसी उद्देश्य से उन्होंने केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के कर कमलों से हॉकर्स को जर्सियों का वितरण कराया है।

स्थानीय कलाकारों व बुंदेली संस्कृति को संजोय रखने का मंच खजुराहो अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवलः राजा बुंदेला

खजुराहो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल का 10वां संस्करण 5 से 11 दिसंबर के बीच विश्वप्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी खजुराहो में आयोजित होने जा रहा है। इस बार यह फेस्टिवल लीजेंडरी बॉलीवुड एक्टर और देश के पहले सुपरस्टार राजेश खन्ना को समर्पित है। अपने पिछले 9 संस्करणों की तरह इस बार भी कि, फिल्म जगत से देश-विदेश की कई नामचीन हस्तियों को एकसाथ एक मंच पर एकत्र करने का गवाह बनेगा। हालांकि इससे भी खास बात यह है कि स्थानीय कलाकारों को कला जगत के मंझे हुए कलाकारों के समक्ष अपनी प्रतिभा का जौहर दिखाने का अवसर और अधिक व्यापक स्तर पर मिलेगा।
हम सभी जानते हैं कि बुंदेलखंड अपनी समृद्ध संस्कृति, लोक कला और वीर, वीरांगनाओं की धरती के रूप में इतिहास के पन्नों पर दर्ज है। चन्देलों-बुंदेलों की बात हो या आल्हा-उदल की अमर कथाएं, या झाँसी की रानी की शौर्य गाथाएं, कि के मंच ने इतिहास के इन पन्नों को फिर से सजीव रूप देने का प्रयास किया है। प्राकृतिक खूबसूरती और गुणों से परिपूर्ण बुंदेलखंड आज फिल्म जगत के मशहूर सितारों के समावेशन के लिए भी जाना जाने लगा है और इसमें खजुराहो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल का अहम योगदान कहा जा सकता है। प्रतिभावान युवाओं को मंच देने के साथ-साथ बुंदेली कला के प्रति समर्पित समूहों को आगे बढ़ाने तक, कि का बुंदेलखंड के प्रति समर्पण आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आंका जा रहा है। 7 दिन के इस समारोह में रोजाना सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें देश के अलग-अलग कोनों से आए बुंदेली कलाकारों को मंचन करने का अवसर मिलता है।
सात दिन तक चलने वाली वर्कशॉप्स के माध्यम से बुंदेलखंड व करीबी क्षेत्रों के छात्र-छात्राओं को सिनेमा जगत के प्रतिष्ठित हस्तियों से फिल्म मेकिंग की बारीकियां सीखने का मौका मिलता है, साथ ही लोकल प्रतिभाओं को व्यापक स्तर पर अपने क्रिएशन को प्रदर्शित करने का अवसर भी मिलता है। खजुराहो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल से देश-विदेश में मशहूर हुए टपरा टॉकीज की संख्या भी इस संस्करण में बढ़ाई जाएगी। खजुराहो परिक्षेत्र में पांच टापरा टॉकीज का निर्माण किया गया है। इन सभी का नाम राजेश खन्ना जी द्वारा अभिनीत फिल्मों के नाम पर है और इन्ही टॉकीज में नए कलाकारों के द्वारा बनाई गई सैकड़ों फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा। हम इस बार टेक्निकल वर्कशॉप और मास्टरक्लास का अधिक प्रखर सेशन भी देखेंगे। इस वर्कशॉप में बुंदेलखंड समेत देश के अलग-अलग हिस्सों से प्रतिभागी इससे लेंगे। इस दौरान भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली, भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ, मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय, भोपाल के विषय विशेषज्ञ प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।
अपने 10वें संस्करण में पहुँच चुके कि का शुभारंभ इस बार मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कर कमलों से होना है। वहीं मुंबई से फिल्म व टीवी जगत के कई मशहूर स्टार्स भी शामिल होने आ रहे हैं। जिनमें अक्षय कुमार, डिंपल कपाड़िया, सुनील शेट्टी, ट्विंकल खन्ना, पंकज त्रिपाठी, बुमन ईरानी, नवाजुद्दीन सिद्दीकी, अंगूरी भाभी फेम शुभांगी अत्रे, मनोज पहवा एवं सीमा पाहवा जैसे अन्य कई सितारे शामिल हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें खजुराहो फिल्म फेस्टिवल को गवर्निंग काउन्सिल के रूप में मनमोहन शेट्ठी, रजत बेदी, रमेश सिप्पी, प्रकाश झा और चंद्रप्रकाश द्विवेदी जैसे सीनियर मार्गदर्शक मिले हैं। हम सब मिलकर बुंदेलखंड और यहां की प्रतिभाओं को इंटरनेशनल स्तर पर पहचान दिलाने के लिए प्रयासरत् हैं।

70 वर्ष व उससे अधिक आयु के लोगों के दो-दिवसीय 'आयुष्मान कार्ड शिविर' प्रारंभ

- प्रथम दिवस 100 से अधिक बने 'आयुष्मान कार्ड'

- आज भी होगा शिविर का आयोजन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-
ग्वालियर। भारत सरकार द्वारा 70 वर्ष व इससे अधिक आयु के सभी नागरिकों का 'आयुष्मान कार्ड शिविर' बनाने का निर्णय लिया गया है। केन्द्र सरकार की इस योजना का लाभ संस्था के सदस्यों व उनके परिजनों को उपलब्ध कराए जाने के उद्देश्य से 'चेम्बर भवन' में दो-दिवसीय 'आयुष्मान कार्ड' शिविर का आयोजन दि. 02 व 03 दिसम्बर को 12.00 से सायं 04.00 बजे किया जा रहा है।
शिविर के शुभारम्भ के अवसर पर अध्यक्ष-डॉ. प्रवीण अग्रवाल द्वारा इस अवसर पर उपस्थित जिला आयुष्मान नोडल अधिकारी- डॉ.अशोक खरे, एम एण्ड ई- दत्तात्रेय कदरे, जिला मीडिया अधिकारी- आई.पी. निवारिया एवं डीसीएम- एम.एस. खान का फूलमाला से हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर कार्यकारिणी सदस्य- आशीष अग्रवाल एवं दाल बाजार व्यापार समिति के अध्यक्ष-दिलीप पंजवानी विशेष रूप से उपस्थित रहे।
आज प्रथम दिवस शिविर में 100 से अधिक लोगों के 'आयुष्मान कार्ड' सीएमएचओ कार्यालय एवं पोस्ट ऑफिस की टीम द्वारा बुजुर्गों के 'आयुष्मान कार्ड' बनाए गए ।
पदाधिकारियों ने कहा है कि दिनांक 03 दिसम्बर को भी उपरोक्त शिविर का आयोजन 12.00 बजे से सायं 04.00 बजे तक किया जाएगा। इस शिविर में आधार से मोबाइल नं. को लिंक भी किया जा रहा है। साथ ही, जिन लोगों के आधार कार्ड में पंजीकृत मोबाइल नं. परिवर्तित हो चुके हैं, ऐसी स्थिति में नवीन मोबाइल नं. को पोस्ट ऑफिस की टीम द्वारा अपडेट भी किया जा रहा है। एमपीसीसीआई द्वारा उपरोक्त शिविर के सफल आयोजन हेतु सीएमएचओ एवं पोस्ट ऑफिस के वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार व धन्यवाद व्यक्त किया है। पदाधिकारियों ने इस शिविर में पात्र लोगों से अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की है।

सऊदी में भारतीय ज़ायरीनों को मिलता है बहुत सम्मानः असगर भाई

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-
बागली। मुस्लिम समाज की सऊदी की धार्मिक यात्रा पर मक्का मदीना जियारत करने बागली के बोहरा समाज के असगर अली बादशाह उनकी पत्नी तस्लीमा बादशाह और पोती हुसैना बादशाह 17 दिनों की हज यात्रा पर बागली से मुंबई होते हुए रवाना हुए। मुकाम पर जाकर उन्हें लगा कि भारत का सम्मान और विशेष कर तिरंगे का सम्मान सभी खाड़ी देशों में बहुत है। हज यात्रा स्थल पर उनके साथ उस देश के नागरिको सहित सभी सुरक्षा एजेंसियों ने तथा एयरपोर्ट पर उपस्थित कर्मचारियों द्वारा सम्मान और अदब से पेश होते हुए बेहतर सम्मान दिया तथा नागरिकों को मिलने वाली की सभी सुविधाएं बादशाह के परिवार को प्रदान की। 17 दिनों धार्मिक हज यात्रा पूरी होने के बाद 01 दिसंबर को मुंबई और 02 दिसंबर को मुंबई से होते हुए अपने गृहनगर बागली पहुंचे।

यहां पर उनके इष्ट मित्रों सहित हिंदू समाज के मुस्लिम समाज के बोहरा समाज के और बाजार में रहने वाले अन्य समाज के वरिष्ठ प्रबुद्धजनों ने असगर बादशाह और परिजनों की कुशल यात्रा होने पर पुष्पा हारो से स्वागत सत्कार किया। स्वागत करने वालों में प्रमुख रूप में ओम प्रकाश शर्मा पूनम चंद राठौर, राजेश बजाज, कमल मस्कोले अंतर पाटीदार सुनील जायसवाल, विनय बोथरा सुनील योगी , आदि ने रूबरू मिलकर यात्रा की बधाई दी इस दौरान अजगर भाई यात्रा का जिक्र करते हुए कहते हैं कि वर्षों पूर्व गए हज यात्रियों की तुलना में वर्तमान में होने वाली हज यात्रा और भी सहज और सरल है विशेष कर भारतीयों का वहां पर बहुत सम्मान होता है। यहां की मुद्रा सो रुपए के बदले वहां की मुद्रा 23 मिलती है। जिसे आसानी से वहां के बाजारों में चलाया जाता है पहले यह नहीं होता था।
मुंबई में ही मुद्रा एक्सचेंज करके वहां खर्च करना पढ़ता था। लेकिन भारत के वजीरे आला मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय मुद्रा का प्रचलन और भारत का नाम सभी मुस्लिम देशों के साथ हज यात्रा के दौरान आने वाले अन्य देशों में भी बखूबी चलता है। यात्रा से आगमन पर असगर बादशाह के दूर दराज के रिश्तेदार भी इस्तकबाल करने बागली पहुंचे।

वन विभाग ने किया सियार का रेस्क्यू

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-
देवास। वन विभाग देवास की रेस्क्यू टीम को 01 दिसम्बर को शाम 07

बजे मुकेश चौहान निवासी ग्राम,मगरिया द्वारा सुचना प्राप्त हुई कि मेरे कुएं में कोई जंगली जानवर गिर गया है। सुचना पर वन मण्डला अधिकारी देवास पी.के. मिश्रा के आदेश से उपवन मण्डला अधिकारी व वन परिक्षेत्र अधिकारी देवास के निर्देशन में रैस्क्यू प्रभारी तुलसीराम कहार, रैस्क्यू एक्सपर्ट राजैश चौहान, अंकित मण्डलोई, दिनैश चोधरी, बीट गार्ड चोबारा राजैन्द्र वर्मा ने मोके पर पहुंचकर एक सियार का सुरक्षित रैस्क्यू कर रात्रि 10 बजे कुए से निकाल दिया। सियार कुंए से निकलने के बाद जंगल की ओर भाग गया। उक्त जानकारी हेमराज गोखले ने दी।

एबीवी- आई.आई.आई.टी.एम. ग्वालियर संस्थान में 'ऊर्जा व पर्यावरण के लिए नैनो सामग्री और उपकरणों में प्रगति' पर तृतीय तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन CANDEE 2024 का आयोजन आज से

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-
ग्वालियर। एबीवी- ट्रिपल आई.टी.एम संस्थान में दिनांक 03 से 05 दिसम्बर दिसंबर तक ग्वालियर में कैन्डी 2024 का आयोजन प्राराम्भ होगा, जिसमें देश- विदेश के विख्यात वैज्ञानिक भाग लेंगे। इस सम्मेलन में नैनोटेक्नोलॉजी की ऊर्जा और पर्यावरणीय स्थिरता की भूमिका पर देश-विदेश के उपस्थित अतिथि अपने अपने विचार साझा करेंगे। सम्मेलन से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी वेबसाइट https://profanurag.in/IC/candeewy/ पर उपलब्ध है।

सम्मेलन का विषय 'शुद्ध जल, हरित ऊर्जा और स्वच्छ पर्यावरण और संबंधित स्टार्टअप के लिए नैनोमटेरियल्स' तय किया गया है। सम्मेलन में मुख्य वक्ता, पूर्ण, आमंत्रित और संक्षिप्त आमंत्रित के लिए भारत और विदेशों (यूएसए, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, थाईलैंड, जर्मनी, रूस, नेपाल, सिंगापुर, ब्राजील, स्वीडन, सऊदी अरब आदि) से 40 से अधिक वक्ता भाग ले रहे हैं। वार्ता, 90+ प्रस्तुतियाँ (मौखिक + पोस्टर) और 10+ थीसिस प्रस्तुतियाँ। सम्मेलन SPARC, ANRF, DRDO, CSIR, SSD, MAKDesign, ACS आदि द्वारा प्रायोजित है और इसमें ENEA (इटली), MRS भोपाल, ENEA (इटली) , AMST (भारत), MRSI (भारत) भोपाल चैप्टर जैसे कई संघ शामिल हैं, नेपाल फिजिकल सोसाइटी (नेपाल), IEEE मध्य प्रदेश, एचडीएफसी, ESPIN, HEX-ORP आदि।
संस्थान के निदेशक प्रो. एसएन सिंह के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में यह सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इस सम्मेलन के मुख्य संयोजक प्रो. अनुराग श्रीवास्तव (डीन पूर्व छात्र एवं बाह्य/ विदेश संबंध) हैं। उन्होंने बताया कि उक्त अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में ऊर्जा व पर्यावरण के लिए नैनो सामग्री और उपकरणों में प्रगति से संबन्धित वैश्विक मुद्दे और चुनौतियाँ के बारे में परिचर्चा होगी जिससे सभी लाभान्वित होंगे। कार्यक्रम का मुख्य उद्धेश्य अनुसंधान के क्षेत्र में वैश्विक उत्कृष्टता प्राप्त करना है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी प्रतिभागी उक्त विस्वस्तरीय सम्मेलन का लाभ लेगे।

भारत विकास परिषद शाखा-समर्पण द्वारा जरूरतमंद परिवार की कन्या के विवाह में किया सहयोग

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-
ग्वालियर। भारत विकास परिषद् शाखा समर्पण द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर कन्या को विवाहा का सामान दिया। शाखा संस्थापक व सरल विवाह संयोजक संजय धवन व शाखा पदाधिकारीगण ने तृप्ति नगर कॉलोनी वार्ड नं. 23 नदी पार टाल मुरार में 02 दिसम्बर को कन्या निधि बाथम के विवाह में गृहस्थ जीवन मे काम आने वाला सामान दीवान गदा ड्रेसिंग टेबल, चादर-तकिए, 04 कुर्सी टेबल सैट, ट्रॉली बेग, डिनर सेट, कंबल, प्रेस, पंखा, 05 साड़ी, पेंट शर्ट, पानी बोतल सैट, टोवल, 02 गर्म टिफिन, बाऊल सैट, मिठाइयाँ आदि निधि बाथम को मुख्य अथिति अनूप अग्रवाल संस्थापक एवं क्षेत्रीय संयुक्त सचिव व विशिष्ट अथिति प्रान्तीय संयोजक अशोक गर्ग व ''बेटी है तो कल है'' की अध्यक्ष वंदना भूपेन्द्र प्रेमी के समक्ष भेंट किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुलाब सिंह प्रजापति ने की। संचालन सचिव पंकज शर्मा ने, सभी का आभार कोषाध्यक्ष महेश धीमान ने किया। इस अवसर पर संस्थापक संजय धवन ने बताया कि शाखा समर्पण सेवा संस्कार प्रकल्प के अन्तर्गत जरुरतमंद परिवार की कन्याओं के विवाह में मदद करती आ रही है।
इस अवसर पर मातृ शक्ति मधु धवन, माया शाक्य, मधु धीमान के अलावा परिवार के सभी उपस्थित थे। और आसपास के परिवार सभी ने भारत विकास परिषद शाखा-समर्पण के इस वर्ष भर चलने वाले सेवा कार्य की ओर पूरी टीम की प्रशंसा की, साथ ही रीजनल सयुंक्त महासचिव ने कहा कि भारत विकास परिषद् समय समय पर इसी प्रकार के सेवाभाव के कार्य निरन्तर करती रहती है।

ऑस्ट्रेलिया की धरती पर 23 वर्षीय स्वजातीय कल्चुरी गौरव ओपनर 'यशस्वी जायसवाल' बने शतकवीर

अखिल भारतीय हैहय क्षत्रिय सर्ववर्गीय कल्चुरी महासमाज के कार्यकारी अध्यक्ष महाकुम्भ राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय टीवी न्यूज़ चैनल वरिष्ठ पत्रकार राष्ट्रीय मीडिया प्रमुख डॉ. महेंद्र कुमार महाजन डीलिट एवं वरिष्ठ समाजसेवी मीडिया दयाचंद शिवहरे एवं विपिन शिवहरे ने संयुक्त प्रेस विज्ञप्ति में बहुत ही हर्ष से बतलाया है कि इस पर विशेष प्रसन्नता अखिल भारतवर्ष हैहेय क्षत्रिय कलचुरी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जयनारायण चौकसे एवं अंतर्राष्ट्रीय संरक्षक डॉ. पूनम चौकसे एवं एवं जाने-माने वरिष्ठ पत्रकार हृदय हिंदुस्तान एक्सप्रेस के प्रधान संपादक चंद्रप्रकाश शिवहरे, जय स्वतंत्र भारत के संपादक डॉ. राजेंद्र शिवहरे ग्वालियर, राजेश राय जय स्वतंत्र भारत भोपाल एवं तरुण सत्ता के प्रधान संपादक डॉ. रामकुमार शिवहरे एवं मानव वेलफेयर के अध्यक्ष वरिष्ठ एडवोकेट संतोष शिवहरे शिवपुरी ने बहुत हर्ष व्यक्त करते हुए महा बधाई दी है।
राष्ट्रीय मीडिया प्रमुख डॉ. महेंद्र कुमार महाजन डीलिट ने बतलाया है कि ज्योतिरादित्य के पी.ए. प्रदीप राय शिवनी उज्जैन के कलचुरी वार्ता के राजेश राय दिल्ली भाजपा शीर्षस्थ श्रीमती मीनू जायसवाल एवं जबलपुर रेलवे के इंजीनियर शैलेंद्र जायसवाल एवं इंजीनियरिंग कॉलेज जबलपुर की वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. मोना जायसवाल कैलिफोर्निया अमेरिका यूएसए के सॉफ्टवेयर इंजीनियर वीरेंद्र जयसवाल एवं उनकी धर्मपत्नी वंदना जायसवाल आगरा एवं लंदन के सॉफ्टवेयर इंजीनियर हिमांशु जायसवाल एवं उनकी धर्मपत्नी सानू महाजन शिवपुरी एवं बिलासपुर के डॉ. अनिवेश जायसवाल एवं बैंक अधिकारी पूजा महाजन जायसवाल, राष्ट्रीय मीडिया प्रमुख मीडिया प्रवक्ता डॉ. महेंद्र कुमार महाजन डीलिट ने बतलाया है कि बॉर्डर-गावस्कर सीरीज पहला टेस्ट यशस्वी जायसवाल विराट बने शतकवीर स्वजातीय कलचुरी गौरव युवा ओपनर श्री माननीय मात्र 23 वर्ष की कम उम्र के युवा ओपनर यशस्वी जयसवाल विराट कोहली के शानदार शतकों के बाद तेज गेंदबाजों के घातक प्रदर्शन से भारतीय टीम ने पहले टेस्ट मैच में मेजबान को उसकी धरा पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शिकंजा कस लिया।

अभी हाल ही में रविवार को मैच के तीसरे दिन भारतीय टीम ने दूसरी पारी 6 विकेट पर 487 रन पर घोषित की स्वजातीय गौरव यशस्वी जायसवाल ने टेस्ट करियर का कुल चौथा शतक लगाया। उन्होंने 297 गेंद में 15 चौकों और तीन छक्कों के साथ 161 रन की पारी खेली। राष्ट्रीय मीडिया प्रवक्ता डॉ. महेंद्र कुमार महाजन डीलिट ने बतलाया है कि क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर के एक रिकॉर्ड की बराबरी कर कलचुरी वंश को उन्होंने एक बड़ी सौगात देकर महा प्रशंसनीय कार्य किया है। जायसवाल मात्र 23 साल से कम की उम्र में सबसे ज्यादा चार बार 150 प्लस स्कोर बनाने वाले भारतीय बल्लेबाज बन गए हैं।

तोड़ा 38 साल पुराना रिकॉर्ड

201 रन यशस्वी और राहुल ने पहले विकेट के लिए जोड़े यह ऑस्ट्रेलिया भारत की ओर से सबसे बड़ी ओपनिंग साझेदारी है। इस जोड़ी से सुनील गावस्कर और श्रीकांत का रिकॉर्ड तोड़ा, जिन्होंने 1986 में सिडनी टेस्ट में 191 रन जुड़े थे। पर्थ ऑस्ट्रेलिया में यशस्वी जयसवाल की महासफलता पर अंतरराष्ट्रीय जानकी महासेना फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विक्रम सिंह रावत राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय टीवी चैनल वरिष्ठ पत्रकार डॉ. महेंद्र कुमार महाजन ग्वालियर मेडिकल कॉलेज के प्रखर महाजन एवं इंदौर मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर ऑफिसर सुनैना महाजन शिवपुरी मेडिकल कॉलेज प्रतिक महाजन लोक शिक्षण भोपाल के संयुक्त संचालक डॉ. अनुराग जायसवाल भोपाल हीमीडिया के वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. रविंद्र शिवहरे, मयंक महाजन सृजन महाजन एलएनसीटी भोपाल स्टूडेंट एवं इंदौर के कर्मठ युवा अखिल भारतीय कल्चुरी सर्ववर्गीय युवा अध्यक्ष आशीष महाजन एवं आकांक्षा महाजन चार अग्रसेन नगर इंदौर एवं युवा महासंघ के अध्यक्ष शिवपुरी उमाशरन शिवहरे एवं कंप्यूटर साइबर एक्सपर्ट प्रांजल महाजन शिवपुरी एवं सतना मध्य प्रदेश की युवा जुझारू कर्मठ महिला स्वनेत्री सुनैना महाजन एवं शिवानी जायसवाल सतना पूर्व इनकम टैक्स अधिकारी आर.के. जायसवाल सतना जानी-मानी मुंबई की सॉफ्टवेयर इंजीनियर प्रियंका गुप्ता एवं मुंबई के प्रसिद्ध लॉयर एवं चार्टर अकाउंट कंपनी के सी.एस. कुश गुप्ता एवं इंदौर के बिल्डर लब गुप्ता ने 'यशस्वी जायसवाल' को आत्मीय हार्दिक बधाई देते हुए कोटि-कोटि शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

ब्रजभूमि के 500 से अधिक कलाकारों की ओर से मुख्यमंत्री योगी को लिखा पत्र

- श्री गिर्राज कृष्ण सांस्कृतिक कला समिति ने की सराहनीय पहल

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-
मथुरा। श्री गिर्राज कृष्ण सांस्कृतिक कला समिति के मुरारीलाल तिवारी ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर ब्रजभूमि के 500 से अधिक कलाकारों की पीड़ा को बताया है।
अपने पत्र में उन्होंने कहा है कि आपने उत्तर प्रदेश तीर्थ विकास परिषद का गठन ब्रज के तीर्थों के विकास हेतु किया है, किन्तु एक भी तीर्थ का विकास नहीं हुआ है। उद्देश्यों के विपरीत उत्तर प्रदेश तीर्थ विकास परिषद के मंच पर मुंबई के फिल्मी कलाकारों के अशोभनीय अश्लील नृत्य वातावरण को विषाक्त कर रहे हैं। वर्तमान स्थिति यह ब्रज की सर्वाधिक प्राचीन गायन- वादन-नृत्य की परम्परा, संगीत सम्राट तानसेन के भी गुरू स्वामी हरिदास जी और वर्तमान में भी संगीत विद्या के उच्च कोटि के कलाकारों की उपेक्षा कर ब्रज संस्कृति को नष्ट करने के कुत्सित प्रयास किए जा रहे हैं।

ब्रज के कलाकारों की पीड़ा को मात्र एक पत्र द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता है। आपसे अनुरोध है कि यदि आप शीघ्र मथुरा न आ सकें तो संस्कृति विभाग को निर्देशित करें कि ब्रज के लगभग 500 कलाकारों के लखनऊ आने-जाने हेतु बसों की व्यवस्था करें। यह इसलिए आवश्यक है कि ब्रज की भूमि से जुड़े कलाकार आर्थिक रूप से समृद्ध नहीं हैं। हमें आशा है कि आप हमारी मांग पर सहानुभूति पूर्वक विचार करेंगे।

29 घंटे डॉक्टर को डिजीटल अरेस्ट रखकर 21 लाख की लगाई चपत

ग्वालियर। साइबर ठगों ने एक डॉक्टर को 29 घंटे डिजीटल अरेस्ट कर 21 लाख रुपए की चपत लगा दी। घटना गोला का मंदिर थाना क्षेत्र के हनुमान नगर की है। 29 घंटे में ठगों ने डॉक्टर को किसी से बात तक नहीं करने दी और घर के सभी नंबर स्विच ऑफ करा दिए। वारदात का खुलासा तब हुआ जब रुपए ठगने के बाद भी ठग मैसेज कर रहे थे तो परेशान डॉक्टर ने अपने परिचितों से घटना की जानकारी दी तो उन्होंने पुलिस से शिकायत करने के लिए कहा। मामला समझ में आते ही पीडित थाने पहुंचा और मामले की शिकायत पुलिस से की। पुलिस ने उनकी शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है।

गोला का मंदिर थाना क्षेत्र के हनुमान नगर निवासी 63 वर्षीय मुकेश शुक्ला पुत्र केके शुक्ला डॉक्टर है और 29 नवंबर की सुबह उनके मोबाइल पर एक कॉल आया। कॉल करने वाले ने उनसे बातचीत करते हुए बताया कि वह आईटी कंपनी से बोल रह है और उनके नाम पर चल रही महालक्ष्मी ट्रांस्पोटेशन कंपनी पर 9 लाख 40 हजार 44 रुपए की रिकवरी निकली है। जब उन्होंने महालक्ष्मी ट्रांस्पोटेशन कंपनी उनकी ना होने की कहा तो कॉल करने वाले ने बताया कि वह ठगों के चंगुल में फंस गए है और इसके लिए उन्हें पुलिस मुख्यालय दिल्ली में दो घंटे में शिकायत करनी होगी, नहीं तो उनके खिलाफ कार्रवाई हो जाएगी और उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इस पर वह घबरा गए और दो घंटे में दिल्ली पहुंचने में असमर्थता जताई तो कॉल करने वाले ने उन्हें ऑनलाइन एफआईआर दर्ज कराने के कहा और परेशानी होने पर उसकी मदद का आश्वासन दिया। इसके बाद उसने दिल्ली पुलिस मुख्यालय में पदस्थ सब इंस्पेक्टर अजय शर्मा का मोबाइल नंबर दिया और स्वयं भी कॉल करने की बात कही। जब उन्होंने अजय शर्मा नामक युवक से कॉल लगाकर बातचीत की तो अजय शर्मा ने उनके दस्तावेज मांगे और बताया कि उनके आधार कार्ड पर मनी लाड्रिंग का मामला दर्ज है। कुछ दिन पहले मनीष चौधरी के यहां पर सीबीआई रेड हुई थी, उसके यहां से उनका कार्ड मिला है, जिस पर करोड़ो रुपए का लेनदेन किया गया है। इसके बाद उन्होंने उसका फोटो लगा गोल्डन कार्ड दिखाया, जिसे देखने के बाद उनके पैरों तले जमीन निकल गई, क्योंकि कार्ड पर उनका नाम और फोटो लगा हुआ था।

इसके बाद अजय शर्मा ने उन्हें मजिस्ट्रेट के यहां से जारी हुआ वारंट दिखाया, जिसमें उसका फोटो और नाम से गिरफ्तारी वारंट था। इसके बाद उन्हें उन्होंने उसे निगरानी में होने की कही और इसके बाद उनके घर के सभी मोबाइल नंबर स्विच ऑफ करा दिए। बाथरूम तक जाने में उन्हें निगरानी में रखा गया। इसके बाद अगले दिन उनसे 21 लाख रुपए आरटीजीएस करा लिए। साथ ही हिदायत दी कि वह उनकी निगरानी में रहेगे। सीबीआई की एक टीम उनकी निगरानी में तैनात है, इस मामले में किसी से कोई चर्चा नहीं करे, चर्चा करने पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। परेशान डॉक्टर ने अपने मिलने वालों से निगरानी में होने की बात बताई तो परिचित को शंका हुई और उन्होंने पुलिस से शिकायत करने को बताया। हिम्मत कर डॉक्टर साइबर सेल पहुंचे और शिकायत की। मामला समझते ही पुलिस अफसरों की समझ में आ गया कि वह ठगी के शिकार हुए है और इसका पता चलते ही उनकी शिकायत पर अज्ञात ठगों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

तेज रफ्तार कार डिवाइडर से टकराकर क्षतिग्रस्त हुई, नशे में थे युवक

ग्वालियर। रात में सड़कों पर सन्नाटा पसरते ही कारों की रफ्तार तेज हो जाती है। ऐसी ही तेज रफ्तार कार रविवार-सोमवार की रात हादसे का शिकार हो गई। हादसा इतना खतरनाक था कि कार का पुर्जा-पुर्जा हिल गया। कार पहले पलटते-पलटते बची और फिर डिवाइडर से टकरा गई और क्षतिग्रस्त हो गई। गनीमत यह रही कि कार के एयर बैलून खुलने से उसमें सवार युवकों को गंभीर चोटें नहीं आई हैं। हादसे के बाद राहगीरों ने कार सवारों को गाड़ी से निकाला।

तेज रफ्तार आ रही वर्ना कार क्रमांक एमपी 07 सीएफ 4611 अनियंत्रित होकर सड़क पर लहराई और डिवाइडर से टकरा गई। हजीरा थाना क्षेत्र के मल्लगढ़ा चौराहे के पास रविवार-सोमवार की दरमियानी रात करीब ढाई बजे की है। कहा जा रहा है कि कार टक्कर से पहले दो बार पलटने से बची। हादसे का पता चलते ही वहां से निकल रहे और आस-पास रहने वाले लोग एकत्रित हुए और हादसे की शिकार कार में घायल युवकों को उपचार के लिए पहुंचाया। वहीं हादसे का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी है। कार की स्पीड का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि हादसे के पहले दोनों एयर बैलून खुल गए और कार में सवार तीनों युवक गंभीर चोट आने से बच गए। अगर कार में एयर बैलून नहीं खुलते तो कार सवार गंभीर रूप से घायल होते। हादसे के बाद कार की हालत ऐसी थी कि उसे एक कदम नहीं चलाया जा सकता था। बताया गया है कि कार सवार तीनों युवक शराब के नशे में थे और पार्टी से वापस आ रहे थे। नशे के सुरूर में वह काफी तेज रफ्तार वाहन चला रहे थे, जिससे कार अनियंत्रित हो गई और चालक ने वाहन को संभालने का प्रयास किया, लेकिन नशा होने के कारण वह उसे नियंत्रित नहीं कर सका। मौके पर पुलिस जब पहुंची तो घायल युवक ऑटो से उपचार के लिए रवाना हो चुके थे।

पुलिस ने कार को निगरानी में लेकर उसकी जानकारी जुटाई तो पता चला कि इस कार पर आधा दर्जन से ज्यादा 12 हजार रुपए के ओवर स्पीड के चालान हुए हैं। जिसमें झांसी पुलिस के दो चालान चार हजार रुपए, आगरा पुलिस 2 हजार, उन्नाव पुलिस 2 हजार और ग्वालियर पुलिस के पांच चालान हैं जो चार हजार रुपए के हैं।

दोस्त ने छात्रा को अगवा कर महाराष्ट्र ले जाकर किया दुष्कर्म

ग्वालियर। कोचिंग जा रही छात्रा को रास्ते में दोस्त मिला और दोस्त ने बात करने के बहाने छात्रा को कार में बिठा लिया और अपने तीन अन्य साथियों की मदद से उसे अगवा कर कई शहरों में घुमाता रहा। घटना मुरार थाना क्षेत्र के बड़ागांव खुरैरी की है। छात्रा को अगवा कर आरोपी दोस्त दिल्ली, अयोध्या और फिर महाराष्ट्र ले गया और उसके साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया। छात्रा की तलाश में महाराष्ट पहुंची पुलिस ने छात्रा को बरामद कर उसकी शिकायत पर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

मुरार थाना प्रभारी मदन मालवीय ने बताया कि थाना क्षेत्र के बड़ागांव खुरैरी निवासी 19 वर्षीय छात्रा पांच नवंबर को कोचिंग जाते समय लापता हो गई थी, छात्रा के लापता होने पर परिजनों ने मुरार थाना पुलिस से शिकायत की। शिकायत के बाद पुलिस ने छात्रा की पड़ताल की तो पता चला कि छात्रा महाराष्ट्र में है। इसका पता चलते ही प्रधान आरक्षक भान सिंह के साथ महिला आरक्षक व पुलिस जवानों को पहुंचाया। महाराष्ट्र पहुंची पुलिस तीन दिन तक घर-घर जाकर छात्रा को तलाश किया, तब कहीं छात्रा बरामद हुई। पुलिस ने छात्रा को बरामद करने के बाद उसे अगवा करने वाले युवक की तलाश की, लेकिन वह नहीं मिला। छात्रा को लेकर पुलिस ग्वालियर आ गई है। छात्रा ने पुलिस को बताया कि वह कोचिंग जा रही थी कि तभी उसका सोशल मीडिया दोस्त बंटी कुशवाह कार से आय और उससे बातचीत करने की कहकर कार में बिठा लिया। कुछ आगे जाने पर तीन लोग और आ गए, जिन्हें बंटी ने चाचा और जीजा बताया था। इसके बाद वह उसे धमकाकर दिल्ली ले गए और एक दिन दिल्ली में रखने के बाद अयोध्या लेकर पहुंचे। यहां पर दो दिन रूके और बंटी ने उसके साथ दुष्कर्म किया। इसके बाद वह उसे लेकर एक मंदिर पहुंचे और शादी की।

यहां से उसे लेकर ग्वालियर आए और यहां पर उसके साइन कराकर वह उसे लेकर महाराष्ट्र ले गया। इसी बीच पुलिस यहां पर पहुंची और उसे लेकर ग्वालियर आ गई। अब पुलिस ने पीडिता की शिकायत पर मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

माधौगंज व्यापारी समिति के अध्यक्ष अरविंद जैन को छह माह की सजा

ग्वालियर। न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी ग्वालियर प्रियंका मालपानी राठी ने मैसर्स कल्प एड एजेन्सी विरूद्ध अरविंद जैन के प्रकरण में अपना निर्णय सुनाते हुये अभियुक्त अरविंद एंड संस के संचालक एवं माधौगंज व्यापारी समिति के अध्यक्ष अरविंद जैन को छह माह के सश्रम कारावास से दंडित किया है।

मैसर्स अरविंद एंड संस के संचालक अरविंद जैन ने कल्प एड एजेन्सी के माध्यम से समाचार पत्र में विज्ञापन प्रकाशित कराए थे, जिनके भुगतान के लिए कल्प एड एजेन्सी को भुगतान राशि के चौक दिये थे। अरविंद एंड संस के खाते में र्प्याप्त राशि ना होने के कारण चौक बाउंस हो गए। जिस कारण कल्प एड एजेंसी ने न्यायालय की शरण ली थी। न्यायाधीश ने अपराध की प्रकृति एवं प्रकरण की समस्त परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुये न्यायालय ने अभियुक्त अरविंद जैन को धारा 138 परक्राम्य लिखित अधिनियम 1881 के तहत छह माह के सश्रम कारावास की सजा सुनाई इसके अतिरिक्त अभियुक्त को धारा 357 3 दंप्रसं के तहत चौक दिनांक से 9 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से चौक राशि रूप्ये 70875 के अतिरिक्त 42047 रूप्ये प्रतिकार स्वरूप दिये जाने का आदेश देते हुये परिवादी कल्प एड एजेंसी के संचालक मनोज जैन को कुल 1,12,922 रूपये दिये जाने का अभियुक्त को आदेश दिया है।

मास्टर माइण्ड सहित लूट करने वाला पकड़ा

ग्वालियर। मेडिकल स्टोर संचालक पर कट्टा अड़ाकर लूट का प्रयास करने वाले एक बदमाश को तथा वारदात का ताना-बाना बनुने वाले मास्टर माइण्ड को बहोड़ापुर थाना पुलिस ने पकड़ लिया है। बहोड़ापुर थाना प्रभारी जितेन्द्र सिंह तोमर ने बताया कि लक्ष्मीपुरम इलाके में राहुल गुप्ता के गहोई मेडिकल स्टोर पर दो दिन पहले दो बदमाश पहुंचे और कट्टा अड़ाकर लूट का प्रयास करने लगे, लेकिन बदमाश असफल हो गए और शोर मचाने पर भाग निकले। मामले का पता चलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मामला दर्ज कर बदमाशों की तलाश के लिए एसआई विवेक प्रताप सिंह तोमर, आरक्षक तारा सिंह, रूस्तम, सोनू, कमलकांत, गिर्राज को लगाया। दो दिन की पड़ताल के बाद पुलिस ने दो बदमाशों को पकड़ लिया है। जिसमें एक बदमाश वारदात का ताना-बाना बुनने वाला और रैकी करने वाला नाबालिग है और वारदात को अंजाम देने के लिए रोबिन पंडित तथा निखिल आदिवासी पहुंचे थे। जिसमें से रोबिन पंडित को पकड़ लिया गया है और निखिल अभी फरार है। फरार आरोपी निखिल के घर से फरार होने पर पुलिस ने उसके परिचितों और नजदीकियों की लिस्ट बनाकर उसकी तलाश में दबिश देना शुरू कर दिया है।

बीके शिवानी दीदी का प्रेरणादायी व्याख्यान आज

ग्वालियर। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के आव्हान पर बीइंग लाइट प्रोजेक्ट के तहत भावनात्मक सशक्तिकरण कार्यक्रम जीवाजी विश्वविद्यालय के अटल बिहारी वाजपई इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में आज 3 दिसंबर को शाम 6 बजे से आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी द्वारा प्रेरणादाई व्याख्यान दिया जाएगा। यह जानकारी आईएमए के अध्यक्ष डॉ. बृजेश सिंघल एवं सचिव डॉ. स्नेहलता दुबे ने संयुक्त रूप से सोमवार को पत्रकारों को दी।

आईएमए के पदाधिकारियों ने पत्रकारों को बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उच्च

न्यायालय के प्रशासनिक न्यायाधीश न्यायमूर्ति आनंद पाठक व विशिष्ट अतिथि के रूप में न्यायमूर्ति जी.एस अहलूवालिया मौजूद रहेंगे। डॉ. सिंघल ने बताया कि कार्यक्रम में भाग लेने के लिए व्हाट्सएप नंबर 8305367742 पर निशुल्क रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। साथ ही कार्यक्रम में 12 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को ही प्रवेश दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि वर्तमान में कार्यक्रम के लिए करीब ढ़ाई हजार लोगों ने पंजीयन करा लिया है। इसी तरह कल 4 दिसम्बर को भी ब्रह्माकुमारी संस्थान की ओर से खुशी की कुंजी पर बीके शिवानी दीदी द्वारा राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के दत्तोपंत तेगड़ी हाल में सुबह 7 से 8.30 बजे तक व्याख्यान दिया जाएगा। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए व्हाट्सएप नंबर 9425775973 पर पंजीयन करा सकते हैं।

सर्दी के दो महीने वन विभाग का वाइल्ड लाइफ आपरेशन शुरू

– सघन गश्ती में शिकार जैसे मामलों पर दिया जायेगा ध्यान

ग्वालियर। ग्वालियर में वन्य जीवों की सुरक्षा के लिये वन विभाग के द्वारा संभावित क्षेत्रों में वाइल्ड लाइड आपरेशन शुरू किया गया है। वहीं रात्रि गस्ती के लिये स्पेशल टीमों का गठन कर सघन पेट्रोलिंग शुरू की गई है। वन अधिकारियों के मुताबिक ग्वालियर डिवीजन में वन्यजीव तो बहुत है पर हिंसक जानवरों की कहीं से कोई खबर नहीं है और ना ही शिकार जैसी सूचना है। फिर भी ऐहतियात के रूप में संभावित क्षेत्रों में उनकी सुरक्षा के लिये सघन पेट्रोलिंग शुरू कर दी है। यह गस्ती 31 जनवरी तक हैं।

डीएफओ डा. अंकित पाण्डेय ने इस बारे में ग्वालियर की सभी छह रेंजों के पत्र जारी करते हुये कहा है कि इलाके में काम्बिंग के दौरान कोई भी जंगली जानवर या उसके पदचिन्ह दिखे तो उसकी जानकारी तत्काल दी जायें तथा जहां भी शिकार जैसे संदिग्ध मामले दिखे तो दोषियों पर कड़ी कार्यवाही की जाये। अमूमन इन दिनों शिकार की घटनायें बहुतायात हो सकती है। ग्वालियर वन मण्डल स्थित सोनचिरैया अभ्यारण्य की दोनों रेंज तिघरा और घाटीगांव में 24 घंटे गस्त किये जाने के निर्देश है। तीन शिफ्टों में वनकर्मियों की चार-चार सदस्यों वाली टीमों का गठन किया गया है। वन कर्मियों की टीमों द्वारा दिन के साथ साथ रात में भी जंगल जाकर वन्यजीवों की सूचनायें जुटाई जा रही है। स्थानीय स्तर पर ग्रामीणों को रात्रि में अकेले जंगल या फिर आसपास क्षेत्र में जाने की मनाही है। इस दौरान कोई जानवर दिखाई देता है तो इसकी सूचना वन विभाग को दी जाये। उल्लेखनीय है कि ग्वालियर में जंगल में हिंसक जानवरों में केवल तेंदुए है। इनकी संख्या 4 दर्जन के आसपास होगी। वहीं मोहना के जंगल में भालू तो घाटीगांव में हायना की भी सुगबुगाहट हैं।

जाल, खटका व करेंट पर फोकस

ठंड के दिनों में शिकारी सक्रिय कुछ ज्यादा हो जाते है और कभी कभी किसानों के द्वारा अपनी फसल को बचाने के लिये कुछ उपाय किये जाते है। जैसे कि तार फेंसिंग, बिजली का झटकेदार करेंट, जाली या फिर अन्य उपाय जिसमें फंसने से अमूमन वन्यजीव की मौत हो जाया करती है। ऐसे मामलों को भी वाइल्ड लाइफ ने गंभीरता से लिया है तथा डिवीजन स्त्र पर वन्यजीवों की सुरक्षा के लिये आगामी 31 जनवरी तक आपरेशन जारी रहेगा। जहां भी जंगल के आसपास बसाहट देखने को मिलती है और विशेष समाज के लोगों पर भी नजर बनाये रखने के निर्देश है, क्योंकि संभावित क्षेत्रों में शिकारी वन्यजीवों के लिये फंदा, कड़क्का या जाल डालने का काम करते है।

इनका कहना है

अभियान के तौर पर विशेष सघन गस्ती शुरू कराई गई है। यह दो महीने तक चलने वाली विशेष कार्यवाही है। जिसे वाइल्ड लाइफ के निर्देशन पर किया जा रहा है। शिकार व शिकारियों पर गंभीरता से नजर रखी जायेगी।

डा. अंकित पाण्डेय
डीएफओ, ग्वालियर वन मण्डल

सेवानिवृत्त अधिकारियों का सम्मान समारोह आयोजित

ग्वालियर। कमल विहार सखवार समाज धर्मशाला हरिखेड़ा मुरार में सेवानिवृत्त अधिकारी कर्मचारियों का सम्मान समारोह अयोजित किया गया। समारोह की जनसम्पर्क विभाग के सेवानिवृत्त अपर संचालक जीएस मौर्य ने कहा कि सेवानिवृत्त अधिकारियों को सेवा के दौरान प्राप्त अनुभवो का लाभ समाज को देना चाहिये। उन्होंने कहा कि समाज के लोगों को अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित कर एक नई दिशा दे एवं समाज के विकास में सहभागी बने।

सम्मान समारोह में सेवानिवृत्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश आरपी कतरोलिया, सेवानिवृत्त मुख्य

चिकित्सा अधिकारी डॉ. भगवान सिंह जम्होरिया, सेवानिवृत्त उपसंचालक कृषि रामगोपाल आरोलिया तथा ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के से.नि. एसडीओ रामौतार सिंह किरार का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त सभी अधिकारियों ने अपने सेवाकाल के अनुभव साझा किये। सामरोह में जलसंसाधन विभाग के सेवानिवृत्त अधीक्षण यंत्री बीएल दादोरिया, सेवानिवृत्त प्राचार्य एमएल सिलावट, डॉ. रिंकू सिलावट, आर डी किरार, रामसेवक दंडोतिया, जसवन्त सिंह दंडोतिया, जगन्नाथ सिंह, एनएल कनेरिया, श्रीकृष्ण गुर्जर, राम शंकर सिंह ने भी अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिये । कार्यक्रम का संचालन डॉ. शिव शिंह जम्होरिया ने किया। धर्मशाला के शेष निर्माण कार्य के लिए डॉ. भगवान सिंह जम्होरिया ने 51 हजार एवं रामगोल आरोलिया ने 51 हजार रुपए देने की घोषणा की। इसके अलावा डॉ. आशाराम द्वारा निर्माणधीन धर्मशाला में 3 जोड़ी किवाड़, 2 खिड़की व 3 वेंटीलेटर लगवाने की घोषणा की।

निगम आयुक्त को निरीक्षण में मिली गंदगी, वार्ड अधिकारी को किया निलंबित

ग्वालियर। निगम आयुक्त अमन वैष्णव ने सोमवार को वार्ड 18 की पार्षद श्रीमती रेखा त्रिपाठी के साथ वार्ड का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान वार्ड में गंदगी मिलने पर वार्ड हेल्थ ऑफीसर को निलंबित और एएचओ को कारण बताओं नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

निगम आयुक्त वैष्णव ने क्षेत्रीय पार्षद श्रीमती त्रिपाठी के साथ वार्ड 18 की विभिन्न कॉलोनियों का निरीक्षण किया। जिसमें सबसे पहले निरीक्षण के दौरान शताब्दीपुरम में सड़क की समस्या पर संबंधित अधिकारियों को उच्च गुणवत्ता वाली सीसी रोड का प्रस्ताव बनाने के निर्देश दिए। इसके साथ ही डीडी नगर गेट नंबर 2 पर यातायात सुधार के लिए एमपीआरडीसी को पत्र लिखने के निर्देश दिए। साथ ही निरीक्षण के दौरान पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रतिमा स्थल का सौंदर्यीकरण करने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त ने निरीक्षण के

दौरान आदित्यपुरम की सड़कों को देखकर नाराजगी व्यक्त करते हुए पेंच रिपेयरिंग वर्क करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए तथा भवन निर्माण के दौरान सीएंडडी वेस्ट फैलाने वालों पर हैवी जुर्माना लगाने और सड़क पर पड़े सामान को जप्त करने के निर्देश दिए। निगम आयुक्त के निरक्षण उपरांत सफाई अमले ने वार्ड 18 में विशेष सफाई अभियान चलाकर फुटपाथ, सडक, पार्कों आदि जगह पर सफाई कराई गई। निरीक्षण के दौरान अपर आयुक्त विजय राज, मुनीश सिंह सिकरवार, उपायुक्त अमर सत्य गुप्ता, अधीक्षण यंत्री जेपी पारा, उपायुक्त डॉ. अतिबल सिंह उपस्थित थे।

हजार बिस्तर अस्पताल की धर्मशाला को 15 दिन में शुरू करायें: कलेक्टर

ग्वालियर। हजार बिस्तर अस्पताल से जुड़ी धर्मशाला को शुरू करने की कार्रवाई अगले 15 दिन के भीतर पूर्ण करें, जिससे यहाँ इलाज के लिए आने वाले मरीजों व उनके परिजनों को आवास की सुविधा मिल सके। अस्पताल परिसर में इंडियन कॉफी हाउस के लिये जगह दी जाए, जिससे मरीजों व चिकित्सकीय स्टाफ सहित अन्य आगुंतकों को एक अच्छी कैन्टीन की सुविधा मिल सके। हजार बिस्तर सहित जेएएच समूह की सभी इकाईयों के मरीजों की सुविधा के लिये 80 नए स्ट्रेचर एवं 25 व्हीलचेयर की व्यवस्था भी जल्द से जल्द की जाए। यह निर्देश कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान की मौजूदगी एवं संचालक नर्सिंग सह चिकित्सा डॉ. जितेन्द्र शुक्ला की अध्यक्षता में आयोजित हुई गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय की कार्यकारिणी समिति की 61वी बैठक में दिए गए।

सोमवार को मेडीकल कॉलेज के सभागार में आयोजित हुई कार्यकारिणी

समिति की बैठक में अस्पताल प्रबंधन को निर्देश दिए गए कि हजार बिस्तर सहित जेएएच समूह परिसर में दो से तीन बैंकों के नए एटीएम स्थापित कराए जाएं। विभिन्न बैंकों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर एटीएम लगवाएँ। बैठक में मेडीकल कॉलेज के अधीष्ठाता डॉ. आर के एस धाकड़ एवं संयुक्त संचालक व अधीक्षक जेएएच समूह डॉ. सुधीर सक्सेना मौजूद थे। बैठक में 70 वर्ष से अधिक आयु के मरीजों के मोबाइल नम्बर व आधार अपडेट और आभा क्यू आर स्कैन में आ रही कठिनाई को दूर करने के साथ-साथ इस काम में तेजी लाने के लिये 8 आभा मित्र बढ़ाने का निर्णय भी लिया गया। बैठक में बताया गया कि जयारोग्य चिकित्सालय समूह के हजार बिस्तर अस्पताल परिसर में भी आधार केन्द्र खोला जाएगय, जिससे मरीजों को परेशानी न हो। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने बैठक में सलाह दी कि मरीजों की सुविधाओं को ध्यान में रखकर ऐसे मशीन व उपकरण जो कॉर्पोरेशन से नहीं खरीदे जा सकते हैं, इसके लिये एक वर्ष के रेट कांट्रेक्ट किए जाएं।

हजार बिस्तर अस्पताल का निरीक्षण भी किया

कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने सोमवार को हजार बिस्तर अस्पताल के विभिन्न वार्डों सहित सम्पूर्ण परिसर का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने खासतौर पर मरीजों को मिल रहीं सुविधायें, स्ट्रेचर व्यवस्था, दवा वितरण, पेयजल व शौचालय व्यवस्था सहित अन्य इंतजामों का जायजा लिया एवं सभी व्यवस्थाओं को और बेहतर करने के निर्देश अस्पताल प्रबंधन को दिए।

मंदिर के ताले चटकाकर दान पेटी व घंटे ले गए चोर

ग्वालियर। आस्था पर चोट करते हुए चोरों ने भगवान शंकर के मंदिर के ताले चटकाकर दान पेटी और दो दस किलो वजनी पीतल के घंटे चोरी कर ले गए। जनकगंज थाना क्षेत्र के शंकर कॉलोनी में भगवान शंकर का मंदिर है। मंदिर पर पूजा पाठ की जिम्मेदारी मुरारी लाल तिवारी पुत्र दामोदर प्रसाद तिवारी पर है। बीती रात मंदिर की पूजा अर्चना करने के बाद वह मंदिर बंद कर घर चले गए थे और सुबह जब मंदिर पहुंचे तो मंदिर के ताले टूटे पड़े थे और सामान बिखरा पड़ा था। उनकी नजर जब दान पेटी और मंदिर पर लगे घंटों पर गई तो दान पेटी गायब थी और मामले का पता चलते ही अन्य श्रद्धालु वहां पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच के बाद मामला दर्ज कर लिया। पुलिस ने जब आस-पास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले तो सीसीटीवी में तीन चोर वारदात को अंजाम देते हुए कैद हुए हैं। पुलिस अब फुटेज के आधार पर चोरों की तलाश में लग गई है।

जीवाजी क्लब में वॉकिंग ट्रैक का हुआ भूमिपूजन

ग्वालियर। जीवाजी क्लब में वॉकिंग ट्रैक का सोमवार को भूमिपूजन किया गया। भूमिपूजन के अवसर पर जीवाजी क्ल के अध्यक्ष राजेन्द्र सेठ, मानसेवी सचिव संजय वर्मा, उपाध्यक्ष अमित गुप्त, कोषाध्यक्ष संजय नीखरा, संयुक्त सचिव केतन अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्य आशीष दुबे, मधुर मित्तल, अमर राठौर, दुर्गेश चौरसिया, गगन भल्ला, जीतेन्द्र गुप्ता, अनुराग शिवहरे, सुरेन्द्र अग्रवाल उपस्थित थे। क्लब में खेल गतिविधियो को बढावा देने के लिए वॉकिंग ट्रैक के निर्माण के लिए बंसत शर्मा, संदीप जैन, संजय मित्तल को वाकिंग ट्रैक का प्रभारी बनाया गया जिनकी देखरेख में आगामी एक माह में वॉकिंग ट्रैक का निर्माण पूर्ण किया जायेगा।

ब्लाइंड क्रिकेट टूर्नामेंट में मध्यप्रदेश फाइनल में पहुंचा

ग्वालियर। अंतर राज्य ब्लाइंड क्रिकेट टूर्नामेंट में सोमवार को एलएनआईपीई क्रिकेट ग्राउंड पर दो मुकाबले खेले गए। पहले मुकाबले में हरियाणा ने छत्तीसगढ़ को हराकर लगातार अपनी तीसरी जीत दर्ज की। वहीं दूसरे मुकाबले में मध्यप्रदेश ने विधर्व को हराकर अपना स्थान फाइनल में पक्का किया।

भाजपा पार्षद प्रत्याशी पलैया ने किया कई क्षेत्रों में सघन जनसंपर्क

ग्वालियर । वार्ड 39 में पार्षद उपचुनाव में भाजपा पार्षद प्रत्याशी श्रीमती अंजलि पलैया ने सोमवार को सुबह ढोलीबुआ का पुल कार्यालय से प्रारंभ कर पाटनकर बाजार, महाराज बाड़ा होते हुए नेहरू पेट्रोल पंप, कंबल केंद्र पर समाप्त हुआ। वही शाम को अपना जनसंपर्क चुनाव कार्यालय से प्रारंभ कर नगर निगम वर्कशॉप विनायक कोचिंग, मस्जिद वाली गली होते हुए बजरिया चुनाव कार्यालय पर समाप्त हुआ। इस दौरान पार्टी प्रत्याशी श्रीमती अंजलि पलैया ने आमजनों से भाजपा के पक्ष में मतदान करने की अपील की।

इस अवसर पर भाजपा पार्षद प्रत्याशी श्रीमती अंजलि पलैया ने मतदाताओं से कहा कि एक बार आप सभी लोग मुझे अपना आशीर्वाद दें, मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि आपके वार्ड की जनता को कभी भी मुझसे शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। आपकी समस्या मेरी समस्या होगी। 24 घंटे मैं आपके काम के लिए हमेशा उपलब्ध रहूंगी। मेरे पार्षद बनते ही आपके वार्ड का स्मार्ट वार्ड बनाना मेरी जिम्मेदारी रहेगी। उन्होंने कहा पार्षद उपचुनाव मतदान में अधिक से अधिक माताएं और बहने घर से निकले। जनसंपर्क के दौरान चुनाव प्रभारी अभय चौधरी ने कहा कि भाजपा के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान हो सके इसके लिए तन, मन, धन से समर्पित भाजपा कार्यकर्ता प्रचार-प्रसार करने में किसी भी तरह कि कोरकसर नही छोड़े।

PUBLIC NOTICE

मैं, मोहक अग्रवाल चार्टर्ड अकाउंटेंट सदस्यता संख्या-467093, फर्म, अग्रवाल रोनक एंड एसोसिएट्स FRN - 028323C को खरीदने का इच्छुक हूं, जिसका कार्यालय श्याम विला, अरगड़े स्ट्रीट, अपोजिट PNB, नया बाजार, लश्कर, ग्वालियर, म.प्र. 474007. यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो 7 (सात) दिन में मुझसे संपर्क करें- मो. नं. 8989002591

संपादकीय

गरीब तबके का मार रहे हक

केरल के बारे में सामान्य धारणा यही है कि वहां तंत्र के स्तर पर भ्रष्टाचार के उदाहरण कम मिलते हैं और वहां का समाज भी अपेक्षया ईमानदार है। अगर करोड़ों की कीमत वाली बीएमडब्लू कार और घर में वातानुकूलित यंत्रों का इस्तेमाल करने वाले भी गरीब और वंचित तबकों के लिए निर्धारित सहायता का लाभ उठाने से नहीं हिचकते, तो इससे शर्मनाक और क्या हो सकता है। यह न केवल प्रशासनिक ढांचे में घुले भ्रष्टाचार का उदाहरण है, बल्कि इससे यह भी पता चलता है कि एक समुदाय में समृद्ध या सुविधा-संपन्न माने जाने वाले लोग बहुत कम पैसों के लिए नैतिकता को ताक पर रख सकते हैं, कमजोर तबकों का हक चुराने में कोई शर्म महसूस नहीं करते। गौरतलब है कि केरल में वित्त आयोग ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लाभार्थियों के संबंध में एक समीक्षा की, जिसमें यह खुलासा हुआ कि बीएमडब्लू कारों के मालिक और वातानुकूलित मकानों में रहने वाले लोग भी इस पेंशन का लाभ उठा रहे हैं। राज्य में राजपत्रित अधिकारियों और कालेज के प्रोफेसरों समेत करीब डेढ़ हजार सरकारी कर्मचारियों के फर्जी तरीके से सामाजिक सुरक्षा पेंशन हासिल करने की खबरों से लोगों में स्वाभाविक नाराजगी है।

निश्चित रूप से यह गलत तरीके से लाभ उठाने वालों के साथ राज्य के प्रशासनिक तंत्र के कुछ अधिकारियों और कर्मचारियों की मिलीभगत का नतीजा है। मगर सवाल है कि यह घोटाला कितने समय से और किसके संरक्षण में चलता रहा! केरल सरकार ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना गरीब तबकों के लिए शुरू की थी। इसके तहत बुजुर्ग, विधवाएं, दिव्यांग और गरीबी रेखा से नीचे के लोगों को हर महीने सोलह सौ रुपए दिए जाते हैं। मगर भ्रष्ट अधिकारियों के साथ मिलीभगत कर कुछ समृद्ध लोगों ने समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े गरीबों का हक चुराने में कोई संकोच नहीं किया। दरअसल, केरल के बारे में सामान्य धारणा यही है कि वहां तंत्र के स्तर पर भ्रष्टाचार के उदाहरण कम मिलते हैं और वहां का समाज भी अपेक्षया ईमानदार है। यह एक आम तस्वीर हो सकती है, मगर घोटाले का ताजा मामला यही दर्शाता है कि राज्य के प्रशासन तंत्र में भ्रष्टाचार में लिप्त या उसकी अनदेखी करने वाले लोग भी इतना प्रभाव रखते हैं कि करीब डेढ़ हजार लोग अनुचित और अवैध तरीके से वास्तविक जरूरतमंदों की हकमारी कर रहे थे।

मनुष्येतर अन्य जीवों को भी वाणी तो किसी न किसी रूप में मिलती ही है, पर मनुष्यों ने जिस रूप स्वरूप में वाणी द्वारा भाषाओं और संगीत को अपने जीवन को अभिव्यक्त करने वाले साधन के रूप में विस्तार दिया, यह बिंदु मानव सभ्यता के विकास और विस्तार का मूल है। मनुष्यों द्वारा अपने मुख से निकली ध्वनि के माध्यम से वाणी को विभिन्न भाषाओं में विकसित करना पृथ्वी के मनुष्यों का सबसे बड़ा सामूहिक कृतित्व, क्षमता या पराक्रम माना जा सकता है। वाणी, बुद्धि और विवेक के साथ ही सुनने की क्षमता अगर मनुष्य के पास न हो, तो मनुष्य बोल ही नहीं पाता। हालांकि यह क्षमता भी किसी में सामान्य, तो कहीं अलग-अलग तरीके से अमूमन सभी जीवों में होती है। वाणी होते हुए भी मनुष्य बोलना न चाहे या मौन रहना चाहे तो यह भी मनुष्य की अपनी प्राकृतिक शक्ति है। यही बात या ध्वनि सुनने को लेकर भी है।

मानव जीवन में ज्ञानेंद्रियों की यात्रा भाषाओं से ही समूचे ज्ञान का हुआ उदय

प्रकृति प्रदत्त ज्ञानेंद्रियों और मनुष्य की सृजनात्मक और विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों की निरंतर जुगलबंदी ने आज की दुनिया को एक ऐसे मुकाम पर पहुंचा दिया है कि जहां तक पहुंच कर हम समूची सभ्यता की सृजनात्मक शक्ति बढ़ा और नष्ट-भ्रष्ट भी कर सकते हैं। मनुष्यों को जन्म के साथ ही प्राकृतिक रूप से वाणी मिलती है। मनुष्येतर अन्य जीवों को भी वाणी तो किसी न किसी रूप में मिलती ही है, पर मनुष्यों ने जिस रूप स्वरूप में वाणी द्वारा भाषाओं और संगीत को अपने जीवन को अभिव्यक्त करने वाले साधन के रूप में विस्तार दिया, यह बिंदु मानव सभ्यता के विकास और विस्तार का मूल है। मनुष्यों द्वारा अपने मुख से निकली ध्वनि के माध्यम से वाणी को विभिन्न भाषाओं में विकसित करना पृथ्वी के मनुष्यों का सबसे बड़ा सामूहिक कृतित्व, क्षमता या पराक्रम माना जा सकता है। वाणी, बुद्धि और विवेक के साथ ही सुनने की क्षमता अगर मनुष्य के पास न हो, तो मनुष्य बोल ही नहीं पाता। हालांकि यह क्षमता भी किसी में सामान्य, तो कहीं अलग-अलग तरीके से अमूमन सभी जीवों में होती है। वाणी होते हुए भी मनुष्य बोलना न चाहे या मौन रहना चाहे तो यह भी मनुष्य की अपनी प्राकृतिक शक्ति है। यही बात या ध्वनि सुनने को लेकर भी है। श्रवणेंद्रिय सुनने के लिए है, पर सुनना न सुनना यह मनुष्य की इच्छा पर है। कई बार हम कुछ सुन तो रहे होते हैं, मगर उसकी ग्राहता पर हमारा ध्यान नहीं होता, इसलिए वह न सुनने के बराबर हो जाता है। आंखें देखने के लिए हैं, जिसे हम दृष्टि की संज्ञा देते हैं, पर इस देखने की क्षमता से अलग मनुष्य के पास एक अंतर्दृष्टि भी होती है, जिसे मन की आंखों से देखा, सोचा या प्रत्यक्षीकरण किया जा सकता है। अंतर्दृष्टि के लिए न तो प्रकाश की जरूरत होती है, न आंखों की, केवल सोच-समझ और कल्पना शक्ति से निराकार रूप से सारा कुछ सोचा, समझा और मन ही मन प्रत्यक्षीकरण किया जाता है। साकार चीजें देखने के लिए इंद्रियों की या ज्ञानेंद्रियों की क्रियाशीलता जरूरी है। पर निराकार कल्पना मन और बुद्धि का खेल है। प्रकृति प्रदत्त ज्ञानेंद्रियों और मनुष्य की सृजनात्मक और विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों की निरंतर जुगलबंदी ने आज की दुनिया को एक ऐसे मुकाम पर पहुंचा दिया है कि जहां तक पहुंच कर हम समूची सभ्यता की सृजनात्मक शक्ति बढ़ा और नष्ट-भ्रष्ट भी कर सकते हैं। अब वापस फिर प्रागैतिहासिक सभ्यता में कोई एक व्यक्ति या समूचा मानव जगत भी नहीं पहुंच सकता। फिर भी आदिम से लेकर आज तक की कई सभ्यताएं एक साथ इस पृथ्वी पर कहीं न कहीं अपने मूल अस्तित्व को बचाए रखने का अंतहीन संघर्ष करती दिखाई पड़ सकती है। मनुष्य कृत सभ्यताओं की समूची कहानी मनुष्य के सोच, विचार और कृतित्व का कमाल है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक और भविष्य में भी मनुष्य ने अपने जीवन में निरंतर बदलाव करते रहने की दिशा में बढ़ते रहकर सृजनात्मक प्रवृत्तियों को अपने जीवन का अनिवार्य अंग बनाया है, जो आज के और भविष्य के मनुष्य के सामने एक तरह से नित नई चुनौतियों की तरह आ खड़ा हुआ है। पर मनुष्य को सृजनात्मक और विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों, दोनों को अपनाने में शायद एक अलग तरह का आनंद आता है। निरंतर चुनौतियां सामने न हों तो मानव सभ्यता को आगे बढ़ने का अवसर ही न मिले। यह सिद्धांत भी सामान्य रूप से माना जा सकता है। मनुष्य की वाणी मूल रूप से ध्वनि के रूप में तो आमतौर पर एक समान ही प्रतीत होती है, पर किस समय किस रूप-स्वरूप और भाव के साथ वाणी का प्रयोग हुआ है, यह वाणी का प्रयोग करने वाले और वाणी को सुनने वाले मनुष्य के मध्य वाणी के प्रत्यक्षीकरण को निर्धारित करता है। भाषा से अपरिचित अबोध बालक अपनी माता या अपने पिता या अन्य निकटवर्ती संबंधियों के भाव और आशय को समझने की प्राकृतिक क्षमता रखता है। यह समूचे मनुष्य जीवन या सभ्यता की अनोखी ज्ञान क्षमता है। तो क्या दृष्टि से मिलने वाले अबोध बालक के ज्ञान और समझ की क्षमताओं के विकास का मूल मनुष्य की देखने-सुनने और समझने की क्षमताओं या प्रत्यक्षीकरण से प्रारंभ होती है। यह भी हमारे सोच-समझ का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। मानव सभ्यता में भाषाओं से ही समूची ज्ञान-यात्रा का उदय हुआ और साहित्य संस्कृति तथा सृजनात्मक सभ्यता के अंतहीन आयामों का रूप-स्वरूप मानव सभ्यता के स्थायी भाव बने। पर भाषा का ध्वनि स्वरूप और लिपि स्वरूप भी मानवीय सभ्यता का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। लिपि से जो ज्ञान-यात्रा प्रारंभ हुई, उसने समाज को दो रूप और स्वरूपों में विभाजित कर दिया। पढ़े-लिखे और बिना पढ़े-लिखे। बिना पढ़े-लिखे मनुष्य भाषा के ध्वनि-स्वरूप को तो अच्छे से समझते, जानते और बोलते हैं, पर लिपि स्वरूप को नहीं जानते या पढ़ पाते। इस तरह ज्ञान की इस परंपरा में मानव समाज में फिर से एक भेद का उदय हुआ। पढ़े-लिखे और बिना पढ़े-लिखे या निरक्षर मनुष्य। ज्ञान मनुष्य समाज को निश्चित ही विकसित करने में मदद करता है, पर अज्ञात और अज्ञान भी मनुष्य समाज को और अधिक खोजने की दिशा में प्रेरित करता है। इसे प्रकारांतर से ज्ञान का हिस्सा माना जाना चाहिए कि व्यक्ति के भीतर इतना विवेक है कि वह कुछ नया खोजने की ओर प्रवृत्त होता है। ज्ञान, अज्ञान और अज्ञात- तीनों को ही समूची मानवीय सभ्यता की मूल आधारभूमि की तरह से ही समझा, सोचा और माना जा सकता है। मानव सभ्यता ज्ञानेंद्रियों और मनुष्य निर्मित अंतहीन विचारों की अनोखी शृंखला हैं, जो साकार और निराकार जगत की चेतना से सदियों से मानव सभ्यता की तरंगों को आगे भी बढ़ा रहा है और कालक्रमानुसार लुप्त भी कर रहा है।

भारत के लिए औपनिवेशिक गुलामी से मुक्ति जरूरी

अंग्रेजों ने भारतीयों में यह भावना विकसित की कि हम सभ्यता ज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में पश्चिम से कमतर हैं। यहां तक कहा गया कि भारतीयों को सभ्य बनाना अंग्रेजों का अतिरिक्त कर्तव्य है। यह मानसिक गुलामी हमारे विकास में बाधा बन रही है। भारतीय परंपराओं संस्कारों रीति रिवाजों कौशल-विकास परंपरा ग्रामीण अर्थव्यवस्था आदि को आधुनिकता के नाम पर त्यागा जा रहा है। यद्यपि हमने 15 अगस्त, 1947 को तत्कालीन औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की, किंतु अंग्रेजों की लगभग 200 वर्षों की दासता का दुष्प्रभाव हमारी संस्थाओं, व्यवस्थाओं, राजनीतिक-सामाजिक प्रतीकों एवं जीवनशैली में विद्यमान है। औपनिवेशिक प्रवृत्ति एवं परंपराओं, हमारी शासन व्यवस्था, भाषा, वास्तुकला एवं जीवन के अन्यान्य क्षेत्रों में अब भी मौजूद हैं। तत्कालीन भौगोलिक परतंत्रता अब मानसिक और सांस्कृतिक गुलामी में परिवर्तित हो रही है। वर्तमान परिदृश्य में जब भारत एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है, यह आवश्यक हो जाता है कि हम औपनिवेशिक मानसिकता एवं उसके प्रतीकों से मुक्त हों। आज विश्वभर के चिंतक इस बात से सहमत हैं कि गुलामी केवल शारीरिक रूप से किसी देश पर अधिकार जमाने तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह उस राष्ट्र के जीवन दर्शन एवं मूल्यों को भी प्रभावित करती है। अंग्रेजों ने भारत पर शासन करते हुए सिर्फ भौगोलिक एवं आर्थिक शोषण ही नहीं किया, वरन सामाजिकता, परंपरा, इतिहास और सांस्कृतिक अस्मिता को भी विकृत करने का दुष्प्रयास किया। परिणामस्वरूप ऐसी मानसिकता का विकास हुआ जिसमें भारतीय नागरिक 'स्व' के अस्तित्व को भूलकर पश्चिमी सभ्यतागत विमर्श के अनुगामी बन बैठे। जैसे कि भारत में आज भी अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व है। अंग्रेजी के मुकाबले अन्य भारतीय भाषाओं को हीनता की दृष्टि से देखा जाता है। उच्च शिक्षा, न्याय प्रणाली एवं प्रशासनिक कार्यों में अंग्रेजी का ही बोलबाला है। भारतीय भाषाओं का व्यवहार करने वालों को कमतर आंका जाता है एवं अंग्रेजी बोलने वालों को अधिक योग्य माना जाता है। कई माता-पिता इस बात पर गर्व करते हैं कि हमारा बेटा जिस स्कूल में पढ़ता है वहां एक भी शब्द हिंदी का बोलने नहीं दिया जाता। युवा पीढ़ी न तो अपनी मातृभाषा में लिखने-पढ़ने में सक्षम है और न ही भारतीय साहित्य और ग्रंथों को समझने में। ऐसी स्थिति ने भारतीय ज्ञान परंपरा को संकट में डाल दिया है। अंग्रेजी से हमें परहेज नहीं होना चाहिए, परंतु उसे अपनी मातृभाषा से ज्यादा महत्व देना ठीक वैसे है जैसे अपनी मां के स्थान पर दूसरे की मां को अधिक श्रेष्ठ मानना। आज संपूर्ण जीवनशैली में पश्चिमी बातों का अंधानुकरण करना एक 'स्टेटस सिंबल' सा बन गया है। परंपरागत व्यंजनों के प्रति हमारी रुचि कम हो रही है एवं पाश्चात्य व्यंजन हमारी थाली की शोभा बढ़ा रहे हैं। आज हम जो फादर्स-मदर्स-ब्रदर्स-सिस्टर्स-वैलेंटाइन डे आदि मनाते हैं, यह तो हमारी संस्कृति का हिस्सा नहीं, अपितु पाश्चात्य संस्कृति की भोंडी नकल हैं। हमारे लिए तो जीवन का प्रत्येक क्षण इन रिश्तों में आत्मीयता हेतु समर्पित था। हम अपनी प्रकृति-प्रेमी जीवनशैली से विरक्त होकर प्रकृति विरोधी पथ पर अग्रसर हो गए हैं। परिणामतः जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम झेलने को विवश हैं। संपूर्ण व्यक्तित्व विकास सुनिश्चित करने वाली गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के बजाय भारतीय शिक्षा प्रणाली आज भी मैकाले द्वारा स्थापित ढांचे पर आधारित है, जिसका उद्देश्य भारतीयों को अंग्रेजी शासन के लिए 'क्लर्क' तैयार करना था। हमारी शिक्षा व्यवस्था आज पश्चिमी ज्ञान को श्रेय देती है एवं भारतीय ग्रंथों, विज्ञान और परंपराओं को हाशिये पर धकेल रही है। इस हेतु हमें भारतीय ज्ञान प्रणाली का नए सिरे से अध्ययन एवं वर्तमान में उनकी उपादेयता पर सघनता से कार्य करना होगा। आज भी भारतीय न्याय प्रणाली एवं प्रशासनिक व्यवस्था ब्रिटिश माडल पर आधारित है। न्यायिक प्रक्रिया अंग्रेजी में होती है, जो आम जनमानस की समझ से परे है। इस दिशा में तेजी से परिवर्तन की आवश्यकता है। भला हो मोदी सरकार का जिसने पहली बार भारतीय न्याय संहिता लागू की। अंग्रेजों ने भारतीयों में यह भावना विकसित की कि हम सभ्यता, ज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में पश्चिम से कमतर हैं। यहां तक कहा गया कि भारतीयों को सभ्य बनाना अंग्रेजों का अतिरिक्त कर्तव्य है। यह मानसिक गुलामी हमारे विकास में बाधा बन रही है।

भारतीय परंपराओं, संस्कारों, रीति रिवाजों, कौशल-विकास परंपरा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था आदि को आधुनिकता के नाम पर त्यागा जा रहा है। युवा पीढ़ी अपनी जड़ों और संस्कृति से अनभिज्ञ होती जा रही है। हम अपने संसाधनों और प्रतिभा का संपूर्ण उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। विदेशी वस्तुओं, तकनीक और सेवाओं पर अत्यधिक निर्भरता आत्मनिर्भर भारत के मार्ग में अवरोध है।

ऐसे में यक्ष प्रश्न है कि मानसिक गुलामी से मुक्ति कैसे पाई जाए? औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त होने के लिए देश को व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक पुनर्जागरण की आवश्यकता है। यह केवल सरकारी नीतियों तक सीमित नहीं हो सकता, अपितु समाज के प्रत्येक वर्ग को मनसा, वाचा, कर्मणा इस महायज्ञ में आहुति डालनी होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निहित सुधारों को संपूर्णता से लागू करके ही शिक्षा में भारतीय संस्कृति, परंपराओं, ज्ञान भंडार एवं गौरवशाली इतिहास को प्राथमिकता दी जा सकती है। आवश्यकता है कि हम अपनी जड़ों की ओर लौटें एवं उन्हें सींचें। अपनी संस्कृति एवं जीवंत परंपरा पर गर्व करें और औपनिवेशिक मानसिकता को त्यागकर आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी, विकसित एवं 'स्व' के तंत्र वाले भारत का निर्माण करें। मानसिक गुलामी से मुक्त होकर ही हम वास्तविक अर्थों में स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बन पाएंगे। जब तक भारतीय समाज इस बीमारी से मुक्त नहीं होगा, हमारी स्वतंत्रता अधूरी रहेगी। और इस लक्ष्य को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ कदम से कदम मिलाकर 2047 तक प्राप्त कर लेना होगा।

(लेखक पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा के कुलपति हैं।)

हालांकि जुलाई-सितंबर की तिमाही में अक्सर विकास दर सुस्त देखी जाती है, मगर आर्थिक संगठनों और खुद सरकार ने इसके करीब सात फीसद के आसपास रहने का अनुमान लगाया था। अब कहा जा रहा है कि अगली छमाही में विकास दर अच्छी रहेगी। अक्तूबर-दिसंबर की तिमाही चूंकि त्योहारी मौसम की होती है, इसलिए इसमें वृद्धि देखी ही जाती है। मगर ताजा आंकड़े सकल घरेलू उत्पाद को लेकर चिंता पैदा करते हैं। दूसरी तिमाही में सबसे बुरी गत विनिर्माण और निर्माण क्षेत्र की रही। विनिर्माण क्षेत्र की विकास दर 2.2 फीसद दर्ज हुई, जो पिछले वर्ष की समान अवधि में 14.3 फीसद थी। निर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर पिछले वर्ष की समान अवधि की 13.6 फीसद से घट कर 7.7 पर पहुंच गई।

त्योहारी मौसम के बाद भी अर्थव्यवस्था की रफ्तार सुस्त, आंकड़े निराशाजनक

अर्थव्यवस्था में मजबूती के लिए उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ अन्य पहलुओं पर भी संतुलन साधने की जरूरत होती है। निर्यात के मामले में लगातार निराशाजनक तस्वीरें आती रही हैं। चीन आदि देशों के साथ हमारा व्यापार घाटा निरंतर बढ़ रहा है। जल्दी ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने के दावों के बीच चालू वित्तवर्ष की दूसरी तिमाही में विकास दर 5.4 फीसद रहने के आंकड़े स्वाभाविक रूप से निराशाजनक हैं। हालांकि जुलाई-सितंबर की तिमाही में अक्सर विकास दर सुस्त देखी जाती है, मगर आर्थिक संगठनों और खुद सरकार ने इसके करीब सात फीसद के आसपास रहने का अनुमान लगाया था। अब कहा जा रहा है कि अगली छमाही में विकास दर अच्छी रहेगी। अक्तूबर-दिसंबर की तिमाही चूंकि त्योहारी मौसम की होती है, इसलिए इसमें वृद्धि देखी ही जाती है। मगर ताजा आंकड़े सकल घरेलू उत्पाद को लेकर चिंता पैदा करते हैं। दूसरी तिमाही में सबसे बुरी गत विनिर्माण और निर्माण क्षेत्र की रही। विनिर्माण क्षेत्र की विकास दर 2.2 फीसद दर्ज हुई, जो पिछले वर्ष की समान अवधि में 14.3 फीसद थी। निर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर पिछले वर्ष की समान अवधि की 13.6 फीसद से घट कर 7.7 पर पहुंच गई। इसी तरह आठ प्रमुख बुनियादी उद्योगों में वृद्धि दर घट कर 3.1 फीसद रह गई, जो कि पिछले वर्ष की समान अवधि में 12.7 फीसद थी। कृषि जैसे कुछ क्षेत्रों में मामूली वृद्धि को छोड़ दें, तो ज्यादातर क्षेत्रों में विकास दर सुस्त ही दर्ज हुई है। इस सुस्ती के पीछे तर्क दिए जा रहे हैं कि रेपो दर ऊंची रहने और महंगाई पर काबू न पाए जा सकने की वजह से उपभोक्ता व्यय घटा है। इसके अलावा राजस्व घाटा कम करने के उद्देश्य से सरकारी व्यय भी कम कर दिया गया है। इसका असर सकल घरेलू उत्पाद पर पड़ा है। मगर फिलहाल इन स्थितियों में सुधार की बहुत संभावना नजर नहीं आती। विनिर्माण क्षेत्र में विकास दर सुस्त रहने का अर्थ है कि बड़े पैमाने पर लोगों के सामने रोजगार का संकट बढ़ा है। यही क्षेत्र सबसे अधिक रोजगार उपलब्ध कराता है। रोजगार और लोगों की कमाई घटने का स्वाभाविक असर उपभोक्ता व्यय पर पड़ता है। लोग केवल जरूरी चीजों की खरीद करते हैं, विलासिता की और टिकाऊ कही जाने वाली वस्तुओं की खरीद कम होने लगती है। स्वाभाविक ही इससे उत्पादन घट जाता है। यह भी एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि पिछले नौ-दस वर्षों में लोगों की मजदूरी और औसत वेतन में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है।

लंबे समय से इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि जब तक लोगों की क्रयशक्ति नहीं बढ़ेगी, तब तक आर्थिक विकास के सारे उपाय तदर्थ ही साबित होंगे। अर्थव्यवस्था में मजबूती के लिए उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ अन्य पहलुओं पर भी संतुलन साधने की जरूरत होती है। निर्यात के मामले में लगातार निराशाजनक तस्वीरें आती रही हैं। चीन आदि देशों के साथ हमारा व्यापार घाटा निरंतर बढ़ रहा है। इसी तरह बेशक जीएसटी संग्रह में बढ़ोतरी के आंकड़े दर्ज हो रहे हों, पर हकीकत में राजकोषीय घाटा बढ़ रहा है। इस पर काबू पाने के लिए सरकारी व्यय में कटौती करनी पड़ रही है। जिस तरह विदेशी मुद्रा भंडार में लगातार कमी आ रही है, उससे जाहिर है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सिकुड़ रहा है। ऐसी स्थिति में विकास परियोजनाओं पर भी बुरा असर पड़ेगा। आर्थिक विकास के ताजा आंकड़े सरकार के लिए चेतावनी हैं कि उसे तदर्थ और अव्यावहारिक उपायों के बजाय बुनियादी कमजोरियों को दूर करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिसमें रोजगार और लोगों की आय में बढ़ोतरी के अवसर पैदा करने होंगे।

इसकी पुष्टि इस सम्मेलन में आतंकवाद, नक्सलवाद, साइबर अपराध, नशीले पदार्थों की तस्करी और खालिस्तान समर्थक समूहों की गतिविधियों के अतिरिक्त आंतरिक सुरक्षा से जुड़े अन्य विषयों पर गहन चर्चा से भी होती है। इस सम्मेलन में तीन दिनों तक विभिन्न विषयों पर हुई चर्चा के निष्कर्षों को अमल में लाने के ठोस उपाय करने से ही आंतरिक सुरक्षा को बल मिलेगा। वर्तमान में आंतरिक सुरक्षा के समक्ष कई मोर्चों पर गंभीर चुनौतियां खड़ी होती हुई दिख रही हैं।

सुरक्षा परिदृश्य पर चर्चा, निष्कर्षों को अमल में लाने के ठोस उपाय

सुरक्षा एजेंसियों को एक ओर साइबर अपराधियों पर लगाम लगानी होगी और दूसरी ओर साइबर सुरक्षा के तंत्र को और अधिक मजबूत भी बनाना होगा क्योंकि साइबर सुरक्षा में सेंधमारी भी एक बड़ी समस्या बन रही है। इस समस्या से निपटना इसलिए कठिन है क्योंकि अक्सर यह सेंधमारी विदेश में बैठे साइबर अपराधियों की ओर से की जाती है। भुवनेश्वर में आयोजित पुलिस महानिदेशकों और महानिरीक्षकों के तीन दिवसीय सम्मेलन में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, गृहमंत्री और प्रधानमंत्री का शामिल होना इस सम्मेलन की महत्ता को रेखांकित करता है। इसकी पुष्टि इस सम्मेलन में आतंकवाद, नक्सलवाद, साइबर अपराध, नशीले पदार्थों की तस्करी और खालिस्तान समर्थक समूहों की गतिविधियों के अतिरिक्त आंतरिक सुरक्षा से जुड़े अन्य विषयों पर गहन चर्चा से भी होती है। इस सम्मेलन में तीन दिनों तक विभिन्न विषयों पर हुई चर्चा के निष्कर्षों को अमल में लाने के ठोस उपाय करने से ही आंतरिक सुरक्षा को बल मिलेगा। वर्तमान में आंतरिक सुरक्षा के समक्ष कई मोर्चों पर गंभीर चुनौतियां खड़ी होती हुई दिख रही हैं। एक ऐसे समय जब भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र के लक्ष्य को पाने के लिए अग्रसर है तब हर स्तर पर कानून एवं व्यवस्था को सुदृढ़ करने पर न केवल जोर दिया जाना चाहिए, बल्कि ऐसे उपाय किए जाने चाहिए जिससे आम लोगों का सुरक्षा परिदृश्य के प्रति भरोसा और अधिक बढ़े। यह अच्छा है कि इस सम्मेलन में साइबर अपराधों पर भी गंभीर चर्चा की गई, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि साइबर अपराध बढ़ते ही चले जा रहे हैं। साइबर अपराधी जिस तरह संगठित होकर काम करने लगे हैं, वह सुरक्षा एजेंसियों के लिए एक गंभीर चुनौती बन गया है। यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि फिलहाल हमारी सुरक्षा एजेंसियां साइबर अपराधियों पर लगाम नहीं लगा पा रही हैं। यह ठीक है कि साइबर अपराधों के प्रति लोगों को भी जागरूक होने की आवश्यकता है, लेकिन इसके साथ ही सुरक्षा एजेंसियों को साइबर अपराधियों के दुस्साहस का दमन भी करना होगा। अभी ऐसा नहीं हो पा रहा है। सुरक्षा एजेंसियों को एक ओर साइबर अपराधियों पर लगाम लगानी होगी और दूसरी ओर साइबर सुरक्षा के तंत्र को और अधिक मजबूत भी बनाना होगा, क्योंकि साइबर सुरक्षा में सेंधमारी भी एक बड़ी समस्या बन रही है। इस समस्या से निपटना इसलिए कठिन है, क्योंकि अक्सर यह सेंधमारी विदेश में बैठे साइबर अपराधियों की ओर से की जाती है। यह उम्मीद की जानी चाहिए कि पुलिस महानिदेशकों और महानिरीक्षकों के सम्मेलन में पाकिस्तान प्रेरित और प्रायोजित आतंकवाद से प्रभावी ढंग से निपटने के जिन उपायों पर चर्चा हुई होगी, उनका असर जम्मू-कश्मीर में देखने को अवश्य मिलेगा। वर्तमान में पाकिस्तान के साथ-साथ बांग्लादेश से भी सतर्क रहने की आवश्यकता है, क्योंकि वहां की स्थितियां आतंकी और जिहादी तत्वों को बल प्रदान करने वाली हैं। निश्चित रूप से पिछले कुछ वर्षों में नक्सलवाद पर एक बड़ी हद तक लगाम लगी है, लेकिन उसे पूरे तौर पर पस्त करने की आवश्यकता है ताकि नक्सली संगठन स्वयं को फिर से संगठित कर सिर न उठा सकें। यह संतोषजनक है कि नए आपराधिक कानूनों पर अमल शुरू हो गया है और इस पर सम्मेलन में चर्चा भी हुई, लेकिन बात तब बनेगी जब आम आदमी को इन कानूनों का सकारात्मक प्रभाव नजर आएगा।

अंडर-19 एशिया कप में भारत ने जापान को हराया, 211 रन से जीते, कप्तान अमान की सेंचुर

नई दिल्ली। भारत ने अंडर-19 एशिया कप में जापान को 211 रन से हरा दिया। शारजाह के मैदान में जापान ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला लिया। टीम इंडिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 6 विकेट पर 339 रन बनाए। यह टूर्नामेंट के मौजूदा सीजन का सबसे बड़ा स्कोर है। इससे पहले 30 नवंबर को यूएई ने जापान के खिलाफ 324 रन का स्कोर बनाया था। जवाब में जापान 50 ओवर में 8 विकेट पर 128 रन ही बना पाई। ह्यूज केली ने सबसे ज्यादा 50 रन बनाए। भारत की ओर से हार्दिक राज, केपी कार्तिकेय और चेतन शर्मा को 2-2 विकेट मिले। भारतीय टीम से कप्तान मोहम्मद अमान ने 116 बॉल पर नाबाद 122 रन की पारी खेली। अमान के अलावा, ओपनर आयुष म्हात्रे ने 29 बॉल पर 54, कार्तिकेय केपी ने 50 बॉल पर 50 रनों की पारियां खेलीं। जापान की ओर से कीफर यामामोटो लेके और ह्यूज केली को 2-2 विकेट मिले।

दोनों देशों की प्लेइंग-11

इंडिया- मोहम्मद अमान (कप्तान), आयुष म्हात्रे, वैभव सूर्यवंशी, आंद्रे सिद्धार्थ, हरवंश सिंह (विकेटकीपर), निखिल कुमार, कार्तिकेय केपी, हार्दिक राज, समर्थ नागराज, युद्धजीत गुहा और चेतन शर्मा।

जापान- कोजी हार्डग्रेव अबे (कप्तान), आदित्य फड़के, निहार परमार, काजुमा काटो-स्टेफोर्ड, चार्ल्स हिंजे, ह्यूज केली, टिमोथी मूर, कीफर यामामोटो लेके, डेनियल पैंकहर्स्ट (विकेटकीपर), आरव तिवारी और मैक्स योनेकावा लिन।

चेतन शर्मा को आखिरी ओवर में 2 विकेट

जापानी पारी के आखिरी ओवर में चेतन शर्मा ने 2 विकेट लिए। ओवर की पहली बॉल पर उन्होंने कीफर यामामोटो लेके को 1 रन पर आयुष म्हात्रे के हाथों कैच आउट कराया।

इसके बाद दूसरी बॉल पर मैक्स योनेकावा लिन को शून्य के स्कोर पर बोल्ड कर दिया। जापान ने 50 ओवर में 8 विकेट खोकर 128 रन बनाए। चार्ल्स हिंजे 68 बॉल पर 35 रन बनाकर नाबाद रहे।

आदित्य फड़के 9 रन पर आउट

46वें ओवर की पांचवीं बॉल पर जापान का छठा विकेट गिरा। यहां आदित्य फड़के 26 बॉल पर 9 रन बनाकर आउट हुए। युद्धजीत की बॉल पर आदित्य ने पॉइंट के ऊपर से शॉट खेलना चाहा, लेकिन टाइम नहीं कर पाए। हार्दिक ने उनका कैच पकड़ा।

वर्ल्ड चेस चैंपियनशिप-गुकेश और लिरेन का छठा मैच बराबर रहा, फाइनल में लगातार तीसरा मुकाबला ड्रॉ

नई दिल्ली। भारतीय ग्रैंड मास्टर डी गुकेश और विश्व चैंपियन डिंग लिरेन के बीच सिंगापुर में खेले जा रही फाइड वर्ल्ड चेस चैंपियनशिप फाइनल का छठा मुकाबला बराबरी पर रहा। दोनों ने लगातार तीसरा ड्रॉ मैच खेला है। इससे पहले चौथा, पांचवां मैच भी बराबरी पर छूटा था। 14 मैचों के फाइनल में अब तक चार मैच ड्रॉ हो चुके हैं।रविवार को खेले गए ड्रॉ मैच के बाद दोनों प्लेयर्स के पास 3-3 अंक हैं। उन्हें चैंपियनशिप जीतने के लिए और 4.5 अंक चाहिए। पहले 7.5 अंक तक पहुंचाने वाला इसे जीत लेगा और वर्ल्ड चैंपियन का टाइटल हासिल कर लेगा।18 साल के गुकेश ने 46 चालों के बाद लिरेन को ड्रॉ के लिए मजबूर किया। 32 साल के लिरेन ने पहली बाजी अपने नाम की थी, जबकि गुकेश तीसरी बाजी को जीतने में सफल रहे थे। मुकाबले के दौरान वर्ल्ड चैंपियन डिंग लिरेन अपनी चाल पर निराशा जाहिर करते हुए। गुकेश ने 46 चालों के बाद लिरेन को ड्रॉ खेलने के लिए मजबूर किया। गुकेश ने 46 चालों के बाद लिरेन को ड्रॉ खेलने के लिए मजबूर किया। मुकाबले के दौरान गुकेश की चाल का इंतजार करते डिंग लिरेन। मुकाबले के दौरान गुकेश की चाल का इंतजार करते डिंग लिरेन। फाइनल स्कोर 3-3 की बराबरी परइस ड्रॉ के बाद गुकेश और लिरेन के बीच का फाइनल स्कोर 3-3 की बराबरी पर है।

इस मुकाबले से दोनों खिलाड़ियों को 0.5-0.5 अंक मिले। बता दें चेस में एक मैच जीतने पर एक अंक मिलते हैं, जबकि ड्रॉ मुकाबले में दोनों खिलाड़ियों को 0.5-0.5 अंक दिए जाते हैं। अब तक दोनों प्लेयर्स एक-एक मुकाबले ही जीत सके हैं।

सचिन तेंदुलकर से बड़ा बनेगा मेरा बेटा - हरभजन सिंह

नई दिल्ली। भारत के पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह ने ऐसा दावा कर डाला है, जिससे पूरा क्रिकेट जगत हैरान है. हरभजन ने कहा है कि भविष्य में उनका बेटा सचिन तेंदुलकर से भी बड़ा खिलाड़ी बनेगा. जर्सी नंबर-10 को सचिन तेंदुलकर के कारण अलग सम्मान दिया जाता है और कोई मौजूदा भारतीय क्रिकेटर 10 नंबर जर्सी नहीं पहनता है. मगर भज्जी यह तक कह डाला है कि उनका बेटा नंबर-10 जर्सी पहन कर खेलेगा. बताते चलें कि हरभजन सिंह के दो बच्चे हैं, एक बेटी और एक बेटा, जिसका जन्म जुलाई 2021 में हुआ था। रिर्पोट के अनुसार हरभजन सिंह ने कहा, मैंने सचिन तेंदुलकर के कारण क्रिकेट का खेल नहीं छोड़ा है. मैं नंबर-10 जर्सी पहन कर खेलना चाहता था, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता था. लेकिन मेरा बेटा भविष्य में सचिन तेंदुलकर से भी बड़ा खिलाड़ी बनेगा, जो 10 नंबर जर्सी पहन कर खेलेगा.

मेरी इच्छा है कि आज की युवा पीढ़ी भविष्य में सभी क्रिकेटरों के रिकॉर्ड्स को तोड़े.

हरभजन के बेटे का जन्म जुलाई 2021 में हुआ और उसकी उम्र अभी महज 3 साल है, जिसका नाम जोवान वीर सिंह प्लाहा है। सचिन तेंदुलकर ने 1989 में अपने इंटरनेशनल करियर की शुरुआत करने से लेकर 2013 में संन्यास लेने तक नंबर-10 जर्सी पहनी थी. चूंकि तेंदुलकर 2013 में रिटायर हो चुके थे, ऐसे में उम्मीद थी कि अब कोई नया प्लेयर 10 नंबर जर्सी पहनकर खेलेगा. मगर कई खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर के सम्मान में निरंतर इस नंबर से खेलने से इनकार करते रहे, इस कारण बीसीसीआई ने नंबर-10 जर्सी को रिटायर्ड घोषित कर दिया था।

पहले टेस्ट में कार्यवाहक कप्तान और बुमराह के साथ बात करने से फायदा मिला - सिराज

नई दिल्ली। पिछले कुछ समय से मोहम्मद सिराज विकेट लेने के लिए तरस रहे थे. ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले करीब एक साल टेस्ट में सिराज अपनी लय में नहीं दिख रहे थे. न्यूजीलैंड सीरीज के दौरान उन्हें टीम से बाहर तक कर दिया गया था. हालांकि, ऑस्ट्रेलिया में सिराज पहले की तरह चमके और उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन किया. ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पर्थ में खेले गए पहले टेस्ट में सिराज ने पांच विकेट झटके और एक बार फिर जीरो से हीरो बन गए. अब उन्होंने अपनी सफलता और शानदार कमबैक का राज खोला है. सिराज ने कहा कि पहले टेस्ट में कार्यवाहक कप्तान और दुनिया के नंबर एक गेंदबाज बुमराह के साथ ऑस्ट्रेलिया के दौरे से पहले बात करने से उन्हें फायदा मिला. साथ ही उन्होंने नए बॉलिंग कोच मोर्ने मोर्कल को भी क्रेडिट दिया. सिराज ने प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ अभ्यास मैच में भारत की छह विकेट से जीत के बाद कहा, मैं हमेशा जस्सी भाई (जसप्रीत बुमराह) से बात करता रहता हूं. यहां तक की पहले टेस्ट मैच से पूर्व भी मैंने उनसे अपनी गेंदबाजी को लेकर बात की थी.

उन्होंने मुझसे कहा था कि विकेट लेने के लिए आतुर नहीं रहो और लगातार एक क्षेत्र में गेंदबाजी करते रहो. अपने खेल का आनंद लो. अगर तब भी विकेट नहीं मिले तो फिर मुझसे बात करना. सिराज ने बताया कि नए बॉलिंग कोच मोर्ने मोर्कल से उनकी क्या बातचीत हुई थी. उन्होंने कहा, मोर्ने मोर्कल मुझसे कहते रहते हैं कि तुम एक योद्धा हो. तुम हमें विकेट दिलाओगे,

लेकिन तुम बस अपनी गेंदबाजी का आनंद लेते रहो. इसलिए मैंने अपनी गेंदबाजी का पूरा आनंद लिया और विकेट भी हासिल किए. सिराज ने अपनी गेंदबाजी को लेकर भारत के पूर्व गेंदबाजी कोच भरत अरुण के साथ भी बात की. उन्होंने कहा, मैंने भरत सर से भी अपनी गेंदबाजी को लेकर बात की, क्योंकि वह मुझे लंबे समय से जानते हैं. उन्होंने भी मुझे अपनी गेंदबाजी का आनंद लेने और विकेट हासिल करने के लिए आतुर नहीं रहने की सलाह दी।

व्यापार

भारत स्काउट गाइड चंबल संभाग मुरैना की पांच दिवसीय संभागीय रैली सम्पन्न

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। भारत स्काउट एवं गाइड मध्य प्रदेश चंबल संभाग मुरैना की संभागीय स्काउट गाइड रैली नरेंद्र सिंह तोमर विधायक एवं अध्यक्ष विधानसभा मध्य प्रदेश के विधानसभा क्षेत्र दिमनी के अंतर्गत संभागीय स्काउट प्रशिक्षण केंद्र जींगनी मुरैना में 28 नवंबर से 02 दिसंबर 2024 तक पारस चंद जैन राज्य मुख्य आयुक्त एवं पूर्व शिक्षा मंत्री के निर्देशानुसार आयोजित की गई।

संभागीय स्काउट गाइड रैली में जिला भिंड, मुरैना, श्योपुर से 399 स्काउट, गाइड, 67 स्काउटर और गाइडर, 45 रोवर, रेंजर एवं 48 का रैली स्टाफ 559 की प्रतिभागिता रही। 28 नवंबर को दोपहर में ध्वजारोहण कार्यक्रम हुआ। 29 नवंबर को कार्यक्रमानुसार व्यायाम, मार्च फर्स्ट प्रतियोगिता के बाद रैली का विधिवत उद्घाटन कार्यक्रम दोपहर 3:00 बजे हुआ, जिसमें प्रभारी कलेक्टर विवेक कुमार, अपर कलेक्टर सी.बी. प्रसाद, रैली संचालक एवं सहायक राज्य संगठन आयुक्त स्काउट सुखदेव सिंह चौहान, जिला उपाध्यक्ष संभागीय प्रशिक्षण केंद्र के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं कलेक्टर स्टेनो सुरेंद्र सिंह यादव जिला मुख्य आयुक्त गिर्राज सिंह यादव एवं अन्य अधिकारीगण, पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। अधिकारियों ने रैली की शानदार व्यवस्थाओं एवं भोजन आदि की प्रशंसा की। 30 नवंबर को प्रातः 9:00 बजे मुरैना नगर में स्काउट गाइड एवं वैशणवी इंस्टीट्यूट के रोवर रेंजर द्वारा शानदार रैली निकाली गई। जिसमें स्वच्छता, पर्यावरण बचाने, पानी बचाने, ऊर्जा बचाने, 'पहले पाओ शिक्षा, दूर करो बाल भिक्षा'' के अंतर्गत रैली निकाली गई। रैली नगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई जीवाजी गंज मुरैना से विभिन्न मार्गों से होती हुई भारत के महान अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल संग्रहालय पर एक सभा के रूप में समाप्त हुई। इस अवसर पर जिला मुख्य आयुक्त गिर्राज सिंह यादव एवं सुखदेव सिंह चौहान रैली संचालक एवं सहायक राज्य संगठन आयुक्त मुरैना उपस्थित रहे। शाम 4:00 बजे समापन समारोह कार्यक्रम में डॉ. दीपक पांडे संयुक्त संचालक लोक शिक्षण संभाग चंबल मुरैना ग्वालियर के मुख्य अतिथि में तथा गिर्राज सिंह यादव जिला मुख्य आयुक्त की अध्यक्षता में तथा सुखदेव सिंह चौहान सहायक राज्य संगठन आयुक्त स्काउट चंबल संभाग मुरैना एवं सरपंच रामदीन सिंह यादव, एसके सक्सेना जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला कमिश्नर स्काउट जिला मुरैना शिवराम शर्मा जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी मुरैना की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। संभागीय रैली में विगत तीन दिवसों में 15 प्रतियोगिताओं में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले जिलों को अतिथियों द्वारा शील्ड एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। समापन समारोह में पधारे हुए अतिथियों द्वारा रैली की शानदार व्यवस्थाओं एवं भोजन आदि की कोटि-कोटि प्रशंसा की। रैली के सफल आयोजन में मीडिया प्रभारी पीआरओ जनसंपर्क रामनिवास, मीडिया सहायक डॉ. राकेश कुमार शर्मा, ओ.पी. शर्मा, मुरारी लाल मावई, रैली के लिए पीआर वीर सिंह यादव, ओपी सिकरवार, अतिबल सिंह, श्रीमती रेखा भदोरिया, मुकुट सिंह सिकरवार, श्रीमती रामजानकी, श्रीमती त्रिवेणी जाटव, मुकेश सिंह कुशवाहा, डॉ. राकेश शर्मा, शेखर सिंह यादव, सीताराम गुर्जर, अतर सिंह राजपूत, रोशन लाल गर्ग, कुमारी रीना प्रजापति, रामनरेश दंडोतिया, हरेंद्र कुमार दीक्षित, केदार सिंह यादव, लाखन सिंह गुर्जर, श्रीमती गौरी कुलश्रेष्ठ, श्रीमती मधुलता तोमर, हरकिशन गोले, विपिन बौद्ध, अनुपम जादौन, अभिनंदन सिंह तोमर, बृजेश कुशवाह, श्रीमती पूजा, घनश्याम सिंह गुर्जर आदि का शानदार एवं सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

सिविल हॉस्पिटल जौरा में "मेरा स्वास्थ्य मेरा अधिकार" विषय पर हुआ संगोष्ठी का आयोजन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। आईसीटीसी सिविल हॉस्पिटल जौरा द्वारा विश्व एड्स दिवस के उपलक्ष्य में की जा रही सप्ताहिक जागरूकता गतिविधियों के तहत 02 दिसंबर को आशा कार्यकर्ताओं को एचआईवी एड्स के प्रति जागरूक करने हेतु 'मेरा स्वास्थ्य मेरा अधिकार'' विषय आधारित संगोष्ठी का आयोजन सिविल हॉस्पिटल जौरा के सभाकक्ष में किया गया, जिसमें बीपीएम महेंद्र पाल सिंह, बीसीएम श्रीमती मधु सेमिल,आईसीटीसी काउंसलर संदीप सेंगर, मनीकांत शर्मा, एसटीएस दिनेश पचौरी, एसटीएलएस रणवीर गोयल, फार्मासिस्ट धर्मेंद्र शर्मा मुख्य रूप से उपस्थित थे। इनके अलावा विकासखंड जौरा के विभिन्न गांव से आईं हुईं आशा कार्यकर्ता व आशा सहयोगिनी मौजूद थीं। कार्यक्रम में उपस्थित आशा सहयोगिनियों व आशा कार्यकर्ताओं को आईसीटीसी परामर्शदाता संदीप सेंगर एवं मनीकांत शर्मा द्वारा 'मेरा स्वास्थ्य मेरा अधिकार'' विषय के बारे में समझाते हुए उन्हें एचआईवी संक्रमण होने के कारणों व एड्स के लक्षण व बचाव के बारे में समझाते हुए एचआईवी पॉजिटिव व्यक्तियों को एआरटी द्वारा दिये जाने वाले उपचार के बारे में विस्तार से समझाया। इस अवसर पर बीपीएम महेंद्र पाल सिंह द्वारा एचआईवी एड्स के प्रति जागरुक करते हुए कहा कि इस वर्ष विश्व एड्स दिवस की थीम 'मेरा स्वास्थ्य मेरा अधिकार'' विषय है।

इस अवसर पर कार्यक्रम उपरांत सभी आशाओं के द्वारा मानव श्रृंखला बनाकर इस बात का संकल्प लिया कि वह अपने-अपने गांव में लोगों को एचआईवी के प्रति जागरुक करते हुए सभी ग्रामवासियों की एचआईवी की जांच करने हेतु उन्हें प्रेरित करेंगी।

कृष्ण की बाल लीलाओं को देख नंद यशोदा सहित आनंदित होते हैं बृजवासी: पं.सतीश कौशिक

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। श्रीकृष्ण जन्म के बाद ब्रज क्षेत्र में 6 महीने तक लगातार उत्सव का माहौल रहा। सभी बृजवासी उत्सव में इतने डूब गए कि उन्हें दिन और रात का भी ध्यान नहीं रहा। उपरोक्त उद्गार मिश्रा वाटिका जौरा में चल रही संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा सुनने पहुंचे सैकड़ों श्रोताओं को संबोधित करते हुए कथा आचार्य सतीश कौशिक ने व्यक्त किये। आचार्य कौशिक ने भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं माखन चोरी लीला का प्रभावी ढंग से वर्णन कर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। कथा के दौरान उन्होंने पूतना वध, सकटासुर वध, तृणावर्त, बकासुर एवं अघासुर वध कथाओं का वर्णन प्रभावी शैली में किया। कथा के बीच-बीच में संगीतकारों द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे भजनों का श्रोताओं पर जादुई असर होता दिख रहा है। श्रोतागण अपनी सुध-बुध खोकर कथा को सुनते रहते हैं।

उल्लेखनीय है कि जोरा में बस स्टैंड नगर पालिका के सामने सहित कई मंदिरों की स्थापना कराने वाले भक्त स्व.सरवन लाल कुशवाहा स्व.ग्यासोबाई कुशवाहा की पुत्री शांति बाई पत्नी स्व. निरपत कुशवाह एवं उनके परिजनों द्वारा जौरा में संगीत में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन कराया जा रहा है।

प्रेस क्लब देवास का दीपावली मिलन समारोह सम्पन्न

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

देवास। देववासिनी की पावन नगरी देवास में प्रेस क्लब देवास द्वारा दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। शहर के चामुंडा पैलेस गार्डन में पत्रकारों की रजिस्टर्ड संस्था प्रेस क्लब देवास द्वारा यह आयोजन रखा गया। आयोजन से पूर्व प्रेस क्लब देवास की साधारण सभा आयोजित की गई। मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर सभा प्रारंभ की गई। पूर्व प्रेस क्लब अध्यक्ष असलम खान की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में संस्था के नवीन पदाधिकारीयों ने संस्था के सदस्यों का सर्वसम्मति से मनोनयन करने पर धन्यवाद प्रेषित किया। आने वाले दिनों में संस्था क्या कार्य करेगी इस पर विस्तार से चर्चा की गई। साधारण सभा संपन्न होने के उपरांत दीपावली मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें प्रेस क्लब देवास के पत्रकार साथियों के अतिरिक्त देवास नगर के अन्य सभी पत्रकार साथी भी उपस्थित रहे। आयोजन में विशेष अतिथि के रूप में देवास जिला जनसंपर्क अधिकारी आकाश जैन रहे। आकाश जैन का प्रेस क्लब अध्यक्ष ललित कुमार शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार विनोद जैन, दिलीप मिश्रा, पूर्व अध्यक्ष अतुल बागलीकर ने पुष्प माला पहनाकर स्वागत किया। उपाध्यक्ष खुमान सिंह बेस, शकील खान, सचिव शेखर कौशल, संयुक्त सचिव अशोक पटेल ने संयुक्त रूप से श्री जैन को प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया। इस आयोजन में प्रमुख रूप से प्रेस क्लब देवास के पूर्व अध्यक्ष अनिल सिकरवार, श्रीकांत उपाध्याय, तरुण मेहता, असलम खान, सदस्य राजेंद्र चौरसिया, एहतेशाम कुरैशी, मुन्ना वारसी, जगदीश सेन, अरविंद चौकसे, मोहन वर्मा, अकरम शेख, नागेन्द्र सिंह राजपूत, रूपेश मेहता, रोहित उपाध्याय, चेतन योगी, अतुल शर्मा, दुर्गेश शर्मा, धीरज सेन, तनवीर शेख, मुकेश पांचाल, हेमंत शर्मा, नटवर सिंह, प्रिंस बैरागी, वरुण राठौर, डि शाह, धर्मेंद्र पिपलोदिया, अभिषेक टेलर, अमित बागलीकर, मयूर व्यास, जितेंद्र शर्मा, सुरेश जयसवाल, मुर्तुजा सैफी सहित कई पत्रकार साथी उपस्थित रहे। आभार प्रेस क्लब सचिव शेखर कौशल ने माना।

समाधान ऑनलाइन एवं सीएम हेल्पलाइन के लंबित प्रकरणों का निराकरण गंभीरता के आधार पर कराएं अधिकारी : कलेक्टर

- कलेक्टर ने समयावधि पत्रों की बैठक में दिए अधिकारियों को निर्देश

अनूपपुर। कलेक्टर हर्षल पंचोली ने जिले के सभी विभागीय अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि जिले में शासकीय सेवा से सेवानिवृत हो चुके अधिकारियों एवं कर्मचारियों के स्वत्वों का भुगतान समय पर हो, यह सुनिश्चित किया जाए। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए। कलेक्टर ने कहा कि जिले के ग्राम पंचायत निगवानी में 7 दिसम्बर को जनकल्याण एवं समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जाना है, इस हेतु नोडल अधिकारी सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि शिविर में ग्राम पंचायत निगवानी सहित 12 अन्य ग्राम पंचायतों के नामांतरण, बंटवारा, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि तथा आयुष्मान कार्ड के आवेदन चिन्हित कर लिए जाएं। कलेक्टर हर्षल पंचोली आज कलेक्ट्रेट स्थित नर्मदा सभागार में समयावधि पत्रों की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तन्मय वशिष्ठ शर्मा, सहायक कलेक्टर एवं अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अनूपपुर महिपाल सिंह गुर्जर, संयुक्त कलेक्टर दिलीप कुमार पांडेय,

अनुविभागीय अधिकारी राजस्व जैतहरी अंजली द्विवेदी, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व कोतमा अजीत तिर्की, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व पुष्पराजगढ़ सुधाकर सिंह बघेल सहित विभिन्न विभागों के विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में कलेक्टर ने समाधान ऑनलाइन एवं सीएम हेल्पलाइन के 100 दिन से लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को गंभीरता के आधार पर प्रकरणों के निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी शिकायतकर्ताओं से चर्चा कर संतुष्टि पूर्वक समस्याओं का निराकरण करें तथा अपनी ग्रेडिंग सुधारें। बैठक में कलेक्टर ने बोर्ड परीक्षा की तैयारी की समीक्षा करते हुए छात्रों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा मुहैया कराने के निर्देश जिला शिक्षा अधिकारी को देते हुए कहा कि बच्चों के परीक्षा परिणाम और बेहतर हो इस दिशा में आवश्यक प्रयास किया जाए तथा शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित किए गए परीक्षा में जिन विद्यालयों के विद्यार्थी डी एवं ई ग्रेड से पास हुए हैं, उन विद्यालयों के प्राचार्यों का आगामी दिनों में बैठक बुलाकर परीक्षा परिणाम सुधार हेतु आवश्यक रणनीति बनाया जाए। बैठक में कलेक्टर ने कहा कि ऐसे प्रश्न जो बोर्ड परीक्षा में अधिकतर पूछे जाते हैं, उनका चिन्हांकन कर विद्यालयों में मॉक टेस्ट भी आयोजित किए जाएं, जिससे बच्चों के परीक्षा परिणाम में व्यापक सुधार हो सके।

बैठक में कलेक्टर ने महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी द्वारा जिले के पोषण पुनर्वास केन्द्र में भर्ती शिशुओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की। जिस पर जिला कार्यक्रम अधिकारी ने कलेक्टर को अवगत कराया कि राजेन्द्रग्राम एवं करपा में पोषण पुनर्वास केन्द्र शत्-प्रतिशत् भर गया है तथा इसी प्रकार अनूपपुर और कोतमा में शिशुओं को चिन्हित कर शत प्रतिशत भरे जाने हेतु प्रयास किया जा रहा है। बैठक में कलेक्टर ने सिकल सेल एनीमिया, डायबिटीज, टीबी रोग के संबंध में तथा अन्य विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

संगठन पर्व के अंतर्गत अनूपपुर जिले में 699 बूथों का हुआ गठन

– राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कार्यकर्ताओं को दी बधाई

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। भारतीय जनता पार्टी के संगठन पर्व अंतर्गत 01 दिसंबर 2024 को अनूपपुर भाजपा कार्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला को संबोधित करने के लिए प्रमुख रूप से भाजपा के जिला निर्वाचन अधिकारी रीवा के पूर्व महापौर वीरेंद्र गुप्ता, भाजपा जिला प्रभारी मिथिलेश पयासी,भाजपा जिला अध्यक्ष रामदासपुरी, अनूपपुर विधायक बिसाहूलाल सिंह, निर्वाचन सह अधिकारी आधाराम वैश्य, जितेंद्र सोनी, सदस्यता अभियान के प्रभारी अखिलेश द्विवेदी, जिले के महामंत्री हीरा सिंह श्याम, जिले के उपाध्यक्ष ज्ञानेंद्र सिंह परिहार की उपस्थिति में संगठन पर्व की कार्यशाला सम्पन्न हुई, जिसमें संगठन के आगामी कार्यक्रमों को लेकर सभी लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए।

राष्ट्रीय एवं प्रदेश नेतृत्व ने कार्यकर्ताओं को दी बधाई

भारतीय जनता पार्टी के चल रहे संगठन पर्व को लेकर अभी तक सफलतापूर्वक बूथ के गठन की प्रक्रिया को पूरा करने में और अभियान को सफल बनाने में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा के द्वारा संगठन पर्व के अंतर्गत सदस्यता अभियान से लेकर बूथ समिति के निर्माण के कार्य को 100 प्रतिशत डिजिटलाइजेशन कर नई उपलब्धि हासिल करने राष्ट्रीय स्तर पर नए आयाम स्थापित करने कार्यकर्ताओं के परिश्रम से विकसित भारत निर्माण के संकल्प की सिद्धि में सहायक सिद्ध हो रहे संगठन के कार्यों को लेकर राष्ट्रीय एवं प्रदेश नेतृत्व के द्वारा भाजपा के सभी कार्यकर्ताओं को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

लक्ष्य को हासिल करने में कार्यकर्ताओं ने निभाई अहम भूमिका

भाजपा जिला अध्यक्ष रामदासपुरी ने कार्यशाला में आए हुए अतिथियों का स्वागत अभिनंदन करते हुए कहा कि कार्यकर्ताओं ने संगठन द्वारा दिए गए लक्ष्य को प्राप्त करने में अहम भूमिका निभाई है हमेशा संकट की घड़ी में संगठन के कार्यकर्ता बजरंगबली की भूमिका में हमारे साथ खड़े होते हैं तो हम हर लक्ष्य को आसानी से हासिल कर लेते हैं संगठन पर्व के सभी कार्यों को पूर्ण करने में सभी का सराहनीय योगदान रहा है और आज हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हुए एक-एक कदम आगे बढ़ रहे हैं इसके लिए भाजपा परिवार के सभी कार्यकर्ता और पदाधिकारियों को बहुत-बहुत धन्यवाद।

सहमति से मंडल अध्यक्ष के नाम पर करें विचार

भाजपा अनूपपुर जिले के प्रभारी मिथिलेश पयासी ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक मंडल में सहमति से मंडल अध्यक्षों के नाम का चयन करने का प्रयास करें यह कार्यशाला मंडल अध्यक्ष चयन के लिए और आगे की प्रक्रिया के लिए की गई है अब यहां से मंडल गठन के कार्य को गति प्रदान करना है उन्होंने भाजपा के संघर्ष की बातें कार्यकर्ताओं के बीच रखी और बताया की किस तरह से भाजपा शून्य से शिखर पर पहुंची है।

भाजपा लोकतंत्र के आधार पर चलती है

रीवा के पूर्व महापौर और अनूपपुर जिले के संगठन पर्व के जिला निर्वाचन अधिकारी वीरेंद्र गुप्ता ने कहा कि भारत माता को परम वैभव के शिखर पर पहुंचना है तो भारतीय जनता पार्टी को सशक्त और मजबूत बनाने की दिशा में अभी और कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है उन्होंने कहा की प्राथमिक सदस्यता का कार्य और बूथ का गठन पूर्ण हो चुका है अनूपपुर जिले के 699 बूथों का गठन हो चुका है मंडल अध्यक्ष के लिए 35 से 45 वर्ष के आयु में मंडल अध्यक्ष का चयन करना है 10 दिसंबर तक सभी बूथों पर अभी तक किए गए कार्यों का लेखा जोखा संधारण करना है और उसके पश्चात मंडल अध्यक्ष के चयन का कार्य प्रारंभ किया जाएगा 35त्न महिलाओं को प्राथमिकता के आधार पर संगठन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो इसकी चिंता हम सबको करनी है।

वन परिक्षेत्र अमरकंटक इलाके में विचरण कर रहा टाइगर ग्रामीणों में दहशत, देर रात भैंस का किया शिकार

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। जिले के अमरकंटक वन परिक्षेत्र एवं थाना अंतर्गत दोनिया,भेजरी इलाके में हिंसक वन्यप्राणी टाइगर विगत रात से निरंतर विचरण कर रहा है जिसके द्वारा एक पालतू भैंस का शिकार किया गया तथा सोमवार की सुबह यह टाइगर मेढाखार के गांव मे लेन्टाना की झाड़ियो में विश्राम कर रहा है वनविभाग,पुलिस विभाग के द्वारा निरंतर निगरानी रखते हुए ग्रामीणों को नजदीक नहीं जाने तथा रात्रि समय सावधानी बरतने की सलाह दे रहे हैं।

ज्ञातव्य है कि एक टाइगर रविवार की रात दोनिया एवं भेजरी गांव के बीच गांव के मार्ग को पार करते चार पहिया वाहन चालक को दिखा जिसका वीडियो बनाने बाद वनविभाग को सूचित किया गया सूचना पर वन परिक्षेत्र अधिकारी अमरकंटक वीरेंद्र श्रीवास्तव वन कर्मचारियों के साथ रात भर गस्त करते हुए टाइगर की पहचान तथा उसके लोकेशन की जानकारी लेते रहे हैं टाइगर झाड़ियों के बीच से विचरण करता हुआ मेढाखार गांव में पहुंचकर गांव के ईश्वर सिंह नायक पिता खुमान नायक के बाड़ीं में चर रही एक 3 वर्ष उम्र की भैंस को पर हमला कर मारने बाद मांस खाते हुए पास पर ही लेन्टना की झाड़ियां में घुसकर विश्राम कर रहा है सोमवार को पूरे दिन वनविभाग एवं थाना अमरकंटक की टीम द्वारा निगरानी की जा रही है टाइगर के आने की जानकारी पर आसपास के ग्रामों में ग्रामीण भयभीत है वही टाइगर को देखने के लिए भारी मात्रा में ग्रामीणों के पहुंचने पर उन्हें स्थल से दूर रखते हुए निरंतर निगरानी जा रही है।

सोनी सब के 'वागले की दुनिया' में विद्या की डिलीवरी ने लिया नाटकीय मोड़

मुंबई। सोनी सब के 'वागले की दुनिया - नई पीढ़ी नए किस्से' में मध्यम वर्ग के वागले परिवार के रोजमर्रा के संघर्ष और जीत को दिखाया गया है। हाल के एपिसोड में साई दर्शन सोसाइटी सभी घरों में डिजिटल लॉक लगाती है, लेकिन तब अराजकता फैल जाती है जब विद्या (सुनकन्या सुर्वे) को प्रसव पीड़ा होती है और दरवाजे का ताला जाम हो जाता है। जब सभी लोग मदद के लिए भगवान गणेश से प्रार्थना करते हैं, तो एक दिव्य क्षण आता है जब एक मूषक प्रकट होता है और दरवाज़ा चमत्कारिक रूप से खुल जाता है, जिससे विद्या समय रहते बच जाती है।

आगामी एपिसोड में वागले परिवार से राजेश (सुमित राघवन) विद्या को अस्पताल ले जाता है, लेकिन तब अराजकता फैल जाती है जब अचानक राधिका (भारती आचरेकर) को अल्जाइमर का दौरा पड़ता है। वह अपने परिवार को पहचान नहीं पाती है। जब वह घबरा जाती है और गुस्सा करती है, तो पुलिस उन्हें रोक लेती है क्योंकि उन्हें कुछ संदिग्ध लगता है। राजेश विद्या को अस्पताल भेजने में कामयाब हो जाता है, लेकिन उसे और राधिका को हिरासत में ले लिया जाता है, जो जेल में तब तक रहते है जब तक कि सखी (चिन्मयी साल्वी) उन्हें बचाने नहीं आती। अस्पताल में विद्या अपने पहले बच्चे को जन्म देती है और परिवार जश्न मनाता है। जुड़वाँ बच्चे के आने का बेसब्री से इंतज़ार हो रहा होता है। हालाँकि, उनकी खुशी तब खत्म हो जाती है जब नर्स घोषणा करती है कि बच्चा मृत पैदा हुआ है। जब परिवार शोक मना रहा होता है, तो वागले परिवार को तब झटका लगता है।

क्या विद्या और मनोज (विपुल देशपांडे) अपने दोनों जुड़वाँ बच्चों को जीवित देख पाएंगे या उन्हें एक दिल दहला देने वाली क्षति का सामना करना पड़ेगा?

राजेश वागले की भूमिका निभाने वाले सुमित राघवन ने कहा, 'वागले परिवार हमेशा चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों से घिरा हुआ लगता है। ताला जाम होने से लेकर अचानक पुलिस के हस्तक्षेप और फिर विद्या की गंभीर डिलीवरी तक, सब कुछ एक साथ होता है।

लेकिन सबसे खास बात यह है कि वे ऐसे समय में कैसे एक साथ आते हैं। विद्या के बच्चे का जन्म खुशी, दिल टूटने और उम्मीद के पल एक साथ लाता है, और मुझे विश्वास है कि दर्शक इस बात से जुड़ेंगे कि कैसे परिवार जीवन की चुनौतियों का सामना करने में एकजुट होता है।'

सोनी सब पर सोमवार से शनिवार रात 9 बजे वागले की दुनिया - नई पीढ़ी नए किस्से देखने के लिए तैयार रहें

जागरण फिल्म फेस्टिवल 5 दिसंबर से दिल्ली में सितारों से सजी शुरुआत करेगा

नईदिल्ली। जागरण फिल्म फेस्टिवल (JFF), जो दुनिया का सबसे बड़ा यात्रा करने वाला फिल्म फेस्टिवल है, अपनी भव्य शुरुआत 5 दिसंबर को दिल्ली के प्रतिष्ठित सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम में करेगा। 'गुड सिनेमा फॉर एवरीवन' की टैगलाइन के साथ, JFF सिनेमा के जादू को मनाने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान व समावेशिता को बढ़ावा देने का एक अनूठा मंच बना हुआ है।

इस साल के फेस्टिवल में 4,787 प्रविष्टियों में से चुनी गई 292 उत्कृष्ट फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा, जिसमें फीचर फिल्में, शॉर्ट फिल्में और डॉक्यूमेंट्री शामिल हैं। ये 78 भाषाओं और 111 देशों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो वैश्विक विविधता की समृद्धि को उजागर करती हैं। 100 दिनों की अवधि में, यह फेस्टिवल 11 राज्यों में यात्रा करेगा, अपनी अभूतपूर्व पहुंच और समावेशिता के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत करेगा। 2024 संस्करण में 29 देशों की 34 भाषाओं में भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों सहित 102 उल्लेखनीय फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा।

इस आयोजन की शुरुआत को और भी खास बनाने के लिए कई प्रसिद्ध हस्तियां दिल्ली में उपस्थित होंगी। दिग्गज अभिनेता पंकज कपूर, सोशल मीडिया सनसनी भुवन बाम, कॉमेडी के मास्टर राजपाल यादव, प्रख्यात अभिनेता रजत कपूर, प्रशंसित निर्देशक सुधीर मिश्रा, और प्रसिद्ध कास्टिंग डायरेक्टर मुकेश छाबड़ा जैसे सितारे समारोह की शोभा बढ़ाएंगे। इन सितारों ने इस भव्य सिनेमा उत्सव का हिस्सा बनने पर अपनी खुशी व्यक्त की, यह बताते हुए कि कैसे छ्वस्नस्न कहानी कहने, विविधता, और अर्थपूर्ण सिनेमा के सच्चे उत्सव के रूप में खड़ा है।

पंकज कपूर

'12वें जागरण फिल्म फेस्टिवल के अचीवर्स टॉक का हिस्सा बनना मेरे लिए एक सम्मान की बात है। यह आयोजन सिनेमा की आत्मा और हमारे जीवन पर इसके गहरे प्रभाव को मनाता है। मेरे लिए, अभिनय हमेशा मानवीय भावनाओं की गहराइयों में उतरने, पात्रों की जटिलताओं को समझने और उन्हें ईमानदारी और गहराई से प्रस्तुत करने के बारे में रहा है। हर किरदार मेरे लिए एक खोज की यात्रा रहा है। मैं अपनी यात्राओं और अभिनय के कला और शिल्प पर विचार साझा करने और सिनेमा के परिवर्तनकारी प्रभाव का जश्न मनाने के लिए उत्सुक हूं।'

राजपाल यादव

'दिल्ली में जागरण फिल्म फेस्टिवल का

12वां संस्करण समाज की खुशियों और सपनों को खूबसूरती से दर्शाता है। 'गुड सिनेमा फॉर एवरीवन' की थीम के साथ, यह फेस्टिवल विविध पृष्ठभूमियों के लोगों को एकजुट करता है और प्रभावशाली कहानियां गढ़ने वाले रचनाकारों को प्रोत्साहित करता है। मैं 'स्टीलिंग द स्पॉटलाइट-सपोर्टिंग रोल्स' और 'लाफ्टर फॉर पावरफुल स्टोरीटेलिंग' जैसी चर्चाओं का हिस्सा बनने और 'ए सन ऑफ हिमालय' जैसी कहानियों की गहराई पर चर्चा करने को लेकर रोमांचित हूं।'

रजत कपूर

'12वें जागरण फिल्म फेस्टिवल का हिस्सा बनना मेरे लिए खुशी की बात है। मैं अचीवर्स टॉक में मनोज बाजपेयी के साथ बातचीत के लिए बेहद उत्साहित हूं, जो एक अभिनेता के रूप में मेरे लिए प्रेरणा हैं। हम अभिनय के शिल्प, कहानी कहने की बारीकियों और सिनेमा की ताकत पर चर्चा करेंगे।'

भुवन बाम

'कंटेंट क्रिएटर से अभिनेता और प्रोड्यूसर बनने तक की मेरी यात्रा चुनौतियों और रोमांच से भरी रही है। यह फेस्टिवल कहानी कहने की शक्ति को मनाता है। मैं फेलो आर्टिस्ट्स से मिलने और अपनी यात्रा साझा करने के लिए उत्सुक हूं।'

प्रसिद्ध निर्देशक, लेखक और निर्माता सुधीर मिश्रा ने साझा किया

'12वें जागरण फिल्म फेस्टिवल में वापसी करना मेरे लिए बेहद खुशी की बात है। यह एक अद्भुत मंच है जो सिनेमा की शक्ति को उजागर करता है, लोगों को जोड़ता है, और अर्थपूर्ण चर्चाओं को प्रोत्साहित करता है। एक बार फिर इस आयोजन में हिस्सा लेने के लिए मैं उत्साहित हूं। यह फेस्टिवल फिल्म निर्माताओं, कहानीकारों और दर्शकों को उनकी अर्थपूर्ण सिनेमा के प्रति समान जुनून के साथ एकजुट करता है। हर साल यह फेस्टिवल विभिन्न कथाओं की विविधता का उत्सव मनाता है और समाज को आकार देने में कहानी कहने की परिवर्तनकारी भूमिका को उजागर करता है।

मैं अपने फिल्म निर्माण के अनुभव और गहराई से जुड़े विचार साझा करने के लिए उत्सुक हूं, जो मेरी व्यक्तिगत यात्रा से प्रेरित हैं। साथ ही, मैं साथी फिल्म निर्माताओं के साथ सिनेमा के बदलते परिदृश्य और इसके सांस्कृतिक प्रभावों पर चर्चा करने के लिए भी उत्सुक हूं। इस बार, मैं विशेष रूप से इस बात का पता लगाने के लिए उत्साहित हूं कि नवाचारपूर्ण कहानी कहने की विधियां कैसे व्यापक और अधिक विविध दर्शकों के साथ जुड़ रही हैं।'

मुकेश छाबड़ा ने साझा किया

'जागरण फिल्म फेस्टिवल का हिस्सा बनना मेरे लिए वास्तव में रोमांचक है। यह एक ऐसा मंच है जो सिनेमा और कहानियों को जीवंत करने की इसकी शक्ति का जश्न मनाता है। यह फेस्टिवल न केवल फिल्म निर्माण की कला को बढ़ावा देता है, बल्कि कास्टिंग के शिल्प और इसके पीछे की कला को भी सामने लाता है। एक कास्टिंग डायरेक्टर के रूप में, मुझे कुछ बेहद प्रतिभाशाली अभिनेताओं को खोजने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, और मैं यहां प्रदर्शित होने वाली नई प्रतिभाओं की लहर से जुड़ने के लिए उत्सुक हूं।

इस फेस्टिवल का हिस्सा बनना एक सम्मान की बात है, जो फिल्म निर्माण में रचनात्मक सहयोग के महत्व को उजागर करता है। केवल स्क्रीन पर दिखने वाले अभिनेताओं के अलावा, पर्दे के पीछे काम करने वाली टीम–कास्टिंग, निर्देशन, लेखन–किसी भी फिल्म की आत्मा को आकार देती है। जागरण फिल्म फेस्टिवल एक अनमोल अवसर प्रदान करता है कि फिल्म निर्माण के इन कम आंके गए पहलुओं को उजागर किया जाए। मैं 'अगला ब्रेकआउट फेस' जैसी चर्चाओं का हिस्सा बनने और इस मंच द्वारा प्रोत्साहित विचारों के आदान-प्रदान को देखने के लिए उत्साहित हूं। भारतीय सिनेमा का भविष्य प्रतिभाओं को निखारने और विविध कहानियों को बढ़ावा देने में निहित है, और मुझे विश्वास है कि यह फेस्टिवल अगली पीढ़ी के फिल्म निर्माताओं के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहा है।'

इस प्रतिष्ठित फेस्टिवल में मनोज बाजपेयी, भूमि पेडनेकर, तापसी पन्नू, राहुल रावल जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व, साथ ही पद्मश्री, पद्मभूषण अनिल प्रकाश जोशी, आदित्री दीपिका, ओनिर और हरी के सुदान जैसे मशहूर निर्देशक भी शिरकत करेंगे। इस सीज़न में जागरण फिल्म फेस्टिवल 18 शहरों की यात्रा करेगा। दिल्ली से भव्य उद्घाटन के बाद यह प्रयागराज, वाराणसी, रायपुर, रांची, इंदौर, सिलीगुड़ी, कानपुर, लखनऊ, आगरा, मेरठ, गोरखपुर, पटना, लुधियाना, देहरादून, हिसार और दरभंगा जैसे प्रमुख स्थानों से होता हुआ मुंबई में एक भव्य समापन के साथ समाप्त होगा।

इस 12वें सीजन में, हमारा लक्ष्य पिछले सीजन से मिले जबरदस्त प्रतिक्रिया पर निर्माण करना और पूरे भारत के दर्शकों के साथ एक अविस्मरणीय सिनेमाई अनुभव प्रदान करना है।

देखो, जवाब दो और जीतोः सन नियो ने अपने दर्शकों के लिए शुरू किया एक खास प्राइम-टाइम कॉन्टेस्ट

मुंबई। सन टीवी नेटवर्क के हिंदी जीईसी चैनल सन नियो ने अपने लोकप्रिय शो छठी मैया की बिटिया, इश्क़ जबरिया, साझा सिंदूर और अन्य शो के साथ दर्शकों का दिल जीतते हुए एक अनोखा प्राइम-टाइम कॉन्टेस्ट लॉन्च किया है। यह कॉन्टेस्ट, जो अब लाइव है और 01 दिसंबर तक चलेगा साथ ही दर्शकों को अपने पसंदीदा शो का आनंद लेते हुए कैश प्राइज़ जीतने का रोमांचक मौका भी देगा।

हर शाम 7 बजे से रात 9:30 बजे तक छठी मैया की बिटिया, इश्क़ जबरिया, और साझा सिंदूर के एपिसोड्स के दौरान इस कॉन्टेस्ट में दर्शकों से सवाल पूछे जाएंगे। हर दिन सैकड़ों विजेताओं को अनोखे कैश प्राइज़ दिए जाएंगे, जिससे पूरे कॉन्टेस्ट के दौरान एक बड़ी इनामी राशि बांटी जाएगी। शर्तें और नियम लागू होते हैं। विस्तृत नियम और शर्तें आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

छठी मैया की बिटिया शो में कार्तिक का किरदार निभाने वाले अभिनेता आशीष दीक्षित ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा,'हमेशा यह दिल को छू लेने वाला अनुभव होता है जब हम अपने दर्शकों से इतने व्यक्तिगत स्तर पर जोड़ पाते हैं। सन नियो का 'देखो और जीतो' कॉन्टेस्ट हमारे फैन्स के साथ जुड़ने का एक बेहतरीन जरिया है, जिन्होंने हमें इतना प्यार और समर्थन दिया है। मैं उनकी उत्सुकता देखने के लिए बेहद उत्साहित हूं!'इश्क़ जबरिया शो में आदित्य का किरदार निभाने वाले अभिनेता लक्ष्य खुराना ने कहा,'हमारे दर्शक हमारे परिवार जैसे हैं। सन नियो के 'देखो और जीतो' कॉन्टेस्ट के जरिए हम उन्हें न केवल मनोरंजन दे रहे हैं, बल्कि उन्हें जीतने और हमारी इस यात्रा का हिस्सा बनने का मौका भी दे रहे हैं। उन्हें करीब लाते हुए वाकई हमें बहुत अच्छा लग रहा है!'

साझा सिंदूर में सरोज की भूमिका निभाने वाली अभिनेत्री संगीता घोष ने साझा किया,'टेलीविजन एक खूबसूरत माध्यम है, जहां हम अपने दर्शकों से दूर रहकर भी गहरे संबंध बना लेते हैं। सन नियो का यह कॉन्टेस्ट हमें उनके प्यार और हमारा साथ देने के लिए धन्यवाद कहने का मौका देता है। मैं दर्शकों के भाग लेने और उनके जीतने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूं!'

छठी मैया की बिटिया, इश्क़ जबरिया, और साझा सिंदूर शो का आनंद उठाएं हर सोमवार से शनिवार रात 7 बजे, 7:30 बजे और 8 बजे सिर्फ सन नियो पर।

अपेक्षा पोरवाल को अपने डस्की कॉम्प्लेक्शन पर है गर्व!

मुंबई। अपेक्षा पोरवाल न केवल अपने रिमार्केबल एक्टिंग स्किल के लिए जानी जाती हैं बल्कि उनकी खूबसूरती भी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं। अपेक्षा ने अपने दमदार अदाकारी से इंडस्ट्री में अपनी एक अलग पहचान बनायी हैं और अपनी डस्की स्किन को अपनी पहचान बनाते हुए वे हमेशा खुलकर बात करती हैं।

अपेक्षा बताती हैं कि 'मुझे नहीं लगता कि मुझे अपनी स्किन टोन की वजह से ओवरकम करने की ज़रूरत है - यह मेरे व्यक्तित्व का हिस्सा है।' 'मुझे लगता है कि महिलाओं के लिए, विशेष रूप से हमारे जैसे इंडस्ट्री में, अपने व्यक्तित्व को अपनाना और उसका जश्न मनाना महत्वपूर्ण है।'

पूर्व मिस इंडिया विनर अपेक्षा ने अनदेखी जैसे प्रोजेक्ट और हनीमून फोटोग्राफर में अपनी हालिया मुख्य भूमिका के माध्यम से एक अभिनेता के रूप में उन्होंने अपने हुनर का जमकर प्रदर्शन किया है जिसे खूब सराहा गया है।

जबकि कई अभिनेता सौंदर्य मानदंडों पर चर्चा करने से कतराते हैं, अपेक्षा की स्पष्ट राय भारतीय सिनेमा में व्यापक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है। वह कहती हैं, 'महत्वपूर्ण बात यह है कि हम दर्शकों के साथ कैसा संबंध बनाते हैं, और यह प्रामाणिकता से आता है, न कि एक दायरे में फिट होने से।'

अपनी पसंद के माध्यम से अपेक्षा पोरवाल न केवल अपने लिए एक अलग पहचान बना रही हैं, बल्कि दूसरों को भी अपनी शर्तों पर सुंदरता को फिर से परिभाषित करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

70 प्लस आयुष्मान कार्डों के लिए नियमित कैम्प लगवाना सुनिश्चित करें: कलेक्टर

कलेक्टर की अध्यक्षता में टीएल बैठक सम्पन्न

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। लंबित भूमि आबंटनों को पूर्ण करते समय लोकहित का ध्यान रखें। सभी सीएमओ एवं जनपद सीईओ 70 प्लस आयुष्मान कार्डो के लक्ष्यों को पूरा करने के लिये नियमित कैम्प लगाना सुनिश्चित करें। खाद के टोकन वितरण के समय राजस्व अधिकारी अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करें। ध्यान रखें कोई भी बाधा उत्पन्न न हो। यह निर्देश कलेक्टर अंकित अस्थाना ने कलेक्टर सभागार मुरैना में टाइम लिमिट की बैठक की अध्यक्षता करते हुए अधिकारियों को दिये। बैठक में सीईओ जिला पंचायत डॉ. इच्छित गढ़पाले,अपर कलेक्टर सीबी प्रसाद, नगरनिगम कमिश्नर सतेन्द्र धाकड़े,

संयुक्त कलेक्टर शुभम शर्मा, समस्त एसडीएम, डिप्टी कलेक्टर सहित सभी संबंधित जिला अधिकारी,समस्त सीएमओ एवं सीइओ जनपद उपस्थित थे।

कलेक्टर अंकित अस्थाना ने टीएल बैठक में निर्देश दिये कि सीएम राईज भूमि आवंटन की रिपोर्ट संबंधित अधिकारी जल्दी पेश करें। जिन भी अधिकारियों को छात्रावासों के निरीक्षण का कार्य सौंपा गया था, वे पुनः छात्रावासों को विजिट करके सफाई, लाईट, मच्छर की जाली एवं स्वच्छ पीने का पानी की व्यवस्था उपलब्ध है कि नहीं यदि नहीं है तो उसे पूर्ण करवाना सुनिश्चित करके अगली टीएल मीटिंग तक जानकारी मेरे समक्ष प्रस्तुत करे। कलेक्टर ने जनमन की समीक्षा करते हुए यह पाया कि जनमन के अंतर्गत जाति प्रमाण पत्र 15 लंबित हैं, आधार 5 एवं आयुष्मान 135 लंबित हैं।

तहसीलदार ने किया खाद की दुकानों का औचक निरीक्षण, एक दुकान शील्ड

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। कलेक्टर अंकित अस्थाना के निर्देश पर एसडीएम प्रदीप सिंह तोमर की देखरेख में तहसीलदार कल्पना कुशवाहा द्वारा नगर में खाद की दुकानों का औचक निरीक्षण किया गया। एक दुकान पर खाद का स्टॉक कम पाए जाने एवं यूरिया खाद अधिक दर पर बेचे जाने की शिकायत पर से दुकान को शील्ड करने की कार्यवाही की गई। किसानों को बिना किसी ब्लैक के आसानी के साथ खाद उपलब्ध कराने के कलेक्टर अंकित अस्थाना द्वारा दिए गए निर्देश के पालन में तहसीलदार कल्पना कुशवाह ने 02 दिसंबर सोमवार को नगर में लगभग आधा दर्जन खाद की दुकानों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान एक दुकान को छोड़कर सभी दुकानों पर स्टॉक ठीक मिला। रमेश एंड संस

दुकान पर यूरिया खाद के बैग का स्टॉक कम पाया गया, यहीं पर खाद ले रहे किसान रामेश्वर यादव ने बताया कि उन्हें यूरिया का खाद 330 का बैग मिला है, जिस पर से मौके पर पंचनामा बनाकर दुकान को शील्ड करने की कार्यवाही की गई। इस दौरान नायब तहसीलदार श्यामसुंदर सिंह, पटवारी मानवेंद्र सिंह सिकरवार एवं अन्य कर्मचारी भी मौजूद थे।

प्रकरण में तहसीलदार कल्पना कुशवाह का कहना है कि वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर नगर में आज लगभग दर्जन भर खाद की दुकानों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान खाद ले रहे किसानों से भी पूछताछ की गई। एक स्थान पर किसान द्वारा यूरिया खाद को 330 में देने की शिकायत पर से जिस दुकान से खाद लिया गया था उसे शील्ड करने की कार्यवाही की गई है।

कांग्रेस की कार्यकर्ता बैठक आज, लाखन सिंह आयेंगे

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्षद्वय मधुराज तोमर एवं दीपक शर्मा ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया है, कि 04 दिसम्बर को दोपहर 12 बजे स्थान गांधी बाल निकेतन बिजली घर के सामने मुरैना में मध्य प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष, पूर्व मंत्री एवं मुरैना प्रभारी लाखन सिंह यादव एवं प्रदेश सचिव सह प्रभारी राहुल शर्मा कार्यकर्ता बैठक लेने आ रहे हैं। इस मौके पर जिला कांग्रेस कमेटी ने अपील की है कि विधायकगण, लोकसभा प्रत्याशी, पूर्व विधायकगण, सभापति, समन्वय समिति सदस्यगण, प्रदेश पदाधिकारीगण, संगठन मंत्रीगण,

पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्षगण, सभी ब्लॉक अध्यक्षगण, नगर निगम नेता प्रतिपक्ष, पूर्व ब्लॉक अध्यक्षगण, वर्तमान एवं पूर्व जिला पंचायत, जनपद पंचायत, नगर निगम, नगर पालिका, नगर पंचायत के निर्वाचित जनप्रतिनिधि, प्रदेश के प्रकोष्ठ के अध्यक्षगण, महिला कांग्रेस, युवा कांग्रेस, एन.एस.यू.आई, किसान कांग्रेस पदाधिकारीगण, सेवादल, समस्त प्रकोष्ठ एवं विभागों के अध्यक्षगण, पार्षदगण एवं पूर्व पार्षदगण, मंडल एवं सेक्टर के अध्यक्षगण, बीएलए, सरपंच, कनिष्ठ, वरिष्ठ कांग्रेसजन एवं समस्त कांग्रेस कार्यकर्तागण अधिक से अधिक संख्या में आने का कष्ट करें।

माहौर ग्वार्रे वैश्य महासभा एवं महिला मंडल मुरैना का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। माहौर ग्वार्रे वैश्य महासभा मुरैना के नवनियुक्त अध्यक्ष अभिषेक गांगिल व महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती प्रतीक्षा बांदिल का पूरी कार्यकारिणी के साथ शपथ ग्रहण समारोह विगत शनिवार को मानसरोवर पैलेस में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुरैना श्योपुर सांसद शिवमंगल सिंह तोमर व भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. योगेशपाल गुप्ता रहे। विशिष्ट अतिथि समाज के रूप में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रामस्वरूप गुप्ता एडवोकेट, मोहनचंद बांदिल, हुकुमचंद गोयल, मुन्नालाल गुप्ता, श्रीमती ऊषा बांदिल व राकेश गुप्ता सरिया वाले मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता उद्योगपति व महासभा के मुख्य संरक्षक नारायणहरी गुप्ता ने की।

कार्यक्रम का प्रारम्भ महाराजा महासेन जी की आरती व आराध्या बांदिल द्वारा गणेश वंदना से हुई। तत्पश्चात् महासभा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष स्व. दाऊदयाल गोयल के दुःखद

निधन पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। महासभा के नवनियुक्त अध्यक्ष अभिषेक गांगिल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन मे माहौर वैश्य समाज की महान विभूतियों को याद करते हुए कहा कि माहौर ग्वार्रे वैश्य समाज के लोगों ने व्यावसायिक, सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्रों मे नये आयाम स्थापित किए हैं। उन्होंने कहा कि मैं बाल्यकाल से संघ के संस्कारों में पल्लवित हुआ एवं सकल हिन्दू समाज को संगठित कर माँ भारती को परम वैभव पर ले जाने का संकल्प रहा और माहौर ग्वार्रे वैश्य समाज भी हिन्दू समाज का एक अभिन्न अंग होने के कारण समाज के प्रति भी मेरा उत्तरदायित्व है। श्री गंगिल ने समाज के युवाओं मे संस्कार और शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग करने पर जोर दिया।

महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती प्रतीक्षा बांदिल ने महिलाओं को एकजुट कर समाज की मुख्य धारा से जोड़कर स्वावलम्बी बनाने हेतु कार्य करने कि बात कही। श्रीमती बांदिल ने महिलाओं को विविध क्षेत्रों में प्रशिक्षण पर जोर देते हुए कहा कि जब समाज की महिलाएं व्यावसायिक दृष्टि से प्रशिक्षित होकर परिवार को सहयोग करने में सक्षम होंगी। इससे समाज और सशक्त, मजबूत होगा।

कार्यक्रम में ग्वालियर, मुरार, लश्कर, आगरा, गोहद के भी समाज बंधु शुभकामनायें देने उपस्थित हुए। कार्यक्रम में जिला अभिभाषक संघ के अध्यक्ष पवन गुप्ता, कर अभिभाषक संघ के अध्यक्ष दिनेश बांदिल, व्यवसायिक बैंक के संचालक पंकज गुप्ता, अशोक गोयल, रामरुप गुप्ता, पूर्व पार्षद डॉ. रामनिवास गुप्ता, डॉ. रामप्रकाश गुप्ता, भाजपा नेता राकेश गुप्ता, लक्ष्मी नारायण गोयल, विशम्भर गुप्ता, योगेश बांदिल, अशोक कुमार गुप्ता, रोमेश गुप्ता, प्रदीप गुप्ता, अमित बांदिल, गिर्राज बांदिल, जुगल चाँदिल, नीरज बंसल, सुभाष गुप्ता, विपुल गुप्ता, विनोद बांदिल, अविनाश बंसल, राघव बांदिल, राजेश बंसल, शुभम गोयल, गौरव गोयल, सचिन बांदिल, मूलचंद बंसल जी, टी. आर. मांडिल जी, प्रिंस गोयल, कुलदीप गुप्ता, शकुंतला बांदिल, ऊष्मा गुप्ता, प्रीति मांडिल, नीता बांदिल आदि समाजजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन बृजेन्द्र गुप्ता व आभार समीर बांदिल द्वारा किया गया।

पंखों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है: मित्तल

एचएल ग्रुप ऑफ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट का 22वां स्थापना दिवस मनाया गया

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। अगर आपको सफल नागरिक बनना है, अपने सपनों को साकार करना है, संपूर्ण विश्व पर राज करना है, अपनी अलग पहचान बनाना है तो आप हौसला रखिए। हौसला ही वह पूंजी है जिससे ऊंची से ऊंची उड़ान भरी जा सकती है। यह बात वरिष्ठ भाजपा नेता एवं एमजेएफ लाइन कैलाश मित्तल ने एचएल ग्रुप ऑफ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के विभिन्न प्रतिष्ठानों एचएल हायर सेकेंडरी स्कूल, एचएल बचपन स्कूल, जेपी किड्स इंटरनेशनल स्कूल, केरला मॉडल टीचिंग इंस्टीट्यूट के बच्चों को संबोधित करते हुए एचएल ग्रुप आफ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट की 22वें स्थापना दिवस समारोह में कही। श्री मित्तल संस्थापक संरक्षक की हैसियत से बोल रहे थे। कार्यक्रम को एकता परिषद के प्रदेश प्रभारी डोंगर शर्मा, त्यागी भूमिहार संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. नीकेराम त्यागी ने भी संबोधित किया। एचएल ग्रुप के स्थापना दिवस के अवसर पर भारत की संतान कार्यक्रम की प्रस्तुति करने वाले, विभिन्न परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। कक्षा 12वीं के बच्चों का जहां एक ओर विदाई समारोह किया गया, वहीं दूसरी ओर 11वीं के बच्चों के लिए मोटिवेशनल प्रोग्राम का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन एचएल ग्रुप के संस्थापक एवं संरक्षक एलएन त्यागी ने किया। इस अवसर पर एचएल ग्रुप ऑफ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के विभिन्न पदाधिकारी उपस्थित थे। कैलाश मित्तल, एकता परिषद के प्रदेश प्रभारी डोंगर शर्मा एलएन त्यागी, श्रीमती प्रभात त्यागी, पं. विजयलक्ष्मी त्यागी, अर्चना पाराशर, दिनेश दुबे, कुलदीप शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष नीकेराम त्यागी, सरपंच सेठी रावत, ताइक्कांडो कोच राहुल गुप्ता, नानकराम त्यागी, गिर्राज नेताजी चिन्नोनि, विनोद त्यागी, रश्मि त्यागी, दुष्यंत त्यागी, जिम्मी जॉर्ज, सनी जिम्मी जॉर्ज, अजय झा, रचना शर्मा, सुरभि श्रीवास्तव, प्रदेश प्रभारी शीतल जैन पत्रकार साथियों में वरिष्ठ पत्रकार जेपी पाराशर, शिवम त्यागी, चंद्र मोहन शर्मा की अलावा बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद थे। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं को खुलकर पुरस्कार बांटे गए।

महुआ थाना प्रभारी के स्थानांतरण पर ग्रामीणों ने दी विदाई

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। महुआ थाना प्रभारी पवन भदौरिया का स्थानांतरण होने पर महुआ गांव में गणमान्य नागरिकों ने विदाई समारोह आयोजित किया। इस दौरान ग्रामीणों ने थाना प्रभारी का फूलमाला पहनाकर स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया। इस दौरान थाना प्रभारी पवन भदौरिया ने कहा कि अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस को आमजन का सहयोग होना बहुत जरूरी है। यही वजह रही कि वह क्षेत्र में अपराधों पर अंकुश लगा पाए। उनके कार्यकाल में आमजन का भरपूर सहयोग रहा। प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि पवन भदौरिया के कार्यकाल से लोगों को सीख लेना चाहिए,जिस तरह से उन्होंने पुलिस और आमजन के बीच अपने दायित्व का निर्वहन किया वह प्रेरणादायक है। शिव प्रताप सिंह तोमर ने कहा कि थाना प्रभारी श्री भदौरिया ने हमेशा आए हुए लोगों की शिकायत का निराकरण किया है।

सुनील दीक्षित ने कहा कि अपराधों पर अंकुश से लेकर हर कार्य मे पवन भदौरिया ने अमिट छाप छोड़ी है जिसे ग्रामीण सदा याद रखेंगे। इस दौरान शिवप्रताप सिंह तोमर, सुनील दीक्षित, प्रद्युम्न सिंह तोमर, नितिन होशियार सिंह तोमर, सचिन सिंह तोमर, शैलेंद्र भदोरिया, हरिओम सिंह तोमर, अनिल सिंह तोमर, रामू तिवारी सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

अम्बाह में युवा ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की बैठक सम्पन्न

सामाजिक आयोजनों की रूपरेखा तय हुई

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। श्री परशुराम मन्दिर अम्बाह पर सोमवार को युवा ब्राह्मण अंतरराष्ट्रीय संगठन की बैठक आयोजित की गई। ज्ञात रहे कि इससे पहले संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश शर्मा सहित प्रदेश अध्यक्ष सुनील तिवारी एवं संगठन मंत्री राजीव शर्मा (संतू राजौरिया) की उपस्थिति में भोपाल बैठक हुई थी, जिसमें सम्भागीय युवा अध्यक्ष (ग्वालियर-चम्बल संभाग) के लिए अम्बाह के ब्रजकान्त मिश्रा को मनोनीत किया गया था। जिसके बाद यह मीटिंग आयोजित हुई, जिसमें सामाजिक आयोजनों की रूपरेखा तय की गई। बैठक में संगठन से नारायण हरी शुक्ला, संतू राजौरिया, जोगेंद्र शर्मा, बंशी शर्मा, राजू सरपंच, हरी उपाध्याय (बाबा), गिर्राज शर्मा, वीरेंद्र शर्मा (बाबा), रवि शर्मा, भूपेंद्र शुक्ला, अमित व्यास, रोहित चौधरी, अरविंद समाधिया, सतेंद्र स्वामी, अम्बरीष शर्मा, अभिषेक शर्मा, गगन मिश्रा, भोला पण्डित, जीतू गुधैनियाँ, अजय जैन सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। बैठक में ब्रजकांत मिश्रा ने कहा कि वह संगठन द्वारा दिए गए दायित्व का निष्ठा पूर्वक निर्वहन करेंगे। इसके साथ ही वह समाज के युवाओं को सामाजिक कार्यों के साथ-साथ रोजगार से जुड़े कार्यों के लिए प्रेरित करेंगे।

ब्लास्ट पीड़ितों के मध्य पहुंचे पूर्व विधायक सत्यपाल सिंह

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। गत दिनों मुरैना राठौर कॉलोनी में हुए ब्लास्ट में मृत परिवारों से मिलने पूर्व विधायक एवं पूर्व लोकसभा प्रत्याशी सत्यपाल सिंह सिकरवार पहुंचे। श्री सिकरवार ने मृत परिवारों के बीच शोक-संवेदना व्यक्त की और जगह का मौका मुआयना किया। श्री सिकरवार ने कहा कि शासन-प्रशासन मृत परिवारों को कम-से-कम 25-25 लाख रुपए मुआवजा दे और एक अबोध बालक 14 महीने के बेटे की मां को छीन लिया। प्रशासन उस

बेटे की परवरिश एवं पढ़ाई की जिम्मेदारी ले और ब्लास्ट में जो मकान क्षतिग्रस्त हुए हैं उनको उचित मुआवजा देकर नये पक्के मकान मुहैया कराये। इस अवसर उन्होंने आला अधिकारियों से बात कर हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता उदयवीर सिंह सिकरवार, सुल्तान सिंह सिकरवार, परमानंद शर्मा, मोनू भदौरिया, सतेंद्र सिंह सिकरवार, भूपेंद्र सिकरवार, अनुज तोमर एवं अन्य साथीगण उपस्थित रहे।

नगरनिगम के राजस्व अमले की कार्यप्रणाली में सुधार किया जाए: विनीत कंषाना

- वार्डों में शिविर लगाकर चलाये जाएं कर वसूली अभियान

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। शहर के समस्याओं को सुलझाने की फुर्सत किसी को नहीं हैं। न तो नगरनिगम आयुक्त ठोस रणनीति तैयार कर रहे हैं और न ही कोई जनप्रतिनिधि इस ओर प्रयासरत् है। जल्द ही समस्याओं के निराकरण की पहल नहीं हुई तो हमे आंदोलन के लिए बाध्य होना पड़ेगा। यह बात प्रेस को जारी एक विज्ञप्ति में नगरनिगम के नेता प्रतिपक्ष विनीत कंषाना ने कही है। श्री कंषाना का कहना है कि जनप्रतिनिधि और अधिकारी बैठकर चर्चा करें तो शहर की सम्याओं को सुलझाने का स्थाई समाधान निकल सकता है।

नेता प्रतिपक्ष विनीत कंषाना ने कहा कि कर वसूली की दिशा में कोई कदम नहीं उठाए जा रहे। यदि सख्ती से नियमानुसार करों की वसूली की जाए तो नगरनिगम को आर्थिक लाभ होगा और ये पैसा जनसुविधा के काम आएगा। उनका कहना है कि लंबे अर्से

से वसूली अभियान नहीं चलाये जा रहे। शहर में कई कॉलोनियां बना ली गई हैं और भवनों के निर्माण भी हुए हैं। यदि हर वार्ड में शिविर लगाए जाएं। इन शिविरों के माध्यम से ऐसे भवनों के दस्तावेजों की जांच हो जो बिना परमीशन के निर्मित हुए हैं इन भवनों के आवश्यक दस्तावेज देखकर नगरनिगम अपना राजस्व वसूली और नियमानुसार निर्माण की परमीशन प्रदान करे जिससे नगरनिगम को आर्थिक लाभ होगा। इसके अलावा अन्य करों की वसूली के प्रयास भी नगरनिगम को करना चाहिए।

बेसमेंट परमीशनों का हो भौतिक परीक्षण

नेता प्रतिपक्ष विनीत कंषाना कहते हैं कि शहर में लोगों ने मल्टियों के निर्माण कर लिए हैं। साथ ही बेसमेंट बनाये गए हैं। बेसमेंट का उपयोग वाहन पार्किंग के लिए होना चहिए, लेकिन शहर में बने बेसमेंटों का व्यवसायिक उपयोग किया जा रहे है और नियमों को भी अनदेखा किया जा रहा है। किसी मल्टी या बेसमेंट में कोई आपात स्तिथि आती है तो उससे निपटने के लिए कोई इतजाम नहीं किये गए हैं।

वार्षिक रथ यात्रा एवं पंचकल्याणक आयोजन को लेकर जैन समाज की बैठक आज

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। श्री दिगंबर जैन समाज अम्बाह की एक आवश्यक बैठक आज परेड चौराहा स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में रात्रिकाल में आयोजित की जाएगी। समाज के अध्यक्ष जिनेश जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि बैठक में वार्षिक रथयात्रा एवं फरवरी माह में अतिशय क्षेत्र सिहिनियाँ जी में आयोजित होने जा रहे पंचकल्याणक महोत्सव सहित राष्ट्र संत जैन समाज के गौरव आचार्य श्री बसुनन्दी जी महाराज के सुयोग्य शिष्य युगल मुनिराज श्री शिवानंद जी एवं श्री प्रश्मानंद जी महाराज को अम्बाह आमंत्रण जैसे महत्व पूर्ण विषयों पर विचार विमर्श किया जाएगा। जिनेश जैन ने बताया कि बैठक रात्रि 8 बजे परेड जैन मंदिर जी में आयोजित की जाएगी। श्री जैन ने समस्त सामाजिक लोगों से बैठक में उपस्थित रहने की अपील की है।

प्रांतीय शिक्षक संघ ने दिया ज्ञापन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। प्रांतीय शिक्षक संगठन के तत्वाधान में मध्य प्रदेश स्तर से ज्ञापन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मुरैना में प्रांतीय शिक्षक संघ जिला इकाई द्वारा गत दिवस कलेक्ट्रेट परिसर पर इकट्ठे होकर के समस्त अध्यापक एवं नवीन शिक्षक संवर्ग ने शुभम शर्मा संयुक्त कलेक्टर को ज्ञापन मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया। जिसमें मुख्य मांग नियुक्ति दिनांक से वरिष्विरिष्ठता बहाल ली होना है। ज्ञापन देने वालों में रामनरेश दंडोतिया, शिवराज शर्मा, मुन्नालाल यादव, मुन्नालाल शर्मा, लोकेंद्र शर्मा, महेश कुमार नंदा, राकेश खरे, प्रशांत पाराशर, सुरेंद्र गोस्वामी,

अवधेश दंडोतिया, आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

भारतीय जनता पार्टी मंडल अध्यक्ष चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। भाजपा के संगठन चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। अम्बाह विधानसभा में पांच मंडल आते हैं। जिसमें नगर मंडल अम्बाह, पोरसा एवं ग्रामीण मंडल अंबाह, पोरसा सहित नगरा मंडल शामिल है। भाजपा में बूथ स्तरीय चुनाव के बाद जिला और मंडल समितियों के चुनाव की तैयारियां शुरू हो गई है। 1 से 15 दिसंबर तक मंडल अध्यक्ष और 16 दिसंबर से 31 दिसंबर तक जिलाध्यक्ष का चुनाव होगा। इससे पहले भाजपा संगठन ने यह साफ कर दिया है कि ऐसे कार्यकर्ताओं को मंडल और जिलाध्यक्ष नहीं बनाएंगे जो सांसद, विधायक या मंत्री के करीबी हों। संगठन की लाइन पर चलने वाले जमीनी कार्यकर्ताओं को ही मौका दिया जाएग। इधर कुछ दिन पूर्व दिल्ली में हुई बैठक में भाजपा संगठन ने मंडल अध्यक्ष और जिलाध्यक्ष के लिए उम्र की सीमा भी तय कर दी थी। भाजपा मंडल अध्यक्ष के लिए 45 साल और जिलाध्यक्ष के लिए अधिकतम 60 साल की उम्र तय की है। शहर एवं ग्रामीण मंडल अध्यक्ष का चयन इस माह की 15 तारीख तक होना है।

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मैं अशोक कुमार गुप्ता पुत्र स्वर्गीय श्री चिरोंजी लाल गुप्ता निवासी पुरानी हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में किराए से रहता हूं और मजदूरी करके शांतिपूर्वक अपना जीवन यापन निर्वाह करता हूं।

यह है कि मेरा छोटा पुत्र सुमित गुप्ता उर्फ सोलू गुप्ता जो आवारा किस्म का हो गया है तथा उसके द्वारा गलत कार्य किए जाते हैं ऐसा मुझे प्रतीत होता है। मैं इस सूचना के माध्यम से सभी आम एवं खास लोगों को सूचित करना चाहता हूं कि मेरा छोटा पुत्र सुमित गुप्ता किसी से कोई भी प्रकार का लेनदेन करता है या किसी के साथ कोई भी किसी भी प्रकार की घटना करता है, किसी भी प्रकार का वाद-विवाद, पैसों का लेनदेन करता है तो उसकी किसी भी प्रकार की कोई भी जवाबदारी ना हमारी होगी, ना ही मेरे बड़े लड़के रजत गुप्ता की होगी। इस सूचना से सभी लोग सूचित हों।

सूचनाकर्ता

अशोक कुमार गुप्ता पुत्र श्री चिरोंजी लाल गुप्ता
निवासी- पुरानी हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, मुरैना (म.प्र.)
मोबाइल नं. 9329514577

पूर्व केन्द्रीय मंत्री एस.एस. अहलुवालिया से खडुंर साहब जी ने सौजन्य भेंट की

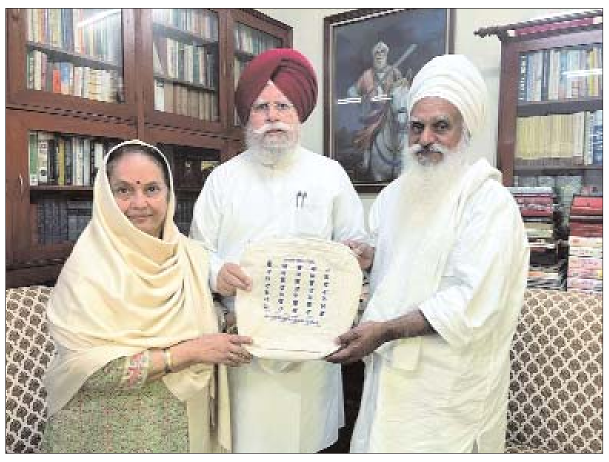

नईदिल्ली। पद्मश्री संत बाबा सेवा सिंह जी प्रमुख कारसेवा खडुंर साहब जी ने नई दिल्ली में पूर्व केंद्रीय मंत्री भाजपा के वरिष्ठ नेता सिख समाज के रतन माने जाने वाले एस.एस. अहलुवालिया से सौजन्य मुलाकात कर कई धार्मिक पहलुओं पर चर्चा की तथा केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार सभी लोगों को साथ लेकर चल रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत का मान व सम्मान विदेशों में बढ़ा है। भारत आर्थिक रूप से तेजी से अग्रसर होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज हम सभी को मिलकर अपने देश को आगे बढ़ाने की दिशा में काम करना होगा। खासकर हमारे युवाओं को इस दिशा में सार्थक पहल करनी होगी। इसके साथ ही हमें अपने समाज को आगे बढ़ाने की दिशा में भी सार्थक प्रयास करने होंगे।

मालनपुर। भाजपा नेता पूर्व सरपंच मालनपुर सुरेंद्र शर्मा के पिताजी रामस्वरूप शर्मा पटेल के देवलोकगमन पर पूर्व सांसद व पूर्व महापौर अशोक अर्गल ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए तथा शोक संतृप्त परिवार को धीरज बंधाया।

15 से प्रारंभ होगा शास्त्रीय संगीत का शीर्षस्थ महोत्सव तानसेन संगीत समारोह

- देश विदेश के सुविख्यात कलाकार सुर सम्राट तानसेन को स्वरांजलि देने आयेंगे

ग्वालियर। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में देश और दुनियाँ के सर्वाधिक प्रतिष्ठित महोत्सव तानसेन समारोह के इस बार अलग ही रंग होंगे। गान महर्षि तानसेन की स्मृति में आयोजित होने वाले शास्त्रीय संगीत के सालाना महोत्सव का इस साल शताब्दी वर्ष है। इस बात को ध्यान में रखकर समारोह में नए आयाम जोड़े गए हैं। यूनेस्को द्वारा सिटी ऑफ म्यूजिक के रूप में चुनी गई संगीत एवं कला की नगरी ग्वालियर में तानसेन समारोह की तैयारियाँ जोरों पर हैं। मुख्य तानसेन समारोह इस साल 15 से 19 दिसम्बर तक आयोजित होगा।

इस बार मुख्य तानसेन समारोह से एक दिन पहले 14 दिसम्बर को हजीरा स्थित इंटक मैदान में पूर्व रंग गमक की सभा सजेगी। इस कार्यक्रम में हर साल की तरह उप शास्त्रीय अथवा सुगम संगीत के क्षेत्र में देश व दुनिया में लोकप्रिय कलाकार की प्रस्तुति होगी। पूर्व रंग गमक की श्रृंखला में 5 दिसम्बर को रीवा, 6 दिसम्बर को गुना, 7 दिसम्बर को शिवपुरी एवं ओरछा में विशेष संगीत सभायें सजेंगीं।

18 दिसम्बर को होगा अलंकरण समारोह

अलंकरण समारोह का आयोजन 18 दिसम्बर को सायंकाल 6 बजे तानसेन समाधि परिसर में मुख्य समारोह के भव्य मंच पर आयोजित होगा। देश के ख्यातिनाम तबला वादक पं. स्वपन चौधरी कोलकाता को वर्ष 2023 के तानसेन सम्मान से विभूषित किया जायेगा। इसी तरह वर्ष 2023 के राजा मानसिंह तोमर सम्मान से सानंद न्यास इंदौर को अलंकृत किया जायेगा।

सायंकालीन सभा 15 दिसम्बर – तानसेन समाधि स्थल

सभा का शुभारंभ पारंपरिक रूप से सायंकाल 7 बजे शासकीय माधव संगीत महाविद्यालय ग्वालियर के ध्रुपद गायन से होगा। इस सभा में सुश्री भारती प्रताप बैंगलुरू का सारंगी-तबला वादन होगा। इस सभा में विश्व संगीत के तहतयूजीनाकागावा एवं सुश्री शिगेरू मोरियामा जापान की प्रस्तुति होगी। इसी क्रम में पं. राहुल शर्मा मुम्बई का संतूर वादन एवं इसके बाद दिल्ली से पधार रहीं और ग्वालियर की मूलनिवासी शास्त्रीय संगीत की ख्यातिनाम गायिका सुश्री मीता पण्डित का गायन होगा।

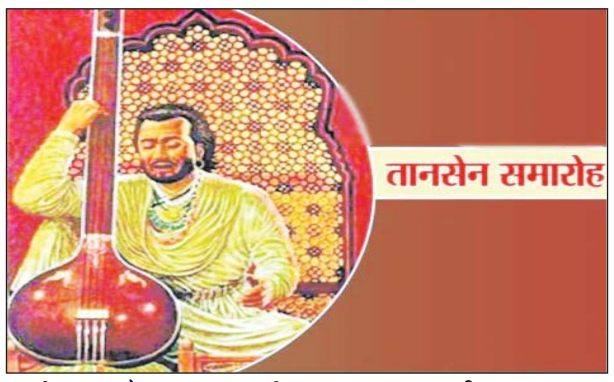

प्रातःकालीन सभा 16 दिसम्बर – तानसेन समाधि स्थल

इस सभा का शुभारंभ प्रातः 10 बजे राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर के ध्रुपद गायन से होगा। इसके बाद दिल्ली के भास्कर नाथ एवं साथियों द्वारा शहनाई वादन किया जायेगा। इसी क्रम में प्रयागराज के पं. प्रेमकुमार मलिक का ध्रुपद गायन एवं सभा के अंत में विश्व संगीत के तहत इजराइल के तावोर वैन दोर एवं तामार क्लोपर का सितार गायन व तबला वादन होगा।

सायंकालीन सभा 16 दिसम्बर – तानसेन समाधि स्थल

इस सभा का आरंभ सायंकाल 6 बजे तानसेन संगीत महाविद्यालय ग्वालियर के ध्रुपद गायन से होगा। इस सभा में पं. संतोष नाहर नईदिल्ली का वायोलिन वादन व वाराणसी के पं. रित्विक सान्याल के ध्रुपद गायन की प्रस्तुति होगी।

प्रातःकालीन सभा 17 दिसम्बर – तानसेन समाधि स्थल

सभा का आरंभ प्रातः 10 बजे भारतीय संगीत महाविद्यालय ग्वालियर के ध्रुपद गायन से होगा। इसके बाद भोपाल के महेश मलिक एवं अमित मलिक की वायोलिन जुगलबंदी, स्थानीय कलाकार का गायन वादन, वाराणसी के पं. कमला शंकर का गिटार वादन एवं जयपुर के अश्विल दलवी का सुर बहार वादन होगा।

सायंकालीन सभा 17 दिसम्बर – तानसेन समाधि स्थल

इस सभा की शुरूआत शाम 6 बजे शंकर गांधर्व संगीत महाविद्यालय ग्वालियर के ध्रुपद गायन से होगी। इसके बाद विश्व संगीत के तहत फ्रांस के एटिने कैबरे व क्रिस्टोफ रोचर, निकोलस पॉइंटर्ड द्वारा रैप व संगीत बैंड की प्रस्तुत दी जायेगी। इसी क्रम में बैंगलुरू के सुविख्यात गायक नागराज राव हवलदार का गायन, राजनांदगाँव से आ रहे विवेक नवरे का सरोद वादन और सभा के अंत में देश की ख्यातिनाम गायिका सुश्री शुभा मुदगल का गायन होगा।

प्रातःकालीन सभा 18 दिसम्बर – तानसेन समाधि स्थल

इस सभा की शुरूआत प्रातःकाल 10 बजे साधना संगीत महाविद्यालय ग्वालियर के ध्रुपद गायन से होगी। इस सभा में विश्व संगीत के तहत रेमो स्केनो इटली का सितार वादन, मुम्बई की सुश्री आरती अंकलीकर का गायन एवं उस्ताद दानिश असलम खाँ दिल्ली की रबाब प्रस्तुति होगी।

प्रातःकालीन सभा 18 दिसम्बर – बटेश्वर मंदिर परिसर, जिला मुरैना

सभा की शुरूआत प्रातः 10 बजे होगी। मुरैना जिले के बटेश्वर मंदिर परिसर में सजने जा रही इस संगीत सभा में मुरैना के मोहित खाँ का गायन, सुश्री महालक्ष्मी शिनॉय उदयपुर का गायन, उस्ताद अमीर खाँ भोपाल का सरोद वादन एवं सभा के अंत में सुश्री सुनंदा शर्मा दिल्ली का गायन होगा।

सायंकालीन सभा 18 दिसम्बर – तानसेन समाधि स्थल

इस सभा की शुरूआत सायंकाल 6 बजे ध्रुपद केन्द्र गवालियर के ध्रुपद गायन से होगी। इस सभा में तानसेन सम्मान से विभूषित कलाकार पं. स्वपन चौधरी कोलकाता का तबला वादन एवं भोपाल के उमाकांत गुंदेचा व अनंत गुंदेचा का ध्रुपद गायन होगा।

प्रातःकालीन सभा 19 दिसम्बर – बेहट

इस सभा की शुरूआत प्रातः 10 बजे ध्रुपद केन्द्र बेहट के ध्रुपद गायन से होगी। इसके बाद स्थानीय कलाकार का गायन-वादन होगा। इसी क्रम में सुश्री अदिति शर्मा दिल्ली का ध्रुपद गायन एवं इसके पश्चात स्थानीय कलाकार के गायन-वादन के साथ सभा का समापन होगा।

सायंकालीन एवं अंतिम सभा 19 दिसम्बर – गूजरी महल

सभा की शुरूआत पारंपरिक रूप से सायंकाल 6 बजे शारदा नाद मंदिर ग्वालियर के ध्रुपद गायन से होगी। इसके बाद सुश्री सुकन्या रामगोपाल एवं साथी बैंगलुरू का घटम् वृंद वादन होगा। सभा का समापन सुश्री चोइली एवं मौईशली दत्ता कोलकाता की सरोद जुगलबंदी के साथ होगा।

बांग्लादेश हिंसा के खिलाफ रैली आज

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर लगातार हो रहे अत्याचार तथा मन्दिरों की तोड़फोड़ के विरोध में मुरैना के सकल हिन्दू समाज द्वारा विशाल विरोध प्रदर्शन का आयोजन आज 03 दिसंबर मंगलवार को रखा गया है। यह आयोजन मुरैना शहर के रामजानकी मंदिर पर दोपहर 1 बजे से होगा। यहां से शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए एक रैली निकाली जाएगी जो हनुमान चैराहा पर पहुंचेगी। वहां पर सभा आयोजित की जाएगी। इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक लोगों से उपस्थित होने की अपील की गई है।

स्व. मनोरमा लड्ढा की स्मृति में होगा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। नगर की सुप्रसिद्ध समाज सेविका श्रीमती मनोरमा लड्ढा की स्मृति में विशाल नि:शुल्क नेत्र एवं चिकित्सा शिविर के साथ साथ कैंसर हॉस्पिटल एवं शोध संस्थान के सहयोग से मैमोग्राफी वैन जिसमे कैंसर रोग की जांच हेतु विशेषज्ञ उपलब्ध रहेंगे। संस्था का अध्यक्ष सीए जीडी लड्ढा ने बताया कि उक्त कैम्प 04 दिसंबर से 06 दिसंबर तक प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक आयोजित किया गया है। संस्था के सचिव अतुल लड्ढा ने बताया कि इस अवसर प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेष डॉ. थॉमस एवं डॉ. मोनिका यादव अपनी टीम के साथ तीनों दिन उपलब्ध रहेंगी। आर्मी मेडिकल कोर से सेवानिवृत्त वरिष्ठ फिजियो थैरेपीसीट डॉ. उदयराज धाकड़ एवं सामान्य रोग विशेषज्ञ डॉ. नीतू गोयल भी उपलब्ध रहेंगी। इस अवसर पर चयनित मोतियाबिंद के मरीजों का नि:शुल्क ऑपरेशन समर्पण आई चेरिटेबल हॉस्पिटल 262, जीवाजी नगर HDFC bank के पास, थाटीपुर पर किए जाएंगे। कैंसर अस्पताल की मेमोग्रिफी वैन जो शहर की एक मात्र आधुनिक मशीन से युक्त चलित वाहन हे के द्वारा नि:शुल्क मेमोग्रिफ जांच की जाएगी। संस्था के अध्यक्ष ने शहर के सभी लोगों से अपील की उक्त अवसर का अधिक से अधिक लोग लाभ प्राप्त करें।

स्वस्थ जीवन शैली हेतु बनाने होंगे अपने सिद्धांत: डी.सी. सागर

76वें बैच के आईपीएस अधिकारियों को सिखाए जीवन मूल्य

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भोपाल। आप अपने पुलिस सेवा के सफर की शुरुआत कर रहे हैं, मैं आपको एक स्वस्थ जीवनशैली के महत्व को समझाते हुए एक पुलिस अधिकारी के रूप में आपको शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार रहने की आवश्यकता होगी। आपको स्वस्थ जीवन शैली के लिए अपने सिद्धांत भी बनाने होंगे। उक्ताशय के विचार म.प्र. के अति.पुलिस महानिदेशक डी.सी. सागर ने 76वें बैच के आईपीएस अधिकारियों को जीवन के महत्त्वपूर्ण टिप्स देते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि कुछ मूल्य हैं जो मैंने अपने जीवन में अपनाए, आपके लिए भी उपयोगी सिद्ध होंगे। श्री सागर ने अपने जीवन मूल्य के सिद्धांतों को साझा करते हुए कहा कि मैं प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन युक्त खाद्यान और पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन करने, तेल और घी का अल्प मात्रा में ही सेवन, शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार रहने के लिए नियमित व्यायाम करता हूँ। मेरे शरीर में 5 से 6 लीटर खून है इसलिए मैं क्रोध और लोभ नहीं करता, क्योंकि इससे खून जलता है। अंतः कभी कुड़ना नहीं चाहिए। प्रतिदिन पर्याप्त नींद और आराम, फलों और सब्जियों का नियमित सेवन करना चाहिए।

मानव का शरीर पंच तत्वों से बना है जैसे जल, वायु, आग, पृथ्वी और आकाश। जैसा कि महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है:-

''क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित यह अधम सरीरा।''

इन शब्दों को ध्यान में रखते हुए, आप और मुझे अपने जीवन में पंच तत्वों का सम्मान करने का प्रयास करना चाहिए। मैं अपने अधीनस्थों के साथ भी इसी तरह का व्यवहार करता हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि क्रोध से खून जलता है और यह हमारे शरीर के लिए हानिकारक हो सकता है। उन्होंने उम्मीद करते हुए कहा कि कि आप भी अपने जीवन में इन मूल्यों को अपनाएंगे और एक स्वस्थ और सफल जीवन की ओर बढ़ेंगे।

नेकी की दीवार टीम ने सिविल सर्जन को भेंट किए 51 कम्बल

मुरैना। टीम नेकी दीवार द्वारा 51 कंबल सिविल सर्जन डॉ. गजेंद्र तोमर के अनुरोध पर सिविल हॉस्पिटल को दान दिए गए। ये कंबल आईटी प्रोफेशनल अंकित जैन एवं मिनी जैन द्वारा टीम नेकी की दीवार को भेंट किए गए थे। सर्दियां प्रारंभ हो चुकी हैं, जिस किसी भी व्यक्ति को कंबलों की आवश्यकता हो वह टीम नेकी की दीवार की हेल्पलाइन नंबर 9425126977 एवं 9425126211 पर संपर्क कर कंबल प्राप्त कर सकते हैं।

विश्व मृदा दिवस पर कृषि विश्वविद्यालय में होगा आयोजन

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय में 5 दिसंबर को विश्व मृदा दिवस मनाया जाएगा। जिसकी तैयारियों को लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति डा अरविंद कुमार शुक्ला ने आयोजन समिति की बैठक ली और कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर दिशा निर्देश जारी किए । मृदा दिवस के अवसर पर सुबह के समय एनसीसी कैडेट जागरूकता रैली निकालेंगे और मिट्टी के प्रबंधन व प्रदूषण से कैसे बचाया जाए इसके बारे में संदेश देंगे। इसके अलावा व्याख्यान माला का आयोजन भी किया जायेगा, जिसमें मिट्टी के रखरखाव और देखभाल के बारे में बताया जाएगा।

आपको बता दें कि हर साल 5 दिसंबर को खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा विश्व मृदा दिवस बढती जनसंख्या की वजह से मिट्टी के कटाव को कम करने की दिशा में काम करने, लोगों को उपजाऊ मिट्टी के बारे में जागरूक करने तथा संसाधन के रूप में मिट्टी के स्थायी प्रबंधन की व्यवस्था को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। जिस तरह पानी के बिना जीवन की कल्पना मुमकिन नहीं ठीक उसी तरह मिट्टी का भी महत्व है। भारत का तो आधी आबादी ही कृषि पर निर्भर है। लेकिन खेतों में किसानों द्वारा बहुत ज्यादा केमिकल वाले खाद और कीटनाशक दवाइयों का इस्तेमाल से मिट्टी की गुणवत्ता में कमी आ रही है। जो खाद्य सुरक्षा, पेड-पौधों के विकास, कीड़ों और जीवों के जीवन और आवास व मानव जाति के लिए बड़ा खतरा साबित हो सकता है ऐसे में मिट्टी का संरक्षण बहुत जरूरी हो गया है।

बजरंग भक्त मंडल का वार्षिक महोत्सव संपन्न

ग्वालियर। बजरंग भक्त मंडल द्वारा रविवार को अपना वार्षिक महोत्सव मनाया गया। महोत्सव में भजन संध्या, छप्पन भोग, फूलबंगला का आयोजन अग्रवाल धर्मशाला ढोली बुआ का पुल बजरिया पर किया गया। भजन संध्या में भजन गायक रितिक मांझी द्वारा राम आयेंगे तो अंगना सजाऊंगी एवं चित्रांश शर्मा द्वारा राम नाम के हीरे मोती जैसे सुंदर सुंदर एवं भावपूर्ण भजनों की प्रस्तुति दी गई। भजन संध्या उपरांत मंडल के सहयोगी सदस्यों एवं गौसेवकों का सम्मान एवं भोजन प्रसादी का वितरण किया गया।

मंडल अध्यक्ष आशीष मंगल ने बताया कि मंडल द्वारा प्रति सप्ताह गौसेवा, प्रति माह भोजन वितरण सेवा के साथ ही गौसेवकों के सम्मान एवं भगवत प्राप्ति के उद्देश्य से प्रतिवर्ष वार्षिक महोत्सव का आयोजन बजरंग भक्त मंडल द्वारा किया जाता है। कार्यक्रम में सचिव राकेश मंगल, संयुक्त सचिव नमन अवस्थी, संयुक्त उपाध्यक्ष विशाल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष रामकिशोर मंगल, कार्यकारिणी सदस्य पुनेश पाल, हरीश राठौर, संजीव गुप्ता, संतोष शिवहरे, कौशल अग्रवाल, अमित बिंदल, गरिमा गोयल, पूनम अग्रवाल, सरोज मित्तल, दीपक भाटिया, सतीश शर्मा, शांतनु सिंह, दीपक सोनी, संजय शिंदे, दीपक शर्मा, गोपाल मिश्रा उपस्थित थे।

120वां अग्रवाल युवक युवती परिचय सम्मेलन भितरवार में होगा

- 210 विवाह योग्य बच्चों के पंजीयन हुए

ग्वालियर। अग्रवाल परिचय सम्मेलन द्वारा अभी तक देश के 119 शहरों में युवक युवती परिचय सम्मेलन आयोजित करने के बाद अब 120वां आयोजन 21 दिसम्बर को डबरा क्षेत्र के भितरवार नगर में आयोजित किया गया है। साथ ही इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ अग्रबंधुओं का सम्मान भी होगा।

परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश ऐरन ने जानकारी देते हुये बताया कि युवक युवतियों के पंजीयन निशुल्क किये जा रहे हैं। 210 विवाह योग्य बच्चों के पंजीयन अभी तक किये जा चुके हैं। जिनमें दिपेश अग्रवाल जबलपुर, हिमांशु गर्ग आगरा, अंकित गोयल जयपुर, शुभम मित्तल शिवपुरी, कपिल अग्रवाल जौरा, शिवानी बंसल श्योपुर, शिवांशी मंगल कैलारस का भी पंजीयन हुआ हैं। परिचय सम्मेलन में चम्बल संभाग के पदाधिकारियों के द्वारा सम्पर्क किया जा रहा है। भितरवार से निर्मल अग्रवाल, विनोद अग्रवाल, मुकेश अग्रवाल डबरा, अजय अग्रवाल दतिया, सेवाराम गुप्ता कैलारस, प्रकाश बजाज, दिनेश बंसल, मोनू गोयल सबलगढ, पूरनचंद गोयल जौरा ने सभी अग्रबंधुओं से कार्यक्रम में शामिल होने कि अपील की है।

पीसी-पीएनडीटी एक्ट पर हुई जागरूकता कार्यशाला

ग्वालियर। जेंडर आधारित हिंसा उन्मूलन के उद्देश्य से ग्वालियर जिले में भी ''हम होंगे कामयाब÷ जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। जिसके तहत शहर के वार्ड-2 में स्थित संजीवनी क्लीनिक घोसीपुरा में पीसी-पीएनडीटी एक्ट (गर्भधारण एवं प्रसव पूर्व निदान तकनीकी अधिनियम, लिंग चयन प्रतिषेध) के तहत जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यशाला में सुरक्षित नारी सशक्त समाज व अब कोई बहाना नहीं पर आधारित गतिविधियों एवं पीसी-पीएनडीटी एक्ट के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। परियोजना अधिकारी डॉ. मनोज कुमार गुप्ता ने कहा कि गर्भावस्था के दौरान शिशु के लिंग का पता करते हुए पकड़े जाने पर पीसी-पीएनडीटी एक्ट के तहत 3 से 5 वर्ष तक की सजा व 50 हजार से एक लाख रूपये तक के जुर्माना की सजा का प्रावधान किया गया है। कार्यक्रम में संजीवनी क्लीनिक की मेडिकल ऑफिसर डॉ. गरिमा इंदोलिया द्वारा पीसी-पीएनडीटी एक्ट की विधिक विषय-वस्तु से सभी को अवगत कराया गया। कार्यशाला में परियोजना अधिकारी मनोज कुमार गुप्ता, पर्यवेक्षक श्रीमती साधना शर्मा, पर्यवेक्षक श्रीमती दिव्या चतुर्वेदी, स्थानीय महिलाओं व किशोरी बालिकाओं ने भाग लिया।

कंपनी द्वारा ऑनलाइन अपील पोर्टल विकसित

भोपाल। मध्यक्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कंपनी के कार्मिकों के विरुद्ध होने वाली कार्रवाई को लेकर एक ÷अपील पोर्टल÷ तैयार किया गया है। उस पर ऑनलाइन अपील अभ्यावेदन स्वीकार किए जाएंगे। साथ ही प्रकरणों के निराकरण की जानकारी भी पोर्टल पर उपलब्ध कराई जाएगी। मध्यप्रदेश सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण तथा अपील) नियम 1966 के अंतर्गत अधिकारियों तथा कर्मचारियों के विरुद्ध पारित दंडादेश के विरुद्ध कंपनी द्वारा संबंधित अपीलार्थी से ऑनलाइन अपील अभ्यावेदन प्राप्त करने का निर्णय लिया गया

स्वामित्वधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे के लिए मै. गुरुकृपा प्रकाशन प्रेस ,टी.आई.टी कॉम्पलेक्स मुरैना से मुद्रित एवं हिन्दुस्तान एक्सप्रेस परिसर नवीन नगर निगम मुख्यालय के सामने सिटी सेंटर ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। R.N.I. No. MP HIN/2007/ 18763
सम्पादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे, स्थानीय संपादक संजय त्रिपाठी सभी विवादों का न्याय क्षेत्र ग्वालियर न्यायालय होगा। फोन: 0751-2234001 मो. 94251-26060, 9425360435